रा॰ रा॰
स॰

नी रामकली माल । सवैया । पाइ पँवरी म
न्हार कैं पलका परणाय दियो भय भीने । सो
यराई कहि केशव कैसेहूं कौरही कोरक सौंह
न कीने । माहसकै मुषसौं मुषकै छिनमे
हरि भांति सबै सुषलीने । एक उसासही
के उससे सिगरेई सुगंध विदा करि दीने ।

रागिनी रामकली ताल सवैया मोहिबो मो
नकी गतिको गतिझो पढ्यो बैन कहायौं पढै
गी। ओप उरो जनकी उपजै दिन कहि मटै ओगि
या न मटैगी। नैननकी गति गरुड़ बला बल के
शब्दास अकास बढैगी। माई कहौ यह माय
गी दीपति जैसो दिनहै इहि भाति बढैगी। रागि

रा.रा.
मं

रागिनी रामकली नाल   सवैया वोलीन हैं वे

ठुलाय रहे हरी पायपरे अहुडो लिये ऊंडी। के

सव भेटि वेको भरि अंक छुडाइ रहे जकैसे नहि

छोडी। सूपे चितै वेकौं केतो कियो सिर वांधि उ

ठाय अंक रहे हनि ठोडी। मै भरि चित नऊन चितैौन र

ही गहि नैननि लाजनि गोडी। रागिनी रामकली ना

रागिनी रामकली ताल   सवैया धनुभ्रूपरि
लोचन लोलसो मेलि स्व कोंड कटाछकी कोरक
ढी । स्वर माधुरि वानी वसी वनराईयो केश मोर
न नासख पढी । ऊच नेहु नैनै नन लाज विराजति
वार गारे चढ़े ऊँरमढी । नवढी दुति गालहि
बालकता हति ग्रैन अनंग की फौज चढी ॥

रा·रा·
स·

सवैया । आजमै देषीहै गोपसुता इकहोयगन ऐ
सी अहीरकीजाई । देषनही रहियै इनिदेहकी
देषैते औरन देषी सुहाई । एकही वेक विलोक
नि ऊपर वारौं विलोकि विलोकनि काई केसव
दास कलानिय वक हूजिय काम किमेरो क
न्हाई । रागिनी रामकली ताल सवैया·

सवैया । बोलै न बाल बुलावनहूं नषरेष लिषै
भुव प्रेम परेषै । आपन हाथ विलोकि विलो
कि कही नव केसव ऊहि वसेषै । छोटी बडी
विधि रेष लिषी जग आपुकी रेष ह्व कौन जले
षै । प्रेमते बोल सख्यो न परयो अकुलाय कयो
पिय कैसीहूं देषो । रागिनी रामकली ताल ।

रा॰रा॰
स॰

हैं गनि मंद मनोहर केसव आनंद कंद हिये उलहै
हैं। भौंह विलासनि कोमल हासनि अंग सुवास
नि गाढे गहैं हैं। वैक विलोकनि को अविलो।
कि सुमाकंडे नंदकुमार रहैं हैं। पईतो कामके
वान कसावन फूलन के विधि भूलि कहैं हैं।।रा
गिनी रामकली ताल सवैया तोहिन गायव

कान्ह भले जू भली समुझाइहौं मोहि समुझै कौ
जौ उमह्योहै । केशव आपनो मानि कह्यो मन
हाथ पराय दै कौनै लह्यो है । नैनन हो मिलवै
करियै अब नैनन कौ मिलिवो नौ रह्यो है । जाउ
कह्यो तुम जैसो सबी सब ऐसे है गुपाल मै ऐसो क
ह्यो है । रागिनी रामकली ताल सवैया·

रा॰ रा॰
मं॰

कि आगे कै केश आपुहि आसन दीनौ । आपुहि पा
इ पषारि भलै जल पान कौ भाजन लाइन दी
नौ । बीरा बनाइकै आगे धरे जब वै हरि कौ कर
बीजन लीनौ । बाहे गह्यो हरि ऐसो कह्यो रसि
मैनो इनो अपराध न कीनौ । रागिनी रामकली
ताल   सवैया   बिनवौ बिन वोपे इसा पै

जावत नावत बार अनेक सिंगार बनायो । जी हू
मै आनकौ आनिबौ छुआँपै नेरौ नऊन भयो म
न भायो । भाँवै सनेहु करिबौ करि भामिनि भाग
बडे बसमैं करि पायो । कान्हमैं यों सुथे जवाहरनि
नाही सवाहरनिहै अब पाइ लगायो । रागिनी रा
मकली ताल सवैया आवन देषि लियै ३

रा॰रा॰
क॰

जू देष्यौ सवै छिन मान सह्यौ जू सुनी सव ही हैं य
ह्यौ कछु और वढै है सव ही अव सौंह करौ वकरी
जत ही हैं । समझाइ कह्यौ समझी सव के सव
झूठी सवै हम सौं ज कही हैं । मान कियौ अपमा
न करै तौ हमै अव के हसिके को रही है । रागि
नी रामकली ना॰ सवैया वेटी सषीन को

6

हसैा हो तुला पैनै बोलौ रहौ निज मौनै । सौरह
अनेकनि आवहु अंक करौ रतिको प्रति रैनकी
रौनै । घबाएनै चाडु बसाइ गिरीजन आईहो के
शव आजही गौनै । मोहन के मनको मोहनी
सकरौ यह थो सिष ईसिष कौनै । रागिनी रा
मकली नाल । सवैया । हिनकै इन देषहु

रा॰रा॰
मं॰

उपरी । एकविनै मम काय इनै उन वान कहै
बड़ भायपरी । चारु चकोर विलोचन भांसिच
झे दिसनै येउरी पगरी । सषि आज गई हों नीगो
कल हौं सवही मिलि दैज को चोटकरी । रागि
नी रामकली ता॰ सवैया हौं रूप पाइ सिषाइ
रही सिष सोष न एक सिष नेह्नू सिषाई । मैवहू नै रूष

सोभै सभा सबही के मनै नन माझ बैसै । वूझैं तैवा
न वषाय कहै मनही मन केशवदास हसै । षेल
तिहै इन षेल उतै पियविन षिलावनि यौं विलसै
कोई जानै नही हगदोरि कवै कितहै हरि आंषिन
ह्वै निकसै । रागिनी रामकली ताल सवैया
केशव रायकी सौंह कैकै कछू पकन आउमें हो

रा॰सा॰
सं॰

बोल हमेसैं है । देषहु धौं इक बार सकोचन आर
स लोचन आरसी सो हैं । आपहु वैसेही साज सी
आज सम्हलि गई पिय काल्हि की सो हैं । रागि
नी रामकली ताल सवैया वैरिजनी रजनी
दिन मै बनि श्री वृषभान कुमारि सुभागी । षेलति
ही सषि वै शुर वारि भई नहि वेल षरी अनुरागी

8

पाइली देषीयै केशव केहूं कुटैवन जाई। देउदिये
विन मायनिहूं संग छूटत क्यौं षलकी षलताई।
देषहु दैमयुकीपट कोटि मिटै नछुटै विषकी विष
ताई। रागिनी रामकली ताल सवैया केशा
व औरनसौं रसरासि रच्यो रस बाउ सबै हमसौं है।
हौं मन मैलेन जो लोकहू अब छाडहु गोलिबो

रा॰रा॰
म॰

है मग आय गयें कियौं आवैहिंगे मजनी अब

दाई। आयन नेद कुमार सबार हु कौन बिचार

अबेर लगाई। रागिनी रामकली ताल सवैया

केशव जीवन जो ब्रजको निज जीवहुं ते अति वा

पहि भावै। जापर देव अदेव कुमारनि वारन माई

नवार लगावै। नाहु रिपैं नहु गवारिकी बेटी मरा

पीछेते केसव बोलि उठे सखिनि कै चित चातुरि आन
रि जागी। जानि न काहू कवै हरि के सुर मारस
री सरसी रस लागी। रागिनी रामकली नां
सवैया। सखी भूलि गई भूलप कियौं काहू कि
भूलेई डोलन बाटन पाई। भीत भये कियौ केश
व काहूसौं भेट भई कोऊ भामनि भाई। आवन

रा॰रा॰
मं॰

कुंज विराजनि गोप वधू कमला जनु केकज छटी

मरुमोहैं । रागिनी रामकली ताल   सवैया पं

य पै रहे ते प्रीतम सौं कहि केशव के हूं न मैं हगरी

नी । मेरी सखी सिख सोपीन एक है रोष ह्रू की सिख

सी षिजलीनी । वेदन वेद मनोज समीर जौरै ड वदेह

भई खघहीनी । मैउ लटी जु करी विधि मो कहु त्याग न

वर पाय फेवाय दिषावै । ह्वैंनो वची अव हासनि
है ऐसे और जदेषैनो ऊनर आवै । रागिनी रामक
ली नाल सवैया भाषति है लषैन सषीनसौं ला
षहिये अभि लाषनि योहै । कोमल हासनि नैनवि
लासनि अंग सुवासनि कोमन मोहै । मूरति वे
न किधौं तुलसी तुलसी वनमैं रति मूरति कोहै

रा॰रा॰
म॰

काह्नके प्रेम पगीहैं। रागिनी रामकली ना॰
सवैया केशव कैसेहू सुरख भाए मिलौ मनभा
वतो भाग भर्यौरी। जौनेको माई कहा भयो कैं
ह्लेजो श्रीधीको भाग ऊधो सटक्यौरी। ताकहू
ह्नन भजो हसि बोले जऊ मेरो मोहन पाय प
र्यौरी। कान्हने हठ मेरो कठोर इते विर

ह्री उलटी बिधि कीनी । रागिनी रामकली ना
सवैया आज कछू अखियां ह्री औरसी मानो
महावर माहि रंगीहैं । मोहन मोहिसी लागत
मोहि इनेपर मोहन मोहि लगीहैं । मेरी सौं
मोहूसौं मानहु बेगि हिये रस रोसकी रीति ज
गीहैं ॥ मेरे बियोगके नेज नदी कियौं केशव

रा.रा.
म

हैं। रागिनी रामकली राग सवैया फूलके

फूल सुवास उवास सी भाक सी से भये मौन स

भागे। केशव वाग महा वन सो ज्वर सी चढी जो

न्ह सवै अंगदागे। नेह लग्यो उर नाहर सो निस

नाह घरी ककहू अनरागे। गारि सी गीत विरी

विस सी सिगरेई सिंगार अंगार सो लागे। रा-राम-

होनल हैन जसौरी । रागिनी रामकली ना-
सवैया ओपिदै आय उहां उनसौं यह भोजन
कै अवही हम ऐहैं । ताकहुतौ अवलौं वहराइके
राषी वहराइ मन करि मैहैं । वैठकहा इनकी फि
राके शाव जाइनही कोऊ जाय जेकैहैं । जानन
हौं उन आषिनितें अस ओउमगो वहुस्यो अति रै

रा·रा·
स·

मलीनाल — सवैया गोप वडे वडे बैठ अथाइनि केशव कार सभा अवगाही। खेलन बालक जाल गलीनमै बाल विलोकि विकाही। आवन जानि लगाई चहूं दिस हेरत मै पहिचानन काहीं। वे इसो आनन काढि कहौ वली सजतैहै कहू नो ही किनाही। रागिनी रामकली ना — सवैया

13

गाल सवैया लाडिली लीलिक लोरि ल
ली कहूं लाल लके कहूं अंगि लगायकै । आज
तो केशव कैसेहूं लैरूपं लागन दैनन देषहु
आयकै । वेगचलो उठि आई लिवावन दौरिअ
केली परीं अकुलायकै । भूलेहूं गोकुल गाउंमे
गोविंद कीजे गऊवन गाइ चरायकै । रागिनी रा

रा·रा· स·

नही बिनयो इक कान्ह कियो लखि लाल व कैनो·
हाहा कै हारि वहे भनि केशव पाय परेनो परेई
रहेनो। हौं तो यहै नवढी की बिचारति होतो ग
मान कौं याही नो पनो। लाभी लटै धन पान
रि देहु जैने कबढी बिथी श्रोंधैं न रेनो ॥ इति
रागिनी रामकली नाइका नाइक समाप्तम् ॥

होत कहा अब के समझे समझेन नैबे जब है स
मजाए । एक हि वेक विलोकनि माहि अनेक अ
मोल विवेक विकाए । जान परे न जनावहु जू
जनमावधि लौ उहि जानि है पाए । गात बनाय
बनाय कहा कहै लेहु मनाय मनाय ज्यों आए ।
रागिनी रामकली नाल सवैया । भूले हू स्ये

रा॰रा॰
क॰

सो दाम रूपकौसो माला प्रेमकौसो माला आज
लौन देखी छबि जैसी आज दीसीहै ॥ रागिनी
रामकली ताल कवित्त चंचलन ह्वैजे नाथ
अंचल न छ्वैजे हाथ सोवै नैऊ सारिकाऊ सुकनौ
सुवायोजू । मंदकरौं दीपदुति चंद मुख देखिय
न दौरिकै दुराइ आऊं द्वारतैं दिखायोजू । स्वराज

रागिनी रामकली ताल   कवित्त मुकता

मनिन कीहै मुक्त उरोसी नाक दांतन दासौंदा

मनी हसनी वनीसीहै । मोहनके मेननके श्रव

रोन कीसी रेष भ्रकुटी सुवेष भाव भेद कवि

कीसीहै । बिन बनराई उजकीसी उजकेसे

ब्रक ऊच मझकौनो नैन जैसे उजकीसीहै । के

रा॰रा॰
कं॰

नौ देषतिहीं उंहे कछूहनो नही अबहूंने देषि
यत उर उठनयोहै । रहसि षिलन गई नोने जे
ठ भारी भई कियोयाते बाज भयो महावर द
योहै । आंषनको मेरी फाटनसी आवनहै जा
नतहौं रीठ लागि केषो ऊंकिगयोहै । रागि
नी रामकली ताल कबित सषहै सषीन

मराल बाल बाहिरै बिडारि दैऊं भाषो नमैंहू केशव
हमोहू मन भायोजू । कलके निवास ऐसे व
वन विलास हनि मैरुनो हवनिहूं ने स्याम सु
ख पायोजू ॥ रागिनी रामकली ताल कवि
त । इत उत चाहि देष्यो जब कोऊ ढिग नाहि
बार बार जिय कहो हिये कहा भयो है । अब लौ

रा.रा.
कं

ए यामै कौन रसहै रागिनी रामकली नाल ।
कवित । चंदकैसो भाग भाल भ्रकुटी कमान
कीसी मैन कैसे पैनेसर नैनन विलासहै । ना
सिका सरोज गंध वाहसे सुगंध वाहू दारयोसे
दसन केसोती जरी सौ हासहै । भाईकीसी ग्रीव
भुजपान सो उदर और पंकजसे पाइ गति हंसकी

बीच दैकै भौंहैं घाय कै घवाय कब्हू स्वाउ वरकीनी
वन वसै है । कोमल म्रनालकासी मलकाकी मा
लकासी वालिका जउारी मौति मानस किपसहै ।
जानैको विभानु भयो केशव सहै नै कोवान देषो
शनि गात जात भयो कियौं अमहै । विरमी ज
राषी यह विउनी विविध गति कहो यौं रसिक न

रा·रा·
के·

रिबौ। बोलनि हसनि मृदु चाहनी चलनि चारु
पल पल प्रति पति जन प्रति पारिबौ। केशोदास
सविलास करहु कुमारि राधे इहि विधि सोरह सि
गारिबौ। रागिनी रामकली ताल कवित
केशोदास सविलास मंदहास जन अवलोकनि
अलापनिकौ आनंद अपारहै। बहिरति मान अरु

सीजानतहै। देषीहै ग्वाल एक गोपिकामें देवता

सी सोनेसे सरीर सब सोंधे कीसी बासहै। रागि

नी रामकली ताल कवित्त प्रथम सकल सु

चि मज्जन अमल बास जावक सुदेस केस पास

को सुधारिबौ। अंग राग भूषण विविध मुष

बास राग कज्जल कलित लोल लोचन निहा

रा॰रा॰
कं॰

बल बल बीर कौ सो मात कौ सो मद्ध मद्दो मो
हि मन भायो है । थल सो अचल सील अनल से
बल चित जल से अमल तेज तेज कौ सो गायो है
केसोदास वसन अकास के अकास षोष घर घर
घट घट छेक छवि नौ छायो है । रति कीसी रति ना
थ रूप रति नाथ कौ सो कहो केसो राइ रूठ

श्रेनरति मान छनिरति विपरी तिनिकौं विविधि

विधा कहै है। छूटि जाति लाज जहां भूषन सुदेस

केस टूटि जात हार सब बिरन सिंग्या कहै है। कूजि

कूजि उठै रति कूजि नेनि स्वन घरा सोई नैास्न

रति सषि औरु बिवहार कहै है। रागिनी रामक

ली ताल कवित्त। तान कोसे गान सब

रा·रा·
क

ति देवता बषानीहै । ऐसी वानैं कौंन जनमा
नी सुनि मेरी रानी उनके तो तेरी वानी वेदकी
सी वानीहै । रागिनी रामकली ना·४ कवित
कैधौ गृह काज कैधौ कुलीन सषा समाज कै
धौ कछू आज वनवासुर विमानतै । दोनौंतै न
सोच कियौ काहूसो भयौ विरोध उपज्यौ प्रबोध

कौन पहि पायो है ॥ रागिनी रामकली ता
कवित । चोली कोसो पान तोहि करत सेवा
रि बाई दर्पन जैसो तोही मांज म्हरनी समनी है ।
तेरे मनोरथ भरी रथ रथ पीछे पीछे डोलत
शपाल मेरो गंगा कोसो पानी है । तेही त्रिय
देवनाथे पायो पति केशोराइ पतिनी वऊतप

रा॰रा॰
के॰

की। केसोदास नांमै डरी दीपकी सिषासी हैरी
डरावनि नील वास्ह उनि श्रेग श्रेगाकी। पौनपा
नि पंछीपसू वासमै सवद स्वनि जिन तिन वौ
कि वौकि चाहै चोप मंगाकी। नंदलाल श्रावास
विलोकै कंज जाल गाल लीनी गनि नहि का
ल पिंजर पतंगाकी। रागिनी रामकली ना॰

किधौं उर अब दानतैं । भावे मैन देह किधौं मोह

सों कपट नेह किधौं देखि मेह अनिउठे अधियानतैं ।

किधौं मेरी प्रीतकी प्रतीत लेत केधोंताइ आज हे

न आय मन भयौं कौने बातनैं । रागिनी राम

कली ताल कवित चंदन बिट बछ कोमल

बिमल दल ललित बलित लता लपटी लवंग

रा॰रा॰
क॰

मारयो न मनायो मन ऐसो लोहि हरिपद्म पी
छे पहिचानत है । रागिनी रामकली ताल ।
कवित श्रावन ज्यों सुजन न कानननो सुनि
यत जैसे केशोराइ नम लोगन मैं गायें हों । वे
सको विसारे सुयी काकज्यों भ्रमत फिरै जूठे
सीठे सोन पात ईत ऊत टायें हौं । हरि हरि करन हो

कवित्त । बार बार बोल्यो जब बोल्यो न बिहसि
नव बालक ज्यौं बोलि बेको कत बिललात हैं ।
ज्यौं ज्यौं पचे पायन त्यौं पाइन ते पीन भयो होत
कहा किये अब माधन सौं गात हैं । केशोदास
सब छाई कीनो हठहू सौं हेत तोरू छाडि जिय
जिये बिन कहा जानत हैं । ऐसे प्यारे पियहूं कौ

रा॰रा॰
क॰

पुनि फूल माल तोरि डारी बीरा बगराइकै । लैलै
टीहू मास तजि विविध विलास हास केसो दास
है उदास चली अकुलाइकै । सेइकै संकेत हूनो
कान्ह जू सौं बोली ऊनो मोसो जोरे कर हूनो हूनो
दुष पाइकै । रागिनी रामकली नाल कवित्त
लीने हम मोल अनबोली आई जानो मोहू मोहि

दौरि दौरि गहो पांय जो मैंन कठोर ठौर जानि जि
य पायेहो । काको घर घालवे को बसे कहो बन
स्याम बेहू ज्यौं भ्रमत प्रान मेरे घर आयेहो । रागि
नी रामकली ताल कबित्त । देषति उदयि जा
ने देषि देषि निज गात चंपक के पान कहू लिष्यो
हे बनाइ के । सकल स्वांग पकरि हरि काको मारि

रा॰ रा॰
कं॰

कबित्त नैननकी अनुराई बैननकी चतुराई गा
नकी गुराई नउवति उति बालकी । अपने चरित्र
निके चित्रन चरित्र चित्र चित्रनी जैंगी सोहै साथ कुचि
काग्रालकी । चंदके समा चारु चायसो चकी कि
रति करकै निहारै मयगैनैनन की पालकी ॥
की जैंपै पान प्रान प्यारे आईहै जू आई अलबेलि

घन स्याम घन माला बोलि लाईहै । देष्यो हैहै उध
जहां देहू ऊन देषीपै देषी कैसे वाट केसोदास
नी दिषाईहै । ऊंचे नीचे बीच कीच कंठकनि पीरे
पग मारग गयंद मति अति सुषदाईहै । भारीय
हकारी निसि निपट अकेली नम नाही प्राण ना
थ साथ प्रेम जम हाईहै । रागिनी नाम कलोना

रा.प्र.
के.

मंदजैं । निसर वियोग भले लोचन चकोर फ
ले पाई वज्र चेद चंद्रावलि चलि चेदजैं । रागि
नी रामकली ताल   कवित्त उरझत उरग
चपत फनि करनन देषति विविध निसिचर दि
स चारके । गन निन लगत मसलधार षनति
न फिलीगन घोष निरघोष जलधारके । जा

खालि कलकी । रागिनी रामकली ताल ।

कवित । चंदन चढाइ चारु श्रेखर के उरहार स

मन सिंगार सोहैं आनंदके कंद जैसैं । बारे कोरि

रति नाथ बानामै बजाय गाय खराज मराल

साथ बानी जगावैं द जैसें । चौकि चौकि चकई सी

सौति निकी हती चली सौते भई दीन अरविंद इति

रा॰रा॰
क॰

क आनि नीकेहू को लागत हैं सीताजू को रूपपै
न कैसे उर आनिये । आषिन जो देषियत सोई
सांची केशोदास कानन की सुनी सांची कबहूं
न मानिये । गोपाल की जलटाप यौं ही उलटा
वनि है आज लौं तो वैसेई हैं काल्हि कौन जानिये
इति रागिनी रामकली कवित्त समाप्त शुभम्

नगिन भूषण गिरत पट फाटनन कंटक अटक
उर उरज उजारके । प्रेतनकी छहौं नारि कौनपै
नैं सीषी यह जोग कौसौ सार अभिसार अभि सा
र अभिसारके । रागिनी रामकलीनाल कवि
त । हरिसेहि नहीं भ्रम भलिहून कीजे मनहो
नो करि सिय हैंतैं होत हित हानी है । लोकमें अलो

वन विलना वनेरे । उधोजे पदमे वनन वीते कल्प
जगासे कुबजा उरला वनेरे । ज्यो स्याव ब्रललो
कमैं नाही मोकुवरी स्याव पावनेरे । मगारे ब्रज
को राज दीयो है हमे लाखि जोग पठा वनेरे ॥
रागिनी वेगाली ठुमरी ताल । ३ । हरि स्याव मो
रनीर लीयो नवनै भवन नही भावनेरे । गावै ग

रागिनी बंगाली डुमरी ताल ।३। मोवराजी
होहैस जाग्यो थारो जान । रतमानी परभातउी
आया झूठो करो क्रोवबागान । प्रकट प्रकार
करी छेक जरा पीकलोक प्रथवान । इनमें
झूठ नहीं तिल जीकाई रंगीला पीतमरी आन
रागिनी बंगाली डुमरी ताल ।३। कवनव

रा॰ ३ मन राम कमल राम कमल ध्यावै सोई । मन्त्रा जप
करै वे हरि प्रसन्न होवैगे । मन वच क्रम सौं
याद करोरे ज्ञान करो भव पार परोरे । प्यारे क
रुणा सागर तिन पालो सब संसारे ऐसे मधु
सूदन मुरारे । रागिनी बंगाली ठुमरी ता॰ ।३।
मोरी गली काय फेराजो हो मोरी राग॰ । हथैं यो

दरसैमैकहे ध्याकी सोवस कवङन आवनेरे ॥ रा
गिनी बंगाली ढुमरी ताल ।३। नेरीगत अपरंपा
र । अतअवंड जिन रच्यो है ब्रह्मंड अदजोति निरंज
न निराकार । जाकौ कोउ न पायो पार रे । निग
म गावै पार न पावै ब्रह्मा स्रावि उवे रे । ध्यान धरे जा
को पंचानन श्रीपत जश अन अभै भक्त दातार ॥

रा॰बे

ली ठुमरी ताल ।३। कारीरे बदरीया राम कैसी उ
मड आई। सावन की रित आई पीया मिले बन थाई
घरे बहे घरवे आमन भावन बिना सुना मेंद वा
हो राम कैसी ॥ रागिनी बेगाली ठुमरी ता
ल तिताला ॥ ३ ॥ उमगो उमगो आवे गोरी
या जीया राहमारहो ॥ कहा कहे कछु बसन

वढकर आप् मोरे वालम लोक जाने अमरावहो
रागिनी वेंगाली ठुमरी ताल ।३। नई लगन ह
म जानी रे । जो तुम रसीयां वोली वोलो तुम हे
ने नारस यांनी हो । रागिनी वेंगाली ठुमरी ता
ल ।४। मैं गावनें नहीं जई हे राम । जो गावने की वा
न वलै है नागरटोंना चलै हे राम । रागिनी वेंगा

ཀ་ཞེ

ही मेरो तन कारो मन पीय राह मारहो ॥ कु
मानन्द रुकत नहीं रोके मोही लीयो हे सही
य राह मारोहो ॥ इति रागिनी बंगाली हु
मरी नाल तिनारा समाप्तम् ॥ ॥

रा॰बे

टपा ताल ।३। सयाने बेलियाबे हूरनया बसदे
लोक बिगाने । मित्तर करदिवारिबे पैयां ना
पउदी बेमियां रबकरेन मिडबे आवो नैयना दे॰
रागिनी बेगाली टपा ताल ।३। केहा जाडूरा
कीना बेदिलनू कदर नाजाने दरकदर मियां ।
बेषननू षरूाक जि मेरा इस्क लगा मन लीना

रागिनी बेगाली टपा ताल ।३। तोडे बेखन दि
तोगा मेत्र । बदनबेषो बारिबे राजनन्तृ हसौ बेसो
णार बसनले साडी बोरा ॥ रागिनी बेगाली ट
पा ताल ।३। आया निस भाल बोराकन यार॰
किइयां नेनृ यार । हीरति मानि नाकि इक्कदा
पीहु दिल छिजई ओमार । रागिनी बेगाली

रा॰३ चोन शोरि मियो मोई गनि मन ईमान प्यारोहा ।
रागिनी बंगाली टपा ताल ।३। कि जालमा
डिबे मियो यो किमदी यारीहाले विमडडे ना
लन जानं नामन जानं की करबे । म्रबेबे ब्रो
नेउसंग बरो योमैं डियाने जिंदडी दिवानी मैंडा
जिडरे । रागिनी बंगाली टपा ताल ।।३।।

दिलन् ॥ रागिनी बंगाली टपा ताल । ३ । चलउ
ठकर दीदन यारा मियां । दीदन यारेदा आमदा
जोदा मियां । बाग बहारो निवे वेषन चलिए हो
मियां मैंडा दिल परदा वजार मियां । रागिनी बं
गाली टपा ताल । ३ । देखणा दिदार जानेदा प
रावले परखाये लेक मियां । खोटा खरा पय

रा॰बे॰

मार चला कौं कोइ चलावे मजनूं इस्क गरी
वे कौं मियां । ईयाखुदा यद ह्नन मेरी दाहेफि
र याद सो मेरी मियां । रागिनी बंगाली टपा
नाल ।१। खेड नदा परवे लावे भला मियां वे
मानूं चाक चाक जवावे भोदा कोईवे । ओदा
नियांदा माडे चखे शोरी लगि मुहबत पाक

जाउडाक मालकीनाये । इस्क लगा मैंडा जीन
र सौदाके हाहाल जिगर परकीनावे । रागिनी
वेंगाली टपा ताल । ३ । कौन गत भई मोरी आ
नना मिलैं पिया मोकौं । उन बिन कल न प
र तप लछिन कैसे रैण विहाय आन मिलैं पि
या मोकौं । रागिनी वेंगाली टपा ताल ॥ ३ ॥

रा॰ बे॰ सखि आवेगी मेरे प्यारे नूं रान किथेवे गारिआं ॥
आपकड़जादे वारी नाल सही देमफ़ेड़ थकें
दी मैं हारिआं । रागिनी बेंगाली टपा नाल ।३।
कोनावेकरेजा मारदा पारदा गम खोवा ॥
कीइक्कदेवारीआ जय दिल वेकारदा होंनेया
रियां दे नाल गुजारदा । रागिनी बेंगाली टपा

रागिनी बंगाली टपा ताल ।३। ह्रोवे फोलाम
न पर चोंदियां । अंख लडंदिम माकमोदि वि
न वढ्यां दियां ह्रोवे फोलामे । रागिनी बंगा
ली टपा ताल ।३। जिंद मोडियां दे नाल ल
गिवे । अदा रंग नें जदमै पावेगा रे लगावे विन
डिठेआं मैठगी । रागिनी बंगाली टपा ता ।३

रा॰बे

नी बेंगाली टपा ताल ।३। पलक दरे आऊ मे
रा साई । जो चाहे जग राज करवोई कर सभ
ऊदरन उसि नाई । रागिनी बेंगाली टपा ता
ल ।३। भई लोडे बोमरी विन देखे नेकनाम
हाय । जबते गमन कीनो विदेश वा भवनभा
वे कछु नहिचा । रागिनी बेंगाली टपा ता॰ ।३।

ताल।३। तोरि नगारिया मैं नारहैंगि तेतो अ
नन करा रस भोग। सदा रंग रस रंग कराई ह
मकौं दीनी बहुत वियोग। रागिनी बेगाली ट
पाताल।३। आज तोरन गाजै आये पियारवा
वर मैरे। अंग संग रंग लागै प्रघट डरावत गा
न छिनल खेपल जप कत आप डेरैं। रागि

रा.बे

बैरागनि साथ साथ सानी यापमगारे ॥ इति
रागिनी बेंगाली टपा समाप्तम ॥

मगा मधमेरे मगारे धानि सासरे सानी । पगामे
धैं धैं पगाधम धामरे सासरे सानी । सारेगा
ममे मगारे मगामे धाम धाम पेप धानी । साध
साध पगाधरे सदा रंग मोरी एकन मानी ॥
रागिनी बेंगाली टपा तिनारा ॥ ३ ॥ पगा
मधनि सानि पधे मपगा धरेरे । री ससाध हो

ग॰ बे

थको रसमंजरीमे प्रेक्षत जो वना कह्यो है ॥ रा
गिनी बंगाली सवैया ताल ।३। यन्त्र सूथ
रि लोचन लोल सो मेलि ह्वकोउ कटाक्षकी
कोर कछो । म्रव माधुरि वानी बसी वनग
ईयो केश मोहन नास पढी । रूव नेहू तनै
तन लाज विराजति वार गहे बढ़े ओर मढी

रागिनी बंगाली सवैये नाल ।३। मोहिबो मोह
नकी गतिको गतिही पढो बैन कहा यौं पढै
गो । औध उरो जनको उपजै दिन कहि मैं छैगि
या न मढैगो । नैनन की गति गूढ चलाचल के
शबदास प्रकास चढैगो । माई कहो यह माय
गी दीपनि जो दिन है इहि भाति बढैगो । नवब

रा॰ वे॰

परसोहै । नाहिकरी जिन नागरिन्ह गजराज
दियो नव प्रेक्रम कोहै । रागिनी बंगाली स
वैया नाल ॥३॥ पाइ परैं मनुहार करैं पलका प
र पाय दियो भय भीने । सोय गई कहि केशव
कैसेहूं कोरही कोर कसौंहन कीने । साहस कै सु
ष सौं सुष छ्वै छिन मैं हरि मानि सबै सुष लीने

नवढी इति वालहिं वालकता हति श्रेगाअ
नंगकी फौज चढी । रागिनी बंगाली सबै
या नाल ।२। जह उरोजन के परसे तिस भौ
हि चढी नवढी छिन कोहै । दैरद वछूद बे
वनेंही रस रीति गही उनही मन मोहै । नीवी
की नीवि कुवै क्रावि श्रौरमी पेलत पानि पिया

रा॰ ३

ससोन पठ्यो अकुलाय कह्यो पिय कैसी है देषो ।
रागिनी ष्याली सवैया नाला २ । आजु मै देषी
है गोपसुता इक होयन ऐसी अहीर की जाई ॥
देषनही रहिये इति देहकी देषैते और न देषी सु
हाई । एकंही वेक विलोकनि ऊपर वारौं विलो
कि विलोक निकाई । केसवदास कलानिध व

एक उसास मही के उससे सिगरेई सुगंध बिदा करि
दीनै। रागिनी बंगाली सवैया नाल।३। बोलै
न बोल बुलावन हूं न षरेष लिषै भव प्रेम परै
षो। आपन हाथ बिलोकि बिलोकि कही नव
केसव बुद्धि बसेषो। छोटी बडी बिधि रेष लिषी
जग आपु की रेष सु कैन जलेषो। प्रेम ने बोल

रा·वें·

विंद सौंहै सौंतो वेदसो देष्यौ । रागिनी वेंगाली
सवैया ताल ।३। कान्ह भले जु भली समझाई
हौं मोहि समझकौ जौ उमह्यौ हो । केसव आप
नो मानिकसो मन हाथ परायें दै कौनें लह्यौ हो·
नैनन ही मिलवौ करियै अब नैनन कौ मिलि
वो तौ रह्यौ हो । जाइ कह्यौ नम जैसो सषी सकुचै

रु हूजिय कामकि मेरो कन्हाई । रागिनी बेगा
ली सवैया ताल । ३ । ज्यौं ज्यौं झलासखी केसव
दास विलास निवास हिये अवरेष्यौ । त्यौं त्यौं ब
ढ्यौ उर कंप कछू भ्रम भीत भयौ किधौं सीत वि
सेष्यौ । मुद्रित होत सखी वरही मेरे नैन सरोज
नि सांच कै लेष्यौ । नैंज कह्यो सुष मोहन को अरु

रा॰वे॰

केविधि म्हलि कहेहैं । रागिनी वंगाली सवै

या नाल ॥ ३ ॥ मोहित पाय वजावत नाचत वा

र अनेक सिंगार वनायो । जोहूमै आनकौ

आनिवौ छोडोपै नेरो नजत भयो मनभायो ।

भावै महेन्द्र कीरवो करि भामिनि भागवडे वस

मैं करी पायो । कान्ह मौं म्हपेज वारति नारी

हौ गुपाल मैं ऐसो कह्यो हो । रागिनी बंगाली
सवैया ताल । ३ । हैं गति भेद मनोहर के सब
आनंद के दरिये उलहै हैं । और विलासनि को म
ल ह्रासनि अंग सबासनि गाढे गहे हैं । वे कवि
लोकनि को अविलोकि सुमाक ह्वै नंदकुमार
रहे हैं । पई तो काम के बान कह्यावत फूलन

रा॰बं॰

बेन सिंगार समीप सिंगार किये किधौं भेद

र नाई । रागिनी बंगाली सवैया ताल । ३ ।

आवत देषि लिये उठि आगे कै केस आपुहि

आसन दीनौ । आपुहि पाई पषारि भलै ज

लपान कौ भाजन लाइन दीनौ । बीरा बना

इकै आगे धरे जब केहरि कौ करवी जन ली

सुचारुनि नाही सुचाइनितें अब पाइ लगायो।
रागिनी बेंगाली सवैया ताल ।३। आजु वि
राजत हैं कहि केसव श्रीवृषभान कुमारि क
न्हाई। वानि विरंचि बहि क्रम कामरची सुवि
वारि सुबुद्धि बनाई। ऐसी विलोकि विलोकि मै
ऐसीको नारि नहि जहि नारि निवाई। सूरति

रा॰बे॰

ज ही गौनै। मोहन के मनको मोहनी ह्वकहो
यह सिष ईसिषकौनै। रागिनी बंगाली सवैया
ताल।३। हिनकै इन देषहूजू देषौ सबै हिन वा
न सहैनो जू सुनी सब हीहे। यह नौ कछु चौह
वहै सबही अब सौंह करौ बकरी जनहीहैं। स
मजाइ कहौ सखजी सब केसब झूठीसबै हम

नौ। बांह गही हरि ऐसो कह्यो हसि मैंनो हतो

अपराध न कीनौ। रागिनी बंगालो सवैया

ताल ।३। विनवै विन बोपं हसापं हसै होउ

ला पैनैं बोलै रहै निन मौनै। मौंह अनेकनि

आवहु अंक करौ रति कौ अति रैन कीयौं नै।४

बापनै घाऊ बस्याइ विरी जब आईहो केशव आ

रा॰ वे

की पटकोटि मिटै न घटै विषकी विषताई । रा
गिनी बंगाली सवैया ताल । ३ । केशव औरनसौं
रसि रासि रच्यो रसवादु सबै हमसौंहैं । हौं मनमें
लेन जोलो कछु अब छाडहु बोलिबो बोल हमसौं
हैं । देषहु यौ इवार सकोवन आरसलोवन आरसी
सौंहैं । आपज बेसे ही साजसौं आज समूहि गाई

सौं जु कह्यौ है । मान कियौ अपमान कर्यौ तेहसो
अब के हसिके को रह्यौ है । रागिनी बेंगाली सवै
या ताल ३ । हौं हाव पाइ रही सिष सीषे नएसि
षैते हू सिषाई । मैं बड़ौ ने डाव पाइ रही देख्यौ पै के
शव के हू कटेव न जाई । दें उदिये विन सायनि हू
संग कूटन को षलको षलनाई । देषहु दैम अ

रा.वे.

निकै मै । रागिनी वेंगाली सवैया नाल ।३। वैठि इमी
व्रज नारिन मै वनि श्री वृषभान कुमारि सभागी । खे
लनि ही सखि चौसुर चारि भई नहि खेलखेली अनुरा
गी । पीछे ते के सब बोलि उठे हसिकै चित चातुरि आ
तुरी जागी । जानि न काहू कवै हरि के सर मार गाही
मरमी ह्या लागी । रागिनी वेंगाली सवैये समाप्तम्

पिय काल्हिकी सौंहैं । रागिनी बंगाली सवैया
ताल । ३ । वैठी सषीन की सौ भै सभा सबही के
स नैनन माझ बसै । हकैतें बात वस्याय कहै
मनहीं मन केशव दास हसै । खेलनि है इत षे
ल उनै पिय बिन खिलावनि यौ बिलसै । कोई
जानैनहीं हग दौरि कवै किनकै हरि श्रो खिनकै

चक्रवर्ती श्रीवासुदेव रति केलि कथा समेतमेतं करो
ति जयदेव कविः प्रबंधं २ यदि हरि स्मरणे सरसं म
नो यदि विलास कलासु कुतूहलं । मधुर कोमलकांत
पदावली शृणु तदा जयदेव सरस्वतीं ३ वाचः पल्ल
व यत्युमापतिधरः संदर्भ शुद्धि गिरां ॥ जानीते
जय देव एव शरणः श्लाघ्यो दुरूहद्रुते । शृंगा

ग्रथ टोडी रागिनी गीतगोविंदपरिछेदमाह ता·
ल। ।मेघैर्मे दुरमंबरं वनभव: श्यामास्तमालद्रु
मै नंक्तं भीरुरयं त्वमेव तदिमं राधेगृहं प्रापय
इत्थंनंदनि देशतश्चलितयो:प्रत्यध्वकुंजद्रुमं राधामा
धवयो र्जयंति यमुना कूलेरह:केलय: १ वाग्देवता
चरित चित्रित चित्तसद्मापद्मावती चरणचारण

दा॰ गो॰
गी॰

चक्रगरिष्ठे केशव धृत कच्छप रूप जय जगदीशहरे २
वसति दशन शिखरे धरणी तवलग्ना शशिनिकलं
क कले व नि मग्ना केशव धृत शूकर रूप जय जग दे
श हरे ३ तव कर कमल वरे नख अद्भुत शृंगं दलित
हिरण्य कशिपु तनु भृंगं केशव धृत नर हरि रूप
जय जग दीशहरे ॥४॥ छलय सि विक्र

रोत्तर सत्प्रमेय रचनै राचार्य गोवर्द्धन स्पर्द्धी कोपिनवि
श्रुतः श्रुतिधरो धोयीक विक्ष्मापतिः ॥ अष्टपदी
टोडी रागिनी । ताल । । प्रलय पयोधिजले धृ
तवानसि वेदं विहित वहित्र चरित्र मखेदं केश
व धृतमीन शरीर जयजगदीशहरे १ क्षितिरति
विपुलतरे तव तिष्ठति पृष्ठे धरणि धरणकिण

गी·टी
गी·

यं । केशव धृत रघुपति रूप जय जगदीशहरे ७ व
हसि वपुषि विशदे वसनं जलदाभं । हल हतिभी
ति मिलित यमुनाभं । केशवधृत हलधररूप जय
जगदीशहरे ८ निंदसि यज्ञविधेरहह श्रुतिजातं ।
सदय हृदय दर्शित पशुघातं । केशव धृत बुध श
रीर जय जगदीशहरे ९ म्लेछनि वहनि धने

मणे वलि मद्भुत वामन पदनख नीर जनित जनपा
वन केशव धृत वामन रूप जय जगदीशहरे
रे ५ क्षत्रिय रुधिर मये जगदप गत पापं । स्नपय
सि पयसि शमित भवतापं । केशव धृत भृगुपति
रूप जय जगदीशहरे ६ वितरसि दिक्षुरणे दि
क्पति कमनीयं । दशमुखमौलि वलिं रमणी

रा·टी·
गी·

ते हलं कलयते कारुण्यमातन्वते। म्लेच्छान्मूर्छय
ते दशाकृतिकृते कृष्णाय तुभ्यंनमः १२ अष्टपदी ॥
श्रितकमला कुच मंडल धृत कुंडल । कलित ललि
त वनमाल जय जय देव हरे १ दिनमणि मंडल
मंडन भव खंडन मुनि जन मान सहंस जय जय
देव हरे २ कालिय विषधर गंजन जन रंजन

कलयसिकरवालं । धूमकेतुमिव किमपि करालं केशव
धृत कल्कि शरीर जय जगदीशहरे १० श्रीजयदेव
कवेरिद मुदित मुदारं । शृणु सुखदं शुभदं भवसा
रं । केशव धृत दश विध रूप जय जगदीशहरे ११
वेदानुद्धरते जगन्निवहते भूगोल मुद्बिभ्रते दैत्यं दार
यते बलिं छलयते क्षत्रक्षयं कुर्वते । पौलस्त्यं जय

ग·टो·
गी·

सुंदर धृत मंदर श्रीमुख चंद्रचकोर । जयजयदेव हरे
७ श्रीजयदेवकवेरिदं कुरुते मुदं मंगल मुज्वलगी
तं । जय जयदेवहरे ८ अष्टपदी । श्लोक । रासोल्ला
स भरेण विभ्रमभृता माभीर वाम भ्रुवा मभ्यर्णे परिर
भ्यनिर्भरमुरः प्रेमांधया राधया । साधुत्वद्वदनं सुधाम
य मिति व्याहृत्य गीतस्तुति व्याजादुद्भटचुंबित

यदु कुल कमल दिनेश । जय जय देव हरे ३ मधुमुर
नरक विनाशन गरुडासन । सुर कुलकेलि निदान
जय जय देव हरे ४ अमल कमल दललोचन भव
मोचन । त्रिभुवन भवन निधान जय जय देव ह
रे ५ जनक सुताकृतभूषण जित दूषण समर शमि
त दशकंठ । जयजय देवहरे ६ अभिनवजल धर

रा·टी·
गी·

मूर्तिमानि वमथो मधुरो हरिः क्रीडति प नित्यानंग
वराङ्गजंग कवल क्लेशादि वेशावलं शालेयलवनेक
यान्त सरति श्रीखंड शैलानिलः । किंचास्निग्धरसाल
मौलिमुकुलान्यालोक्य हर्षो दया । उन्मीलति कुहूः
कुहूरिति कलो नानाः पिकानां गिरः ॥ ३ ॥ अष्टप
दी ॥ चंदन चर्च्चित नील कलेवर पीत वसन ।

स्मित मनो हारी हरिः पातु वः अनेक नारी परिरंभसं
भ्रम स्फुरन्मनो हारिविलास लालसं मुरारि मारादु
पदर्शी यत्यसौ सखी समक्षं पुनराह राधिका ७ वि
श्वेषा मनुरंजनेन जनयन्नानंद मिंदीवर श्रेणीश्या
मलकोमलैरुपनयन्नंगैरनंगोत्सवं । स्वछंदं व्रजसुं
दरीभिरभितः प्रत्यंगमालिंगितः शृंगारः सखि

गी·टी·
गी·

सरोजे ३ कपि कपोल तले मिलिता लपितं किमपि
स्रुति मूले । चारु चुचुंब नितंबवती दयितं पु
लकै रनुकूले ४ केलिकला कुतकेनच काचि
द मंयमुना जलकूले । मंजल वंजुल कुंजगतं
विचकर्ष करेण दुकूले । करतल ताल तरल वल
या वलि कलित कल स्वन वंशी । रास रसे सह

वनमाली । केलि चलन्मणि कुंडल मंडित गंड युगस्मि
तशाली २ हरिरिह मुग्ध वधूनिकरे । विलासिनि वि
लसति केलिपरे २ पीन पयो धर भार भरेण हरिं परि
रभ्य सरागं । गोप वधूरनु गायति काचिदुदंचित पंच
म रागं २ कपटविलास विलोल विलोचन खेलन जनित म
नोजं । ध्यायति मुग्ध वधूरधिकं मधु सूदन वदन

ग·टी
गी·

निजोत्कर्षा दीर्षा वशेनगतान्यत: कचिदपिलता कुं
जेगुंजन मधुव्रत मंडली मुखरशिखरे लीना दीना
प्युवावरह: सावी १० कंसारिरपि संसार वासना बं
ध शृंखलां राधा माधाय हृदये तत्याज व्रज सुंद
री ११ इतस्त तस्ता·मनु सृत्य राधिका मनंग वाण
व्रणखिन्न मानस: कृतानुता ।

न्तन्य परा हरिणा युवती प्रशशंसे ६ श्लिष्यति काम
पि चुंबति कामपि रमयति कामपि रामां पश्यति स
स्मित चारु परा मपरा मनु गछति वामां ७ श्रीजय
देव भणित मिद मद्भुत केशव केलि रहस्यं । वृंदा
वन विपिने ललितं वितनोतु शुभानि यशस्यं ।८।
विहरति वनेराधा साधारण प्रणये हरौ विगलित

ता·टी·
गी·

कुटिलभ्रुकोप भरेण शोणपद्ममिवो परि भ्रमता

कुलं भ्रमरेणतामहं हृदिसंगतामनिशं भृशं रमया

मि किं वनेनुसरामि तामिह किंवृथा विलपामि ४

तन्विखिन्न मसूयया हृदयन्तवाकलयामि तन्नवे

द्मि कुतो गतासिनतेनतेनुनयामि ५ दृश्यसे पु

रतो गतागतमेव किंविदधासि। किंपुरेव स से

पः सकलिंद नंदनी तटान्त कुंजे निषसाद माधवः १२

॥ अष्टपदी ॥ मामियं चलिता विलोक्य वृतं वधू

निचयेन । सापराधतया मयापि न वारिताति भयेन

१ हरि हरि हता दरतया गता सा कुपितेव । किंक

रिष्यति किं वदिष्यति सा चिरं विरहेण किं धनेन जने

न किं मम किं जीवितेन गृहेण २ चिंतयामि तदाननं

गी·टी·
गी·

तस्या एव स्मरो हसो मन सिज थैवल्कदालाक्षग ।
श्रेणी जर्जरितं मना गपिमनो नाद्यापि संभुज्यते
१३ हृदि विलाशता हारो नायं भजंगमना यकः
कुवलय दल श्रेणी कंठेन सागरल द्युतिः मल
यज रजो नेदं भस्म प्रिया रहिते मयि प्रहरन हर
भ्रांत्यानंग क्रुधाकिमधावसि १४ अष्टपदी ।

भ्रमं परिरंभणेन ददासि । त्यज्यता मपरं कदापितवे

हशं नकरोमि । देहि सुंदरि दर्शनं ममनन्मथेन

दुनोमि । वर्णितं जयदेव केन हरेरिदं प्रवणेन किं

दु बिल्व मसृण संभव रोहिणी रमणेन ६ पाणौ

मा कुरु चूत सायक ममुं माचाप मारोपय क्रीडा

निर्जित विश्व मूर्छित जना घातेन किं पौरुषं ।

रा·गो·
गी·

वसति विपिन विताने त्यजति ललित धाम । लुठ
ति धरणि शयने बहु विलपति तव नाम ४ भण
ति कविजयदेवे विरह विलसितेन । मनसिरभस
विभवे हरि रुदयतु सुकृतेन ५ श्लोक पूर्वं यत्र स
मं त्वयारति पते रासा दिताः सिद्धयस्तस्मिन्नेव नि
कुंज मन्मथ महा तीर्थे पुनर्माधवः । ध्यायंस्त्वाम

११

वहति मलय समीरे मदन मुपनिधाय स्फुटति कुसु
मनिकरे विरहि हृदय दलनाय २ सखि सीदति तव
विरहे वन माली। दहति शिशिर मयूखे मरण मनु
करोति। पतति मदन विशिखे विलपति विकलतरो
ति २ ध्वनति मधुप समूहे श्रवण मपि दधाति। मन
सि वलित विरहे निशि निशि रुजमुप याति ३

रा.टी.
गी.

गयाहशी विभ्रमात्स्मरहृङ्गोंबुज सौरभं सव सुधासंदी
गिरं वक्रिमा। मा विंबाधरमाधुरीति विषया संगे
पि चेन्मानसं तस्यां लग्न समाधि हन्त विरह व्याधि क
थं वर्तते १ साकूतस्मितमा कुला कुलगलद्धम्मि
ल मुल्लासितं। भ्रूवल्ली कमलीक दर्शित भुजा मूला
र्द्धदृष्टस्तनं। गोपीनान्निभृतन्निरीक्ष्य गमिताकांक्ष

निशि जपनृपितवै वालाप मेजावली भूयस्तन्कुवञ्जे

भ निर्भरपरी रंभामरतं वांछति १ विकरति मञ्जः

श्वासा नाशाः पुरो मञ्जरी तते प्रविशति मञ्जः कुंजे

गुंजे गंजन्मञ्जवञ्ज ञ्जतास्यति । रचयति मञ्जः शय्या

११- स्यया ञलंञ्जरीतते मदन कदन क्लान्तः कान्ते प्रिय

११-५१- स्तववर्तते २ नातिस्पर्शं स्नावा तितेव नरला स्वि ।

रा॰टी॰
गी॰

मकरचरी अष्टपदी ॥ ललित लवंगलता परिशी
लन कोमल मलय समीरे। मधुकर निकर करंबि
त कोकिल कूजित कुंजकुटीरे। विहरति हरिरिह
सरस वसंते नृत्यति युवति जनेन समं सखि विरहि
जनस्य दुरंते। उन्मद मदन मनोरथ पथिक वधूज
न जनित विलापे। अलि कुल संकुल कुसुम समू

स्थिरं चिंतयत्वंतमंगय मनो हरोहरत्तवः क्लेशान्तवः
केशवः २ यमुना तीर वानीर निकुंजे मंदमास्थितं
प्राह प्रेमभरोद्भ्रान्तं माधवं राधिका सखी । वसंते वा
संती कुसुम सुकुमारै रवयवै । भ्रमंती कांतारे ब
हु विहित कृष्णानु सरणं । अमंदं कंदर्पज्वरजनि
तचिंता कुलतया । वलद्बाधां राधां सरसमिद मूचे

रा·गो·
गी·

रुणा कृतहासे । विरहिनि कृंतन कुंत मुखाकृति
केतकि दंतुरिताशे ५ माधविका परिमल ललि
तेनव मालति जाति सुगंधौ । मुनि मनसा मपि ।
मोहन कारिणि तरुणा कारण बंधु ६ स्फुरदति
मुक्त लता परि रंभण मुकुलित पुलकित चूते
। वृंदावन विपिने परि सर परि गत ।

ह निराकुल वकुल कलापे २ मृगमदसौरभरभसव
शंवद नवदल माल तमाले । युवजन हृदयविदा
रण मनसिज नखरुचि किंशुकजाले । मदनमही
पति कनक दंडरुचि केसर कुसुम विकामिलित ।
शिली मुख पाटल पटल कृतस्मर तूणविलासे
४ विगलितलज्जित जगदवलोकन तरुणक

गी·टी·
गी·

२१ उन्मीलन्मधुगंध लुब्धमधुपव्याधूत चूतांकु
र क्रीडत्कोकिल काकली कल कलै रुद्गीर्ण क
र्णज्वराः नीयंते पथिकैः कथं कथ मपि ध्यानाव
धानक्षण प्राप्त प्राण समा समागम रसोल्लासैरमी
वासराः २२ दूरालोक स्तोक स्तव कन वकाशोकल
तिका विकाशः कासारो पवन पवनोयं व्यथ।

यमुना जल पूते। श्रीजयदेवभणितमिदमुदयति ह
रि चरण स्मृति सारं। सरस वसंत समय वन वर्ण
न मनुगत मदन विकारं ३ अष्टपदी ॥ दर विद
लित मल्ली वल्लि वंचत्पराग प्रकटित पट वासै
र्वासयन्काननानि। इह हि दहति चेतः केतकी
गंधबंधुः प्रसरद समबाण प्राण वद्गंधवाहः ॥

रा॰ हे
गी॰

अविरत निपातित मदन शरादिव भवद वनाय वि
शालं । स्वहृदय मर्म्म करोति सजल नलिनी द
लजालं २ कुसुम विशिख शरतल्प मनल्प विला
स कला कमनीयं । व्रत मिव तव परि रंभ सुखा
य करोति कुसुम शयनीयं ॥ ३ ॥ वहतिच गलि
त विलोचन जलधर मानन कमल मुदारं । विधु

यति अपि आम्रद्रुंगी रसितान रमणीयान मञ्जुल प्रस्त
ति श्रुतानां सखि शिखरिणीयं श्रावयति । अष्टप
दी ॥ निंदति चंदन मिंदु करण मनु विंदति खेदम
धीरं ॥ व्याल निलय मिलनेन गरल मिव कलय ।
ति मलय समीरं ॥१॥ माधव साविरहे तवदीनाम
नसिज विशिखभया दिव भावनया त्वयिलीना

गी·टी
गी·

ति कलय्य भवंत मतीव दूरायं। विलपति हसति
विषीदति रोदति चंचति मुंचति तापं ७ श्रीजयदे
व भणितमिद मधिकं यदि मनसा नटनीयं। हरि
विरहाकुल वल्लव युवति सखी वचनं पटनीयं ८
अष्टपदी॥ श्लोक॥ आवासो विपिनायते प्रिय सखी
मालापि जालायते॥ तापो पि श्वसितेन दा

मिव विकट विधुंतुद दन्त दलन गलिता मृतधारं
४ विलिखति रहसि कुरंगम देन भवंतम समशर
भूतं । प्रणमति मकर मधो विनिधाय करेच शरे न
वचूतं ५ प्रतिपद मिदमपि निगदति माधव तव
चरणे पतिताहं । त्वयि विमुखे मयि सपदि सुधानि
धि रपि तनुते तनुदाहं ६ ध्यान लयेन पुरः प ।

गी टी
गी॰

न पवन मनुपम परिणाहं। मदन दहन मिव दह
ति सदाहं ३ दिशि दिशि किरति सजल कण जाल
॥ नयन नलिन मिव विगलित नालं ४ नयन विष
य मिव किशलय तल्पं। कलयति विहित हुताश
न कल्पं ५ त्यजति न पाणि तलेन कपोलं। बाल
शशिन मिव सायम लोलं ६ हरिरिति हरि रिति

वदहन ज्वाला कलापायते । सापि त्वद्विरहेण हन्त
हरिणी रूपायते हा कथं । कंदर्पोपि यमायते विर
चयन् शार्दूल विक्रीडितं ॥ अष्टपदी ॥ स्तनविनि ।
हित मपि हारमुदारं । सा मनुते कृशतनु रिव भा
रं राधिका विरहे तव केशव । सरस मसृणमपि म
लयज पंकं पश्यति विषमिव वपुषि सशंकं । श्वसि

रा टी·
गी·

त्पते ताम्यति ध्यायत्युद्भ्रमति प्रमीलति पतत्युद्या
ति मूर्छत्यपि एतावत्यतनुज्वरे वरतनुर्जीवेन्नकिं
ते रसात्स्ववैद्य प्रतिम प्रसीदसि ततस्त्यक्तोन्यथा ह
स्तकः १९ कंदर्पज्वरसंज्वरातुरतनोराश्चर्यमस्या
श्चिरं। चेतश्चंदनचंद्रमःकमलिनी चिंतासु संताम्य
ति। किंतुक्लांतिरसेन शीतलतरं त्वामेकमेव प्रियं

जयति सकामं । विरह विहित मरणे व निकामे ७
श्रीजय देव भणितमिदमति गीतं । सुखयतु केश
व पद मुप नीतं ८ अष्टपदी ॥ श्लोक ॥ स्मरतुरं
दैवत वैद्य हृद्य त्वदंग संगा मृत मात्र साध्यां । वि
मुक्त बाधां कुरुषेन राधा मुपेंद्र वज्रा दपि दारु
णोसि २५ सारीमां वति सीतकरोति विलपत्सतक

गी.टी. स्वछंद व्रजसुंदरी जनमन स्तोक प्रदोषस्थितं। कंस
गी. ध्वंसन धूम केतुरवतुत्वां देवकीनंदनः ४४ प्रथतं
गंतम शङ्कां चिर मनरङ्कां लतागृहे हे हृष्णा। तचिरि
नं गोविंदे मनसिज मंदेमात्वी शाह ३ अंगेषाभरणं
करोति बहुशः पत्रेपि संचारिणि। प्राप्तं त्वाम्परिशं
कते वितनुते शय्यां चिरं ध्यायति। इत्याकल्प वि

ध्यायंती वह्नसिश्यिना कथमपि हीणाणलं प्राणिति
२७ हाण मपि विरह्नः पुराण सेहे नयन निमीलि
तखिन्नया नयाने । श्वसिति कथममौ रसालशाखां
चिर विरहेण विलोक्य पुष्पिताग्रां २८ सायाम
ग्य मालारविं मधुपसैलोक्य मौलस्थली नेया ।
स्यो विज्ञलीलरत्नमवनी भारा वतारांतकः ॥

रा॰दो
गी॰

त्वदधर मधुर मधूनि पिबन्तं १ नाथ हरि सीदति रा
धा वासगृहे। त्वदभि सारण रभसेन वलन्ती पतति
पदानि कियन्ति चलन्ती २ विहित विशद बिस कि
शलय वलया। जीवति परमिह तव रति कलया
३ मुहुर वलोकित मंडन लीला। मधुरिपु रह
मिति भावन शीला ४ त्वरित मुपैति न कथ।

कल्प नल्प रचना संकल्प लीलाशत। व्याशङ्कापि
विनात्वया वरतनुर्नैषा निशां नेष्यति ३। विपुल पु
लकपालिः स्फीत सीत्कार मंतर्जनित जडिमकाकु
व्याकुलं व्याहरंती। नवकि तव विधाया मंदके
दर्पचिंता रसजल निधि मग्नाध्यानलग्ना मृगाक्षी
३३ ॥ अष्टपदी ॥ पश्यति दिशि दिशि रहसि भवंतं

रा.टी.
गी.

मी कहे । आनर्यामिन हरि गोचर मिन: सानंद नंदा
स्पदम् । राधाया ववनं तदयग मत्वानंदांतिके गो
पतौ । गोविंदस्य जयंति सायमतिथि: प्राशस्त्य गर्भा
गिर: ३३ अत्रान्तरेव जटला जल वर्त्मपाता संजा
त पातक इव स्फुटलांछनश्री: । वृंदावनांतरम ।
दीपय दंसुजाले दिकंदरी वदन चंदन बिंदु रिं

मभिसारं। हरिरिति वदति सखी मनुवारं ५ श्लिष्य
ति चुंबति जलधर कल्पं। हरि रुपगत इति तिमि
र मनल्पं ६ भवति विलंबिनि विगलित लज्जा। वि
लपति रोदिति वासक सज्जा ७ श्रीजयदेव कवेरि
दमुदितं। रसिक जनं तनुता मपि मुदितं ८ श्लो
क॥ किं विश्राम्यसि कृष्ण भोगि भवने भांडीर भू

गीटे
गीं

जगति जना विचाय मायते ञयोमम जना हरो भवि
ष्यति २७ बाधां विधेहि मलयानिल पंचबाण प्राणा
न् गृहाण न गृहं पुनराश्रयिष्ये। किं ते कृतांत
भगिनि क्षमया तरंगै। रंगानि सिंच मम शाम्यतु
देहदाहः २८। मुखारी। कथित समयेपि हरि
रहह न ययौ वनं। मम विफल मिदं ममल

दुः ३४ प्रसरति शशधर बिंबे विहित विलंबे च मा
धवे । विधुरा विरचित विविध विलापं सा परिता
पं चकारोच्चैः ३५ विरह पाण्डु मुरारि मुखांबुजद्यु
तिरयंनपि वेदनां विधुरतीव तनोति मनोभवः
सुहृदये हृदये मदन व्यथां ३६ मनो भवानंदनचं
दनानिल प्रसीद रे दक्षिण मुंच वामतां ॥ दक्षि

रा॰ दे॰
गी॰

पि कामिनीमभिसृतः किंवा कलाकेलिभिर्वद्धो वंधु
भिरन्धकारिणि वनाभ्यर्णे किमुद्भ्राम्यति कांतः क्ला
न्तमना मनागपि पथि प्रस्थातुमेवाक्षमः संके
तीकृतमंजुवंजुललताकुंजेपि यन्नागतः ४ अथा
गतां माधवमंतरेण सखीमियं वीक्ष्य विषादमूकां
विशंकमाना रमितं कयापि जनार्दनं दृष्टवदेतदा

जयदेव कवि भारती। वसतु हृदि युवति रिव कोम
ल कलावती द। अष्टपदी। श्लोक। नाम श्याप म
यि स्वयं वर परो लीलोदनीरोदरे। शंके सुंदरी काल
कूट मपिवन्मूढो मृडानी पतिः। इत्थं पूर्वकथा
भिरन्यमनसो विक्षिप्य वक्षोंचले। राधायाः स्तन
कोरकोपरि मिलन्नेत्रो हरिः पातुवः। नत्किंकाम

ग॰दे॰
गी॰

णित रशन जघन गति लोला ४ दयित विलोकितल
ज्जित हसिता । बहुविध कूजित रतिरस रसिता ५
विपुल पुलक पृथुवेपथु भंगा । श्वसित निमीलि
त विकसदनंगा ६ श्रमजल कणभर सुभगशरी
रा । परिपतितोरसि रतिरणधीरा ७ श्रीजयदेव
भणित हरिरमितम् । कलिकलुषं जनयतु परिश

ह ७। ग्रहपदी। स्मर समरोचित विरचितवेशा गलि
त कुसुम दर विलुलित केशा १ कापि मधुरिपुणा
विलसति युवति रधिक गुणा। हरि परिरंभण व
लित विकारा। कुच कलशो परि तरलित हारा २
विचल दलक ललिता ननचंद्रा। तदधर पानरभ
सकृत तंद्रा ३ चंचल कुंडल ललितकपोला। मुख

५५.
११

गा·दे·
गी

वने ऊच तुग गगने स्टग मदकविहरषिते । मणिाम
ड्र कमले तारक पटले नरवपद शशि सृषिते २ जिन
विम्ब शकले स्तड भज युगले करतल नलिनीदले·
मर्कत वलय मधुकर निवये विनरति हिम शीत
ले ध्वनि घटह्र जघने विपुल पवने मनसिज कनका
सने । मणिमय दशने नोवग ह्रसने विकरति

मिते ८ अष्टपदी। सोरठा॥ स्मरदिन मदने रमणी
वदने त्रेवन चलिनायरे। म्रगमद तिलकं लिख
ति सपुलकं म्रगमिव रजनीकरे १ रमने यमनाश्र
लिन वने विजय मगारिरयुना। ववनवय हविरे र
वयति विक्रेरे नरलिम नकलाानने अरुनक अस्र
मेवला हावमे रमिणति म्रगकानने २ घटयति स्व

गा॰ दे॰
गी॰

हरिरिति कविनृप जयदेवके दा अष्टपदी ॥ अनिल
तरल कुवलय नयनेन । तपति न सा किसलय
शयनेन १ सखियाा रमिता वनमालिना । विक
सित सरसिज ललित मुखेन । स्फुटति न सा मन
सिज विशिखेन २ अमृत मधुर मृदुतर वचनेन ।
ज्वलति न सा मलयज पवनेन ३ स्थल जल रुह

कृतवासने ५ वरणा किसलये कमला निलयेन । रवि मणि गण पूजिते । वहिरप वरणे यावक भरणं जनयति हृदियो जिते ६ रमयति मम्यशे कामपि सरशे खिल हलधर सोदरे । किमफल मवसे वि वसिह विरस मवद मपि विट पोदरे ७ इह रस भण ने मधुरिपु पद सेवके । कलि युग चरितं नवसन्त

गी॰गो॰

इति गीते हृदयमनेन ८ अष्टपदी । श्लोक ॥ नाया
तः सखि निर्दयो यदि शठस्त्वं दूति किं दूयसे ॥
स्वच्छन्दं बहुवल्लभः स रमते किं तत्र ते दूषणं ॥ प
श्याद्य प्रियसंगमाय दयितस्याकृष्यमाणं गुणै ।
रुत्कंठार्त्तिभरादिव स्फुटदिदं चेतः स्वयं यास्यति
निभृतनिकुंजगृहं गतया निशि रहसि निलीय

रुचिकरचरणेन । लुठति न मा हिमकरकिरणेन
४ सजल जलद समुदय रुचिरेण । दलति न मा ह
दि विरह भरेण ५ कनक निकष रुचि शुचि वस
नेन । श्वसिति न मा परिजन हसिनेन ६ सकलभु
वन जन वर तरुणेन । वहति न मा रुज मतिकरु
णेन ७ श्रीजयदेव भणित वचनेन । प्रविशतु

ता॰ टे॰
गी॰

यातेकृतपरिरंभणचुंवनया परिरभ्य कृताधरपाने
३ अलसनिमीलितलोचनया पुलकावलेललितक
पोले। श्रमजलसकलकलेवरया वरमदनमदाद
तिलोले। कोकिलकलरवकूजितया जितमनसि
ज तंत्रविचारे। श्लथकुसुमाकुलकुंतलया नखलि
खित घनस्तनभारम् ५॥ चरणरणित मणि

वसन्ते । चकित विलोकित सकल दिशा रति रभस व
शेन रमन्ते १ सखि हे केशि मदन मुदारं । रमय मया
सह मदन मनोरथ भावितया सविकारं । प्रथम स
मागम लज्जितया पटु चाटु शतै रनुकूले । मृदु मधु
स्मित भाषितया शिथिली कृत जघन दुकूले २
किसलय शयन निवेशितया चिरमुरसि ममैव शा

गा॰ टे॰
गी॰

सलीलं ।८। अष्टपदी । स्लोक ॥ दृष्टि व्याकुल गोकु
ला वनवशा उद्धृत्य गोवर्द्धनं । विभ्रद्वल्लव सुंदरी
भि राधिका नंदाच्चिरं चुंबितः । दर्पेणेव तदर्पिताधर
तटी सिंदूर मुद्रांकितो । बाहुर्गोपतनोस्तनोतु भव
तः श्रेयांसि केसद्विषः ४३ अथ कथमपि यामिनी वि
नीय स्मर शर जर्जरितापि सा प्रभाते । अनुनयवच

नूपुरया परिपूरित सुरत वितानें । मुखरविशृंखल

मेखलया सकचग्रह चुंबन दानम् ६ रति सुख समय

रसाल सया दर मुकुलित नयन सरोजं । निस्सहनि

पतित तनु लतया मधुसूदन मुदित मनोजं ७ श्री

जयदेव भणित मिद मतिशय मधुरिपु निधुवन

शीलं । सुख मुत्कंठित गोपवधूकथितं वितनोतु

गी॰ टे॰
गी॰

वन विरचित नीलमनूपे दशन वसन मरुणे नवकु
सुम तनोति नन्तरञ्च रूपं २ वपुरनु हरति नवसमरसे
गवरव रन्न खचितनतरेखे । मरकत शकल कलित क
ल यौत लिपेरिव रतिजय लेखे २ वरण कमल गल
दलक कशिक मिदे नव हृदय मदारे । दर्शयतीव
वहि मर्दन डुम नव किसलय परिवारे । दशनपदे

८

३२

नेवदंने मये भ्रमति मपि प्रिय माहु साध्वस हृदये ४४
प्रहपदी ॥ रजनि जनित गुरु जागर राग कषायित
मलस निमेषं । वहति नयन मनुरागा मिव स्फुट
मुदित रसाभिनिवेशं । याहि माधव याहि केशव
मावद कैतववादं । तामनु सर सरसीरुह लोचन
यातव हरति विषादं । कजल मलिन विलोचनमचु

ग॰टे
गी॰

लवरिते ० श्रीजयदेव भणितरतिवंचित खंडित यु
वति विलापं । शृणुत सदामधुरं विबुधा विबुधाल
यतोपि । ८ । अष्टपदी । श्लोक ॥ तवेदं पश्यंत्याः प्र
सर दनुरागं बहिरिव । प्रियापादालक्त छुरित
मरुणद्योति हृदयं । ममाद्य प्रख्यात प्रणय भ
रभंगेन कितवत्वदालोकः शोका दपि किम

भवदयगगनममम जनयति वेनसि खेदे । कथयति
कथमथनापि मया मह नव वपरेनदमेदं ५ वहि
रिवमलिव नरंनरंनव कुसम मनोपि मविषानिन्
ने । कथमथ वेचयसे जन मन गानम समम शय ज्वर
हने ६ भ्रमति भवान वला कवलाय वनेषु किम
व विविधे प्रथयति पत्रनि केवव वय निर्दयता

रा॰दे॰
गी

रिस्रवाच । परि हर ह्नना वेक शेको नया सनते च
न स्तव जवनया कोते पगानव काशिनि विषाति
वितनो रनो थनो नकोपि मगोनवे अणियिनि प
वी वभारभे वियेहि वियेयनामद मगये वियेहिम
यि निर्दय हेम देशा दोर्वलि वेयनि विडस्तन पीड
नानि वेडिनमेव मद मेवय पंचवाण चांडाल को

पिलञ्जं जनयति ४५ पद्मापयोधरतटी परिरम्भ
लग्नकाश्मीरमुद्रितमुरो मधुसूदनस्य । व्यक्तान
रागमिव खेलदनंगखेदस्वेदांबुपूरमनुपूरयतु
प्रियमवः ४६ अत्रान्तरे मसृणरोषवशामसीम
निः श्वासनिस्सहमुखीं सुमुखीमुपेत्य सव्रीड
मीक्षितसखीवदने दिनान्ते सानंदगद्गदपदं हरि

गी-टे
गी

निशय स्निग्य मरये प्रयोग्य स्मपस्थिनः। अष्टपदी।
वदसि यदि किंचिदपि दन्त रुचि कौमुदी हरति द
रति मिरमति घोरम। स्फुरदधर सीधवे तव वद
न चंद्रमा रोचयति लोचन चकोरं १ प्रिये चारु शी
ले मुंचयति मानमनिदानं। सपदि मदनानलो दह
ति मम मानसं देहि मुख कमल मधुपानं। सत्यमेवा

ड दलना स्तवः प्रयोग ॥ शशि स्रवि नव भाति मे

गुर भंग्रवजन मोह कराल कोल स्पर्शी नड दिति

भय भंजनाय प्रनांल्वद परमोध स्वैव सिद्धिमेवः

धेय यति हस्यामोने नल्विप्रपंचय पंच मेन कृति

मधुरालापै स्तापं विनोदय हृष्टिभिः स्वस्वावि

विमत्वि भावनानां वहि संचवन संचमा स्वय म

गा·दे·
गी·

ति कोकनदरूपं। कुसुमशरबाणभावेन यदि रंज
यसि कृष्ण मिदमेतदनुरूपं ८ स्फुरतु कुचकुंभयो
रुपरि मणिमंजरी रंजयतु तव हृदयदेशं। रसतु
रसनापि तव घनजघनमंडले घोषयतु मन्मथ
निदेशं ९ स्थलकमलगंजनं मम हृदयरंजनं ज
नितरतिरंगपरभागं। भण मसृणवाणि कर

सि यदि वदसि मयि कोपिनी देहि मखर नखर शर

घातं । घटय भुज बंधनं जनय रद खंडनं येन वा

भवति सुखजातं २ त्वमसि मम भूषणं त्वमसि

मम जीवनं त्वमसि मम जलधि रत्नं । भवतु भव

तीह मयि सतत मनु रोधिनी तत्र मम हृदयमति

यत्नं २ नीलनलिनाभमपि तन्वि तव लोचनं धारय

गी॰ दे॰
गो॰

ते। श्लोक॥ वंशक फनिवोथवाय मथुराः स्त्रि

ग्य मधुक कुविः गोडे वडिवकास्निनीलनलिन

श्रीमोचने लोचने। नामान्वेति निल प्रहन पद

वीकेदामंदति प्रिये प्रायस्त्वन्मावि सेवया विजयते

विवेस[illegible]श्यासुधः प। हर्षौनव मदाल सेवदनमिंड

संदीपने गतिजेन मनोरमाधि[illegible]जनं रंभ मूरुद्वये

वाणि चरणा द्वये सरस लसद लक्तकरागे ६ स्मरग

रल खंडने मम शिरसि मंडने देहि पदपल्लवमुदा

रे । ज्वलति मयि दारुणो मदन कदना नलो हरत

तदुपाहित विकारे ७ इति चटुल चाटु पटु चारुमु

र वैरिणो राधिका मधि वचन जाते । जयति पद्मा

वती रमण जयदेव कवि भारती भणित मति शा

गा· दे·
गी·

मात्मा कुटिलकचौतकवरी आरोपि मारोद्यमे । मो

ह्येना वदयेंव नत्विनन्ते विवायमेरागवान् सह

नःस्तन मेडल लवकंठे प्राणौ मम श्रीडति ५८

मानिनी मानविधं मदनो जयति सोऽशंतं । मड्डवे

गु समस्तूनः श्रीमद्गोपालकधनिः ५५ नामय

मन्मथ विनो ब्रनिवनिरम भिन्नो विषाद मम

रतिस्तव कलावती ललितरुचिरभैरवि ऋवा वक्त्रोविद्र
१ भैरवं वक्त्रमिमलिं इन्द्री गणम ५२ भूपलवे य
न्त्र पोतानंरुगिनाति वाणाग्रणा: श्रवण पालि रि
नि स्वरेण । नस्या मनेत्र जय जंगम देवमाया म
हाणि निर्जित जगन्ति किमपिनाति । ५३ । भूवा
पे निरुमा कराल विशालो निर्भीत मर्म स्थंया शण

गा·टे·
गी·

सरति वहति मृदु पवने किम परमधिक सुखमपि भ

भवने १ माधवे माकुरु मानिनि मानमये । ताल फ

लादपि गुरुमति सरसे । किम विफली कुरुषेकु

चकलशं २ कतिन कथित मिदमनुपदमचिरं । मा

परिहरी हरमति मधुरुचिरं ३ किमिति विषीदसि

रोदिषि विकला । वहसति युवति सभा तव वि

न्तो । प्रवर्तितन्न हरी चरीत्रे कलहान्तरिता म्हणवा
वरहं:संवी ५८ स्त्रिये यत्स्यकवा सियन्त्राणा मति
स्वधामि यदृगिणा हे बघ्यासि यडन्मते विस्मव
नेो यानासि नस्मिन्निये । नयूके विपरीतकारीणि
नव श्रीसंट वर्तविषे श्रीने भ्रूलपनोहिमे ङ्गत व
ह:क्रीडा म्हदे यानतनाः ५०॥ अष्टपदी ॥ हरिरभि

गी॰टी॰
गी॰

श्रीराधिकाजीके वचन सिषि सिव सखी सें वासोयस
खी वरिसमानिलें विषमिव सपावसिमयेस्मितु नो
ति मनोगते। हृदय मध्ये तस्मिनेव पुनर्वलते व
लान् अवलघ हणामवाम:कामो भिकाम निरंकुश:
पद॥ गाणापनि गाणागमे ग्रामे भ्रमा दपिमेस्ते
दृष्टिवपरि नोछे दोषं विसंवपनि हृानं॥ खबति

कला ४ जनयसि मनसि किमिति गुरु खेदं । श्रृणु

मम वचन मनीहित भेदं ५ हरिरुपयातु वदुमधु

रं किमिति करोषि हृदय मति विधुरं ६ सजल न

लिन दल शीतल शयने । हरिमवलोकय सफल

य नयने ७ श्रीजयदेव भणित मति ललिते । सुखय

तु रसिक जनं हरि चरिते ८ ॥ अष्टपदी ॥ श्लोक ॥

गा·टे·
गी·

नेयेन पीता थिन्ना स्तगाद्गो गानवति क्रनवेषेकशा
वेजेजशय्या रचित रुचिर भूषां दृष्टिमोषे प्रदोषेस्फु
रति निरवसादां कापि राधां जगाद ४१ सामोद्दय
ति वदति विप्रियकथा प्रयोग मालिंगनै । पीतिं यास्य
सि रंस्यसे सखि समागमेति विना कलः । सकोपश्च
तिवेपने पुलकया मानेदति स्विपति । प्रस्व स्फुरक्षु

41 ४५

ड्डलनतसो छसो विन्हागिगिरा मोविना ग्नरमिमनो

ङसे कासं कयाजि नाकेशिकि ५४ श्रीनि स्वल्लन्नो

ह्रपि॰ ज्ञवलया पीडेन लाई वंगो गयाखीन पयोशव

स्मयागा ह्लन्तेभेन संभेद्वान। यत्रस्थियानि मील

नि नाना मथ लिने हिपे गन्हागान। केसस्थालम

भूजित शिनि आमोर कोला ह्लनः ६॰ ह्वकविमन

गी॰टी॰
गी॰

इव मे भ्रमा दन्तुरता रेभा दन्त श्रीनयोः । श्रनाथे तान
योश्छेमाभि मिलिमयोः स भाषा श्री जीनतो । देपसोति
ह्न कोन कोन नमसि श्रीडा विमिश्रोरसः ८४ श्र
तागति निपतेजने श्रवणयो स्तापिञ्छ गुच्छा ली ।
मूर्द्धि श्याम सरोजदाम कुचयोः कस्तूरिकापत्र
कम ॥ श्वमी नामभि लाव सत्वर हृदो विघड्ड ति

५२ ८२

त्रिस्कंधि ति स्थिर नमः ऽंजे निर्जें जे स्थिरः ४१ सहाये

नमसे समग्र मधना तिगंमो खरं स्लगामे । गोविंदस

मनोरथेन च समं प्रामेन नमः संरुदतो । कोकाना करु

णा स्वनेन सदृशी दीर्घा मदभायेना । नम्रकरे वि

फलं विलंबन मसै रमोभि स्मारदनणाः ४२ ग्रासेभा

दत्त ञ्जवना दत्तन खो लेखो दत्त स्मान्तजः । योद्धाया

गी॰ टी॰
गी॰

केलिशयनमनुयातं २ मुग्धे मधुमथनमनुयातम

नुसर राधिके । घनजघनस्तनभारभरे दरमन्थरच

रणविहारं । मुखरितमणिमंजीरमुपैहि विधेहिम

रालविकारं २ शृणु रमणीयतरं तरुणीजनमोह

नमधुपविरावं । कुसुमशरासनशासनवंदिनि पि

कनिकरे भज भावं २ अनिलतरलकिसलय निक

ञ्जे सखि। ध्वांतनील निचोल चारु सुदृशं प्रत्यंग
मालिंगति ६५ काश्मीरगौर वपुषा मभिसारिकाणा
माबद्धरेख मभितो रुचिमंजरीभिः। एतत्तमाल द
ल नील तमं तमिस्रं तत्प्रेमहेम निकषो पलतां त
नोति ६६ अष्टपदी॥ विरचित चाटु वचन रचनं च
रणे रचित प्रणिपातं। संप्रति मंजुल वंजुल सीमनि

गा॰दे॰
गी॰

मय गम मृभया मवेन मावी मवलंग्य कंग्या मली
ंवल वलय क्वणितै रवबोधय हरि मपि निजग
तिलीलै ८ श्रीजयदेवभणित मधरीकृतहारमुदा
सितवामं। हरिविनिहितमनसामधितिष्ठतु कंठ
तटीमविरामं ८॥ अष्टपदी॥ श्लोक॥ सास्मानद्र
स्तनि वहानि प्रियकथा श्रंगमालिगनै॥ श्री

देणा कदेणा लना निकदेवे। देणा म्विव कर मोह
कदेखि गनि प्रनि मंच विलवे ४ स्फुरित मनेगान
देगा वशादि वरह विन रुरि परिदेभे। हकुमनेरुरहा
व विमल जल यार मनंजव जेये ५ अयिगत म
खिल सखी मिरि देनव वखरपि दनि रगासजे। वे
हि वगीन दयान्ना रव डिडिम मधि मरसमलजे ६

गा·टे·
गी·

वनमाली।गोपीपीनपयोधरमर्द्दनचंचलकरयु
गशाली।नामसमेतंकृतसंकेतंवादयतेमृदुवेणुं
बहुमनुतेननुतेतनुसंगतपवनचलितमपिरेणुं

पततिपतत्रेविचलितपत्रेशंकितभवदुपयानम्
रचयतिशयनंसचकितनयनंपश्यतितवपंथानं
मुखरमधीरंत्यजमंजीरंरिपुमिवकेलिसुलोलं-

तिंया सतिं ंस्पति सहिं समावनेमित विमा ज्ञलः।
सन्वा स्वायपति वेयने पुलकाय स्वानेदति स्वियति।
ग्रपस्खति मूर्च्छति स्यिव नमः फुंजेतिं कुजे ग्रियः ६६
ग्रहपादी॥ वनि स्वलितोरे गत मभिसारे मदन मनो
हरवेसे। निजक लितें लि नि गमन विलेवन मत्र
सतंने हदयेवें। पीव मसीरे घस्वानीरे वसति वने

ग·टे·
गी·

यातिविताने। कुरुममवचनं सत्वररचनं पूरयमधुरि
पुकामं ७ श्रीजयदेवकृतहरिसेवं भणतिपरमरम
णीयं। प्रमुदितहृदयंहरिमपिसदयंनमतसुकृत
कमनीयं ८। अष्टपदी। श्लोक। सभयचकितंविन्यस्य
न्ती·दृशौतिमिरेपथिप्रतितरुमुहुःस्थित्वामन्द
पदानिवितन्वतीकथमपिरहःप्राप्तामंगैरनंगत

चलसखिकुंजे सतिमिरपुंजे शीलयनीलनिचोले

उरसिमुरारेरुपहितहारे घनइव तरलबलाके ।

तडिदिव पीते रतिविपरीते राजसि सुकृतविपाके॥ ५

विगलितवसने परिहृतरशने घटयजघनेमपि

धाने किसलयशयने पंकजनयने निधिमिवहर्ष

निधाने ६ हरिरभिमानी रजनिरिदानी मियमपि

गा॰दे॰
गी॰

ये माधव समीपमिह नव भवदशोकदल शायन मा
रे विलस कुच कलश तरल हारे २ कुसुम चय रचि
त शुचि वास गेहे। विलस कुसुम सुकुमार देहे ३
चल मलय वन पवन सुरभि शीते। विलस रति व
लित ललित गीते ४ वितत बहु वल्लि नव पल्लव घ
ने। विलस चिरमलस पीन जघने ५ मधु मुदित

रंगिभिः स्वमविव सभग स्तनामयण न्वपैतकवार्यै
तो ७ रत्नावली नरल कांचन कांचिदाम मंजीर कं
कण मणि द्युति दीपितस्य द्वारे निकुंज निलयस्य
हरिं निरीक्ष्य व्रीडावती मथ सखी निजगाद राधां
६८ ॥ अष्टपदी ॥ मंजुतर कुंजतल केलि सदने
विलस रति रभस हसित वदने १ प्रविश रा

गा॰टे॰
गी॰

दीवरं । स्वछंदं मकरंदसुंदरगलन्मंदाकिनीमेदुरं
श्रीगोविंदपदारविंदमशुभस्कंधाय वंदामहे ६४
अत्रमिह निवसामि यान्निराथा मन्ननय मद्धवने
चानयेथाः । इतिमधुरिपुणा सखीनियुक्ता स्वय
मिदमेत्य पुनर्जगाद राधां ७० सोचितेन चिरं वहे
नय सति श्रोतोभरंतापिवः । केंदर्पैगावपान

मधुप कुल कलित रावे विलस मदन रस सरस भा

वे ६ मधुर तर पिक निकरनि नद मुखरे । विलस

दशन रुचि रुचिर शिखरे ७ विहित पद्मावती सुख

समाजे । भणति जयदेव कविराजराजे ८ सुरूप

दी ॥ श्लोक ॥ सान्द्रा नंद पुरंदरा दिदि विषद्वृंदै

रमंदादरा दानम्रै र्मुकुटेंद्र नील मणिभिः संदर्शितें

गी॰
गो॰

नयोः । इदानीं राधायाः प्रियतमसमालोकसम
ये । पपात स्वेदाम्बुप्रसर इव हर्षाश्रुनिकरः । भ
जन्त्यास्तल्पान्तं कृतकपटकण्डूति पिहित ॥
स्मितं याते गेहाद्बहिरवहितालीपरिजने । प्रिया
स्यं पश्यन्त्याः स्मरशरसमाकूतसुभगं । सलज्जा
लज्जापि व्यगमदिव दूरं मृगदृशः ॥ ७१ ॥ अष्टपदी ॥

सिद्धानि तथा संघाय विनायकं । अस्मोके नदलेकक
त्तण मिर भूदेप लनीलव । कीते दास इवोप से
वित पटे भोजे कृतः संभ्रमः ७२ सा ससाध्वससा नं
द गोविंदे लोल लोचना सिंजान मंजु मंजीरं प्रवि
वेश निवेशनं ७३ अति क्रम्या पांगे श्रवण पथप
र्यंत गमन प्रयासे नेवाक्ष्णो स्तरल तरतारं पति

गी·टी·
गी·

हरे २ श्यामल मड्ल कलेवर मंडल मधिगत गौर

दुकूले नीलनलिन मिव पीत परागा पटल भरवल

यित मूले ३ तरल दृगंचल चलन मनोहर वदन

जनित रतिरागे । स्फुटकमलोदर खेलित खंजनयु

गमिव शरदि तडागे ४ वदनकमल परिशीलन मिलि

त मिहिर सम कुंडल शोभे । स्मितरुचि कुसुम सम

राधावदन विलोकन विकसित विविध विकार वि

भंगे। जलनिधि मिव विधु मंडल दर्शन तरलित

तुंग तरंगे॥ १ हरि मेकर सं चिर मभि लषित वि।

लासे। सा दर्श गुरु हर्ष वशं वद वदन मनंग विका

से। हार ममल तर तार मुरसि दधतं परिलंब्य विदू

रे। स्फुटतर फेन कदंव करंबित मिव यमुना जल

ग·दे·
गी·

मणिभारे। प्रणमत हृदि विनिधाय हरिं सुचिरं सुकृ
तोदयसारं॥८॥ अष्टपदी॥ श्लोक॥ गतवति सखी
वृन्दे मन्दत्रपाभरनिर्भर स्मर पर वशाकूतस्फीतस्मि
तस्नपिताधराम्। सरस मनसं दृष्ट्वा दृष्ट्वा मुहुर्न
वपल्लव प्रसवशयने निक्षिप्ताक्षीमुवाच हरिः प्रि
याम्॥ किसलय शयनतले कुरु कामिनि चरण

ल्लसिताधरपलवकृतरतिलोभे ५ शशिकिरण

छुरितोदरजलधरसुंदर सकुसुम केश तिमिरो

दितविधुमंडल निर्मल मलयज तिलक निवेशे ६

विपुलपुलक भरदंतुरिते रतिकेलिकलाभिरधी

रे। मणिगणकिरणसमूह समुज्वल भूषण सुभग

शरीरे ७ श्रीजयदेव भणित विभव द्विगुणीकृत भू

गी॰टी॰
गी॰

हमिवापनयामि पयोधररोधकमुरसिजकूलं २

प्रियपरिरंभणरभसवलितमिव पुलकितमति

दुरवापे । मधुरसिजकलशे विनिवेशय शोष

यमनसिजतापे ४ अधरसुधारसमुपनय भामिनि

ति जीवय मृतमिव दासं । त्वयि विनिहितमनसं

विरहानलदग्धवपुषमविलासं ५ शशिमुखि

कमल विनिवेशं । नवपट पल्लवकॅर पराभवमिद

मरूभवन सवेशं २ क्षणमधुना नारायणमनुगत

म मनुसर राधिके । ध्रु । करकमलेन करोनि चर

णमहमागमितासि विदूरं । क्षणमुपकुरु शय

नोपरि मामिव नूपुरमनुगतिशूरं २ वदन सुधानि

धिगलित ममृत मिव रचय वचनमनुकूलं । विर

ग·टै·
गी·

नोरमरतिरसभावविनोदं ८ अष्टपदी॥ श्लोक॥
प्रत्यूहः पुलकांकुरेण निविडाश्लेषे निमेषेण च
क्रीडाकूतविलोकिते धरसुधापाने कथानर्मभिः
आनंदाधिगमेन मन्मथकलायुद्धेपि यस्मिन्नभू-
दुद्भूतः स तयोर्बभूव सुरतारंभः प्रियंभावुकः
२६ मीलदृष्टि मिलत्कपोलपुलकं सीत्कारधाराव

मुखरय मणिरशनागुणमनुगुणकंठनिनादम्-
श्रुतिपुटयुगले पिकरुतविकले शमय चिरादवसादं ६
मामति विफलरुषा विफलीकृतमवलोकितमद्
धुनेदं । मीलति लज्जितमिव नयनं तव विरम वि
सृज रतिखेदम् ७ श्रीजयदेवकवेरिदमनुपदनि
गदितमधुरिपुमोदम् । जनयतु रसिकजनेषु म

ग·टे·
गी·

क्षपितरुचिमापन दरो कामसख्यकामायतिः ॥२८॥ आ

ङ्के रतिकेलिसंकुलरणारंभे तया साहसप्राये

कान्तजयाय किंचिदुपरि प्रारंभि यत्संभ्रमानिःस्पदा

जघनस्थली शिथिलिता दोर्वल्लिरुत्कंपितं वक्षो

मीलितमक्षि पौरुषरसः स्त्रीणां कुतः सिध्यति ॥२९॥ न

स्यः पाटलपाणिजांकितमुरो निद्राकषाये दृशौ

शारदमला जलकेलिकाकुविकसद्वेना ऋयो नायरं
षसोत्काम्म पयोधरं भ्रशणविषंगात् जरंवी दयो ।
हर्षोत्कर्ष विभ्रम निःसहमनोर्थमोपयमानने ७२
दोर्भ्यां संयमितः पयोधरभरेणापीडितः पाणिजै
राविद्धो दशनैः क्षताधरपुटः श्रोणीतटेनाहतः हस्ते
नानमितः कचेधरमधुस्पंदेन संमोहितः कांतः का

गी॰टे॰
मी॰

दशानेदेन गोविंदे दर ग्रहणादी। करयडनेदन वे

दन शिशिर नेशण करेणा पयोधरे। मृगमद पत्र क

मम मनो भव मंगल कलश सहोदरे। निजगादसा

यडनेदने क्रीडति दयानेदने। दयरत्नुंवनलेविनक

जल नजलय प्रियलोचने अनि कुलगजनमंजनके

दनि नायक मोचने। नयन करंगानरंग विकासित

मुनिर्हृतो यरशोभितमा विलसितना सकलसजोर्म्हर्द
ज्ञः कोवीदामदरसगोंचलमिति प्रानन्निर्वितैदशो
देभिःकामयशौरेस्तदस्तुनमभ्यायर्मनःकीलितं ८ग्र
थकेतिनेदति थ्रोन मपि मेउने वोनयामिजगाद निशवा
धारायास्वाधीन अर्हेका दा३ इतिमनसाविनादेते
स्वनोते मायिनतोन प्रविन्नागीरायाजगाद सादर क्षि

मा.
५६

ग·टै·
गी·

ममरुचिरे चिकुरे कुरु मानद मानसजध्वजचामरे·
रतिगलिते ललिते कुसुमानि शिखण्डिशिखण्डक
डामरे ८ सरसघने जघने मम शंबरदारणवारणकन्दरे।
मणिरशनावसनाभरणानि शुभाशय वासय सुन्द
र ९ श्रीजयदेववचसि जयदे सदयं हृदयं कुरु मण्डने·
हरिचरणस्मरणामृतकृतकलिकलुषज्वरतापविखण्डने द

दमकरे कनिमंडले। मनसिज पाश विलासकरेश्व
भवेष निवेशय कुंडले ३ भ्रमर चये रचयंतमुपरिरु
चिरं सुचिरं ममसम्मुखे। जितकमले विमले परिक
ल्पय नर्मजनकमलकं मुखे ४ मृगमदरसललि
ते ललितं कुरु तिलकमलिकरजनीकरे। विहित
कलंककलं कमलानन विश्रमित श्रमशीकरे ५

ग·टे·
गी·

यनयोगायाय गायानंदे श्रैं स्मेर मुखाब्जेनोल्लसज

गतानंदाय नंदात्मजः ८५ पर्यंकीकृतनागनाय

कफणाश्रेणीमणीनां गणे संक्रांतप्रतिबिंबसंव

लनया विभ्रद्विभुप्रक्रियां । पादांभोरुहधारिवारि

धिसुतामक्ष्णां दिदृक्षुः शतैः । कायव्यूहमिवाचरं

नुपचितीभूतो हरिः पातु वः ८६ निर्यंक्रोड विलो

श्लोक। रवयजवयोः एवे विंवे ऊरुषकयोलयोर्दे
ट्यजवने कोंची भेच तजा कवरीमरे। कलयवत
यश्रेणीपाणौ पदे ऊरुनूरुषा विलि नियदिनः श्री
नःश्रीनेवरोणिनयाकरोम् दथ प्रानधील निवोल
मस्तुनस्वरःसेदीन पीनं श्रुकेवायायाम्बकिने विलो
दयरुमिमिवेर्सावी भेडले। श्रीडावेवल मेवलेन

गा·टे·
गी·

रासे हरिमिह विहित विलासं । स्मरति मनो मम कृ
त परिहासं ॥ चंद्रकचारु मयूर शिखंडक मंडल व
लयितकेशं । प्रचुर पुरंदर धनुरनुरंजित मेदुरमु
दिर सुवेशं ॥२॥ गोप कदंब नितंबवती मुखचुंबन
लंभित लोभं । बंधुजीव मधुराधर पल्लवमुल्लसि
तस्मित शोभं ॥३॥ विपुल पुलक भुजपल्लव वलयि

तमौलिनरलोाने कृस्यंवंशोद्वर । जीतिस्याबह्नता

वथानललनालदेशा सेलविनाः ध्रेमगा कंदलिनाः

स्वगुगपमधरेगाया श्वैदैवथा । सारेवोमधवद

नगादहनदेमेकटालोभंवः ८ ॥ अष्टपदी ॥

संचरदधरसुधामधुरध्वनिमुखरितमोहनवंशं

चलितदृगंचलचंचलमौलिकपोलविलोलवतंसं ।

ग· दे·
गी·

विशदकदंवतले मिलितं कलिकलुषभयं शमयं
तं ॥ मामपि किमपि तरंगदनंगदृशा मनसा रमयं
तं ७ श्रीजयदेवभणितमति सुंदर मोहन मधुरि
पुरूपं । हरिचरण स्मरणं प्रति संप्रति पुण्यवता
मनुरूपम् ॥८॥ श्लोक ॥ हस्त स्वस्त विलास
वंशमनृजु भ्रूवल्लि मद्वल्लवी वृंदोत्सा ॥

नवलव ध्वनि सहसं । करचरणोरसि मणि गण भू

षण किरण विभिन्न तमिस्रं ४ जलद पटल वल

दिंदु विनिंदक चंदन तिलक लालाटं । पीन पयो धर

परि सर मर्दन निर्दय हृदय कपाटं ५ मणि मय

मकर मनोहर कुंडल मंडित गंड मुदारं । पीत वसन

मनुगत मुनि मनुज सुरा सुर वर परिवारं ६

ग॰ टे॰
गी॰

ध्येयः केसरिणो व्यथो हृयनवो श्रेयांसि वेशीरवः ९९

यद्गांधर्व कलासु कौशलमनु ध्यानंच यद्वैष्णवं य

त् शृंगार विवेक तत्व मपियत्काव्येषु लीलायितं

तत्सर्वं जयदेव पंडित कवेः कृष्णैकतानात्मनः । सा

नंदाः परिशोधयंतु सुधियः श्रीगीत गोविंदतः

९ साध्वी माध्वीक चिंता न भवति भवतः शर्करे क

ति दंगत वीतिले मति खेदाहीगेडखाले । मामडी
ह्य बिल जिनस्मित स्रया स्रयानने कानने । गो
विंदं ब्रज सुंदरी गण वृतं पशपानि हृष्यामिव दद
श्रेनमौरन मौलि हृगिन चलन्मंदार विसेमन:
सख्या कर्षण हृषि हर्षणामरा सेवे कटेंगीदशंग ।
दण्डहानव हृयमान द्विविषडुर्वारदः खोपदाम ॥

गी·टी·
गी·

चक्रवर्त्ती श्रीवासुदेव रति केलि कथा समेतमेतं क

रोति जयदेव कविः प्रबंधं २ यदि हरि स्मरणे सरसं म

नो यदि विलास कलासु कुतूहलं । मधुर कोमलकां

त पदावलीं शृणु तदा जयदेव सरस्वतीं २ वाचः प

ल्लवयत्युमापतिधरः संदर्भ शुद्धिं गिरां ॥ जानी

ते जयदेव एव शरणः श्लाघ्यो दुरूहद्रुतेः । शृंगा

अथ राग देवशाख गीतगोविंद परिछेद मार्ग ॥

ताल। ॥ मेघैर्मेदुरमंबरं वनभुवः श्यामास्तमा

लद्रुमैर्नक्तं भीरुरयं त्वमेव तदिमं राधे गृहं प्रापय

इत्थं नंदनिदेशतश्चलितयोः प्रत्यध्वकुंजद्रुमं राधा

माधवयोर्जयंति यमुनाकूले रहःकेलयः ॥१॥ वाग्दे

वताचरित चित्रित चित्त सद्मा पद्मावती चरणचारण

ग॰ टे॰
गी॰

चक्रगरिष्ठे केशव धृत कछप रूप जय जगदीश हरे २
वसति दशन शिखरे धरणी तव लग्ना शशिनि कलं
क कलेव निमग्ना केशव धृत शूकर रूप जय जग
दीश हरे ३ तव कर कमल वरे नख मद्भुत शृंगं दलि
त हिरण्यकशिपु तनु भृंगं केशव धृत नरहरि
रूप जय जगदीश हरे ॥४॥ छलयसि विक्र

रोत्तर सत्प्रमेय रचनै राचार्य गोवर्द्धन स्पर्द्धी कोपिन
विश्रुतः श्रुतिधरो धोयीक विक्ष्मापतिः ॥४॥ ग
री रागदेवशाखा । नाला । । प्रलय पयोधिज
ले धृतवानसि वेदं विहित विहित्र चरित्र मखेदं
केशव धृतमीन शरीर जयजगदीशहरे ।१। क्षिति र
ति विपुलतरे तव तिष्ठति पृष्ठे धरणि धरणकिण

ग॰टे॰
गी॰

णीयं । केशव धृत रघुपति रूप जय जगदीश हरे ७
वहसि वपुषि विशदे वसनं जलदाभं । हल हति
भीति मिलित यमुनाभं । केशव धृत हलधर रूप
जय जगदीश हरे ८ निंदसि यज्ञविधे रहह श्रुतिजा
तं । सदय हृदय दर्शित पशुघातं । केशव धृत बु
द्ध शरीर जय जगदीश हरे ९ म्लेछनि वहनि धने

मणे बलिमद्भुतवामन पदनखनीरजनितजन
पावन केशव धृतवामनरूप जयजगदीशहर
रे ५ क्षत्रियरुधिरमये जगदपगतपापं । स्नाप
यसि पयसि शमितभवतापं । केशव धृतभृगु
पतिरूप जयजगदीशहरे ६ वितरसि दिक्षुर
णे दिग्पतिकमनीयं । दशमुखमौलिबलिं रम

गी॰टी॰
गी॰

जयते हलं कलयते कारुण्यमातन्वते । म्लेछान्मू
र्छयते दशाकृतिकृते कृष्णाय तुभ्यं नमः १२ अष्ट
पदी ॥ श्रित कमला कुच मंडल धृत कुंडल । कलि
त ललित वनमाल जय जय देव हरे १ दिनमणि
मंडल मंडन भव खंडन मुनिजन मानस हंस जय
जय देव हरे २ कालिय विषधर गंजन जन रंजन

४
५

कलयसि करवालं । धूमकेतुमिव किमपि करालं

केशव धृत कल्कि शरीर जय जगदीश हरे १० श्रीज

यदेव कवेरिदमुदितमुदारं । शृणु सुखदं शुभदं

भवसारं । केशव धृत दशविध रूप जय जगदीश ह

रे ११ वेदानुद्धरते जगन्निवहते भूगोलमुद्बिभ्रते दै

त्यं दारयते बलिं छलयते क्षत्रक्षयं कुर्वते । पौलस्त्यं

ग॰ दे॰
गी॰

धर सुंदर धृत मंदर श्रीमुखचंद्रचकोर। जयजयदेव
हरे ९ श्रीजयदेवकवेरिदं कुरुते मुदं मंगलमुज्व
लगीतं। जयजयदेवहरे ८ अष्टपदी। श्लोक। रासो
ल्लासभरेण विभ्रमभृतामाभीरवामभ्रुवामभ्यर्णे
परिरभ्य निर्भरमुरः प्रेमांधया राधया। साधुत्वद्वदनंसु
धामयमिति व्याहृत्य गीतस्तुति व्याजाडद्भटचुंबित

५

यडुकुल कमल दिनेश। जयजय देव हरे ३ मधु
मुर नरक विनाशन गरुडासन। सुर कुलकेलि
निदान जयजय देव हरे ४ अमल कमल दललोच
न भवमोचन। त्रिभुवन भवन निधान जयजय देव
हरे ५ जनक सुताकृत भूषण जित दूषण समर
शमित दशकंठ। जयजय देव हरे ६ अभिनव जल

गी·टी
गी

ि वि सृतिमाति वसमधौ मधुरो हरिः क्रीडति ८ ॥ अद्यो
त्संग वसद्भुजंगकवलक्लेशादिवेशाचलं प्रालेयप्लव
नेच्छयानुसरति श्रीखंडशैलानिलः । किंच स्निग्धरसाल
मौलिमुकुलान्यालोक्य हर्षोदया । उन्मीलन्ति कु
हूः कुहूरिति कलोत्तालाः पिकानां गिरः ९ । अष्ट
पदी ॥ चंदन चर्चित नील कलेवर पीत वसन ।

6 द

स्मितमनोहारीहरिःप्याननः अनेकनारीपरिरंभसं
भ्रमस्फुरन्मनोहारिविलासलालसं मुरारिमारा
दुपदर्शयन्त्यसौ सखी समक्षं पुनराह राधिकां
विश्वेषामनुरंजनेन जनयन्नानंदमिंदीवरश्रेणी
श्यामलकोमलैरुपनयन्नंगैरनंगोत्सवं। स्वच्छंद
व्रजसुंदरीभिरभितः प्रत्यंगमालिंगितः शृंगारः स

के मधुसूदन वदन सरोजे ३ कापि कपोलतले मिलि
तालपितुं किमपि श्रुतिमूले। चारु चुचुंब नितंब
वती दयितं पुलकैरनुकूले ४ केलिकलाकुतकेन
च काचिदमुं यमुनाजलकूले। मंजुलवंजुलकुंज
गतं विचकर्ष करेण दुकूले। करतलताल तरल
वलयावलिकलितकलस्वनवंशे। रासरसे सह

वनमाली। केलि चलन्मणि कुंडल मंडित गंड यु
ग स्मित शाली। हरि रिह मुग्ध वधू निकरे। विलासि
नि विलसति केलिपरे। पीन पयोधर भार भरेण ह
रिं परिरभ्य सरागं। गोप वधूरन गायति काचिदुदं
चित पंचम रागं २ कापि विलास विलोल विलोच
न खेलन जनित मनोजं। ध्यायति मुग्ध वधूरधि

गा-टे·
गी

हरौ विगलित निजोत्कर्षा दीर्षा वशेन गतान्यतः
क्वचिदपि लता कुंजे गुंजन मधुव्रत मंडली मुखर
शिखरे लीना दीना प्युवाच रहः सखीं ९ कंसारिरपि
संसार वासना बद्ध शृंखलां राधामाधाय हृदये
तत्याज व्रज सुंदरी ११ इतस्ततस्ता मनुसृत्य रा
धिका मनंग बाण व्रण खिन्न मानसः कृतानुता

४

सनृत्यपरा हरिणा युवती प्रशशंसे ६ श्लिष्यति का
मपि चुंबति कामपि रमयति कामपि रामां पश्य
ति सस्मित चारु परा मपरा मनुगच्छति वामां ७
श्री जयदेव भणित मिदमद्भुत केशव केलिरह
स्यं। वृंदावन विपिने चरितं वितनोतु शुभानि
यशस्यं ।८। विहरति वने राधा साधारण प्रणये

गा॰टे॰ कुटिलभ्रुकोपभरेण शोणपद्ममिवोपरिभ्रमता

गी॰ कुलेभ्रमरेण तामहं हृदिसंगतामनिशंभृशंरमया

मि किंवनेनुसरामि तामिह किंवृथा विलयामि ४

तन्विखिन्न मसूयया हृदयन्तवाकलयामि तन्न

वेद्मिकुत्रगतासि तेन तेनुनयामि ५ दृश्यसे पु

रतो गतागतमेव किंविदधासि। किंपुरेव ससं

णः सकलिंदनंदनीतटांतकुंजे विषसाद माधवः
॥२॥ अष्टपदी ॥ मामियं चलिता विलोक्य वृतं वधू-
निचयेन । सापराधतया मयापि न वारितातिभये-
न १ हरि हरि हतादरतया गता सा कुपितेव । किंक-
रिष्यति किं वदिष्यति सा चिरं विरहेण॥ किं धनेन जने-
न किं मम किंजीवेन गृहेण॥२ चिंतयामि तदाननं

गो॰ कूलेरहःकेलयः ॥१॥ वाग्देवता चरित

गो॰ चित्रित चित्त सद्मा। पद्मावती चरण चार

ण चक्रवर्ती। श्री वासुदेव रति केलि क

था समेतं। एतं करोति जयदेव कविः

प्रबंधम् ॥२॥ यदि हरि स्मरणे सरसं मनो।

यदि विलास कलासु कुतूहलं। मधुर

ॐ अष्टपगीत गोविंद परिछेद माहा। रागल

२सै २मा२ग २मा२प २म २प २म २ग

लित। ताल। तीना३। मेघैर्मे डर मम्बर् बन

२रे २ग २मा २ग २रे २सै २मा२प २नि

भुवः श्यामा स्तमाल द्रुमै। नक्तम्भीरु

२सै २नि २सै २रे २नि २प २म २ग २रे २सै २सै २मा

रयं त्वमेव तदिदं राधे गृहं प्रापय। इत्थं

२प २म २प २नि २प २नि २सै २नि २प २म २ग

नंद निदेश तश्चलि तयोः प्रत्यध्व कुंज

२रे २सै २प २म २प २म २ग २रे २ग

द्रुमै। राधा माधव योर्जयंति यमुना।

गी
गो

कविक्ष्मापतिः। धातुसीगानी ललित। नाल

। प्रलय पयोधि जले धृत वानसि वेदं।

विहित वरित्र मखेदं। केशव धृत मीन शरी

र जय जगदीश हरे ।१। क्षिति रति विपु

ल तरे तव तिष्ठति पृष्ठे। धरणि धरण

किण चक्र गरिष्ठे। केशव धृत कच्छप रू

कोमल कान्त पदावलीं । शृणु तदा जय
देव सरस्वतीं ॥ ३ ॥ वाचः पल्लव यत्युमा प
तिधरः । संदर्भ शुद्धिं गिरां । जानीते जय
देव एव शरणः श्लाघ्यो दुरुहद्रुते । शृंगा
रोत्तर सत्प्रमेय रचनै राचार्य गोवर्द्धन ।
स्पर्द्धी कोपिन विश्रुतः श्रुतिधरो धोयी



गी
गो

प । जय जगदीश हरे ।४। छलयसि विक्र
णे बलि मद्भुत वामन । पदनख नीर ज
नितजन पावन । केशव धृत वामन रूप ।
जय जगदीश हरे ।५। क्षत्रिय रुधिर मये
जग दपगत पापं । स्नपयसि शमित भ
वतापं । केशव धृत भृगुपति रूप । जय

प जय जगदेशहरे ।२। वसति दशन शि

खरे धरणी तवलग्ना । शशिनि कलंक

कलेव निमग्ना । केशव धृत शूकर रूप

जय जग देशहरे ।३। तवकर कमल

वरे नख मद्भुत श्रृंगे । दलित हिरण्य क

शिपु तनु भृंगे । केशव धृत नरहरि रू

गी
गो

जय जगदीश हरे ।८। निंदसि यज्ञ विधेर
हह श्रुति जाते । सदय हृदय दर्शित पशु
घातम् । केशव धृत बुद्ध शरीर । जय जग
दीश हरे ।९। म्लेच्छ निवह निधने कलयसि
करवाले । धूम्र केतु मिव किमपि कराले ।
केशव धृत कल्कि शरीर । जय जगदीश

जगदीश हरे ।६। वितरसि दिक्षु रणे दि
ग्पति कमनीयं । दशमुख मौलि बलिं
रमणीयं । केशव धृत रघुपति रूप । ज
य जगदीश हरे ।७। वहसि वपुषि विशदे
वसनं जलदाभं । हल हति भीति मिलि
त यमुनाभं । केशव धृत हलधर रूप ।

गी मातन्वते। म्लेछा न्मूर्छ यते दशा कृति कृते
गो कृष्णाय तुभ्यं नमः।५। रागिनी। ललित।
ताल । श्रित कमला कुच मंडल धृत कुं
डल कलित ललित वनमाल। जय जय दे
व हरे।१। ध्रु॰। दिन मणि मंडल भव खंडन
मुनिजन मानस हंस। जय जय देव हरे।२।

हरे।१०। श्री जय देव कवेरिद मुदित मुदारं।
शृणु सुखदं शुभदं भवसारं। केशव धृत
दशविद रूप। जय जगदीश हरे।११। वेदा
नुद्धरते जगन्ति वहते भूगोल मुद्बिभ्रते ।
दैत्यं दारयते बलिं छलयते क्षत्रक्षयं कुर्व
ते। पौलस्त्यं जयते हलं कलयते कारुण्य

गी
गो

क सुता कृत भूषण जित दूषण समर शमि
त दशकंठ। जय जय देव हरे।६। अभिनव जल
धर सुंदर धृत मंदिर श्री मुख चंद चकोर। जय
जय देव हरे।७। श्री जय देव कवेरिदं कुरुते मु
दं मंगल मुज्वल गीतं। जय जय देव हरे।८।
रासोल्लास भरेण विभ्रम भृता माभीर वाम

कालिय विषधर गंजन जन रंजन यदु
कुल कमल दिनेश। जय जय देव हरे। ३।
मधु मुर नरक विनाशन गरुडा सन सुर कु
ल केलि निदान। जय जय देव हरे। ४। अम
ल कमल दल लोचन भव मोचन त्रिभुवन
भुवन निधान। जय जय देव हरे। ५। जन



गी नगाह राधिका ।४। विश्वेषामनुरंजनेन जनय
गो ज्ञानंदमिंदीवर । श्रेणी श्यामलकोमलैरुपन
यन्नंगैरनंगोत्सवं । स्वछन्दं व्रजसुंदरीभिरभितः
प्रत्यंगमालिंगितः । शृंगारः सखि मूर्तिमा
निव मधौ मुग्धो हरिः क्रीडति । ॥ । नित्योत्सं
गवसद्भुजंगकवलक्लेशादिवेशाचलं । प्राले

7

भ्रुवा। मभ्यर्णं परिरभ्य निर्भरं मुरः प्रेमांध
या राधया। साधु त्वद्वदनं सुधामयमिति व्या
हृत्य गीतस्तुति। व्याजादुद्भट चुम्बित स्मित
मनो हारी हरिः पातु वः॥४॥ अनेक नारी परि
रंभ संभ्रम स्फुरन्मनो हारि विलास लालसं।
मुरारि मारा दुपदर्शयन्त्यसौ सखी समक्षं पु

चलन्मणि कुंडल मंडित गंड युगस्मित शा
ली॥१॥ हरिरिह मुग्ध वधू निकरे विलासिनि
विलसति केलि परे॥ ध्रु ॥ पीन पयो धर
भार भरेण हरिं परिरभ्य सरागं। गोप वधू
रनु गायति काचिदुदंचित पंचमरागं॥२॥
कपि विलास विलोल विलोचन खेलन

य ञ्जवने व्रजयात्र सरति श्रीविंडशैला नि
लः। किंच स्निग्ध रसाल मौलि मुकुला
न्यालोक्य हर्षोदया। उन्मीलंति कुहू कुहू
रिति कलोत्तालाः पिकानां गिरः। ९। रा
गिनी ललित। ताल । चंदन चर्चित नी
ल कलेवर पीतवसन वनमाली। केलि

गी
गो

विचकर्ष करेण डुकूले ।७। करतल ताल
तरल वलयावलि कलित कल स्वन वंशे।
रासरसे सह नृत्य परा हरिणा युवती प्रश
शंसे ।८। श्लिष्यति कामपि चुम्बति कामपि
रमयति कामपि रामां। पश्यति सस्मित चा
रु परा मपरा मनुगच्छति वामा ।९। श्री जय

जनित मनोजे । ध्यायति मुग्ध वधू रधिकं म
धुसूदन वदन सरोजम् ।३। कापि कपोल
तले मिलिताल पितुंकिमपि श्रुति मूले ।
चारु चुचुंबनि तंबवती दयितं पुलकै रनु कू
ले ।४। केलि कला कुतु केनच काचिदमुं
यमुना जल कूले । मंजुल वंजुल कुंज गतं

री
मे

पुवाच रहः सखीं ।१० केसरि रचितसेसार वास
ना वेष स्मेरविलो रागमायाय हृदये नमाज ब्रज
सुंदरीः ।११। इनस्तनतस्ता मनु सख्य राधिका म
नेग वाण ब्रज विन्न मानसः । क्रन्नात्र तापः
सकलिट नटनी नराग्र कुंजे निषसाद माधवः
।१२। रागिनी ललित । ताल । मालिये च

देव भणित मिद मद्भुत केशव केलि रहस्य
म । वृंदावन विपिने चरितं वितनोतु शुभा
नि यशस्यम ।२८। विहरति वने राधा साधा
रण प्रणये हरौ विगलित निजोत्कर्षा दीर्षा
वशेन गता न्यतः क्वचिदपि लता कुंजे गुंज
न्मधुव्रत मंडली मुखर शिखरे लीना दीना

गी
गो

शोणपद्म मिवो परि भ्रमताकुलं भ्रमणे
न ।३। तामहं हृदि संगता मनिशं भृशं र
मयामि । किंवनेनु सारा मितामिह किं वृ
था विलयामि ।४। तन्विखिन्न मसूयया हृ
दयंतवा कलयामि । तन्न वेद्मि कुतोगता
सि न तेन तेनुनयामि ।५। दृश्यसे पुरतो

लिता विलोक्य वृतं वधू निचयेन सा सापराध

तया मयान निवारिता तिभयेन ।१। हरि हरि

हतादरतया गता सा कुपितेन । ध्रु । किं क

रिष्यति किं वदिष्यति सा चिरं विरहेण । किं ध

नेन जनेन किं मम किं जीवेन गृहेण ।२।

चिंतयामि तदानने कुटिल भ्रू कोप भरेण ।

गी
गो

णौमा कुरु चूत सायक ममुं मा चाप मारो प
य । क्रीडा निर्जित विश्व मूर्छित जना घातेन
किं पौरुषं । तस्याएव मृगी दृशो मनसिज
प्रेंखत्कटाक्षा शुगा । श्रेणी जर्जरितं मना
गपि मनो नाद्यापि संधुक्षते ॥१२॥ हृदि बिस
लता हारो नायं भुजंगमनायकः कुवलय

गता रात मेव कश्चिद्ददासि। किम्पुरे व

शभेश्रमे परिरंभणं नददासि। त्वमपता

मपरं कदापि नवे हशे नकरोमि। देहि

सुदरि दर्शनं मम मन्मथेन दुनोमि। वर्णि

ते जय देव केन हरेरिदं प्रवणेन। किंदु वि

ल्व समुद्र संभव रोहिनी रमणेन। ८। पा

गी　व विरहे वनमाली । ध्रु॰ । दहति शिशिर
गो　मयूखे मरणमनुकरोति । पतति मदन
विशिखे विलपति विकलतरोति । २ । ध्वन
ति मधुपसमूहे श्रवणमपि ददाति । मन
सि वलितविरहे निशिरुजमुपयाति । ३ ।
वसति विपिनविताने त्यजति ललितधा

दल श्रेणी कंटे न सा गरलद्युतिः मलयज

रजो नेदं भस्म प्रिया रहितेमयि प्रहरन ह

र भ्रांत्या नंग क्रुधा किमु धावसि।२४ रागि

नी ललित। ताल । वहति मलय समीरे

मदन मुप निधाय। स्फुटति कुसुम निकरे

विरहि हृदय दलनाय।।। सखि सीदति त

गी
गो

जयन्नपि नवै वालाप मंडावली । भूयस्त्वत्कु
चकुंभ निर्भरपरी रंभामृतं वांछति ।५। वि
किरति मुहुः श्वासा नाशाः पुरो मुहुरी क्ष
ते । प्रविशति मुहुः कुंजे [illegible] गुंजन्मुहुर्ब
हुताम्यति । रचयति मुहुः शय्यामर्या
कुले मुहुरीक्षते । मदनकदनक्लान्तः

म । लुठति धरणि शयने बहु विलपति तव
नाम ।४। भणति कविजय देवे विरह विल
सितेन । मनसि रभस विभवे हरि रुदयतु
सुकृतेन ।५। पूर्व्वं यत्र समं त्वया रतिपते
रासादिताः सिद्धये । तस्मिन्नेव निकुंज मन्म
थमहातीर्थे पुनर्माधवः । ध्यायंस्त्वा मनिशं

गी. गो.

ऊला ऊल गलद्धम्मिल्ल मुल्लासितं । भ्रूवल्ली
कमली कदर्शित भुजा मूलार्द्ध दृष्टस्तनम् ।
गोपी नानिभृत निरीक्ष्य गमिता कोदृक्षि
रे चिन्तय । न्नन्तर्मुग्ध मनोहरं हरतवः क्ले
शन्नवः केशवः ।२। यमुना तीरवा नीर निकुं
जे मन्दमास्थितम् । प्राह प्रेम भरोद्भ्रान्त मा

कान्ते प्रियस्तव वर्तते ।। ११ ।। नातिस्पर्श सु
खानि नेच तरला स्निग्धा दृशो विभ्रमा । स्त
द्धाम्बुज सौरभं स्तव तथा स्यंदीगिरो वक्रि
मा । सा विंबाधरमाधुरीति विषया संगेपि
चेन्मानसं । तस्या लग्नसमाधि हंत विरह
व्याधिः कथम्वर्तते ।। १२ ।। साकूतस्मितमा

गी
गो

कोमल मलयस मीरे। मधु कर निकर
करम्बित कोकिल कूजित कुंज कुटीरे।
॥ विहरति हरि रिह सरस वसन्ते नृत्यति
युवति जनेन समे सखि विरहि जनस्य दु
रंते। ध्रु॰। उन्मद मदन मनोरथ पथिक
वधू जन जनित विलापे। अलि कुल संकुल

धवे राधिका साखी ।।८।। वसन्ते वासन्ती कु
सुम सुकुमारै रवयवै । भ्रमन्ती कांतारे बहु
विहित कृष्णानु शरणाम् । अमंदे कंदर्प ज्व
रजनित चिंता कुल तया । बलद्बाधं राधा
सरस मिद मूचे सहचरी । राग ।। ललित ।
ताल । ललित लवंगलता परि शीलन

गी
गो

टल पटल कृतस्मर तूणविलासे ।४। विग
लित लज्जित जगदव लोकन तरुण करु
ण कृतहासे । विरहिनि कृंतन कुंत मुखा
कृति केतकि दंतुरिताशे ।५। माधविका
परिमल ललितेनव मालति यात सुगंधौ ।
मुनि मनसा मपि मोहन कारणि तरुणा

गी
गो

ण चक्रवर्ती श्रीवासु देवरति केलि कथा समेत मेतं
करोति जयदेव कविः प्रबंधम् ।२। यदिहरि स्मरणे सर
से मनो यदिविलास कलासु कुतूहले । मधुर को
मल कांत पदावली शृणु तदा जयदेव सरस्वती
।३। वाचः पल्लव यत्युमा पतिधरः संदर्भ शुद्धिंगि
रां जानीते जयदेव एव शरणः श्लाघ्यो दुरूहद्रुतेः शृं

ॐ अथ गीतगोविंदमाह रागिनी मधुमाधवी ताल
ॐ मेघैर्मेदुरमम्बरं वनभुवः श्यामास्तमाल द्रुमै
र्नक्तम्भीरु रयं त्वमेव तदिमं राधे गृहं प्रापय इत्थंनं
द निदेशतश्चलितयोः प्रत्यध्वकुंज द्रुमं राधामाध
वयोर्जयंति यमुना कूले रहः केलयः ॥१॥ वाग्देव
ता चरित चित्रित चित्त सद्मा पद्मावती चरण चार

गी
गो

धरिते केशव धृत कछप रूप जय जगदेशहरे ।।२।।
वसति दशन शिखरे धरणी तवलग्ना शशिनिक
लं कलंकलेव निमग्ना केशव धृत शूकर रूप जय
जग देशहरे ।३। तवकर कमल वरे नख मद्भुत
शृंगे। दलित हिरण्य कशिपु तनु भृंगे। केशव धृत
नरहरि रूप, जय जग दीशहरे ।४। छलयसि वि

गारोत्तर सत्प्रमेय रचनै राचार्य गोवर्द्धन स्पर्द्धीको
पिन विश्रुतः श्रुतिधरो धोयी कविक्ष्मापतिः ४
रागिनी मधुमाधवी ताल । प्रलय पयोधिज
ले धृतवानसि वेदं विहित वहित्र चरित्र मखेदं केशव
धृत मीन शरीर जय जगदीश हरे ।१। क्षितिरतिवि
पुल तरे तव तिष्ठति पृष्ठे धरणि धरण किण चक्र

गी
गो

णीयं केशव धृत रघुपति रूप जय जगदीशहरे ।७
वहसि वपुषि विशदे वसनं जलदाभं हल हति भी
ति मिलित यमुनाभं केशव धृत हलधर रूप जय
जगदीशहरे ।८। निंदसि यज्ञ विधेरहह श्रुति जा
तं सदय हृदय दर्शित पशु घातम् केशव धृत
बुद्ध शरीर जय जगदीशहरे ॥ ९ ॥

क्रमणे वलि मद्भुत वामन। पदनख नीर जनित
न पावन केशव धृत वामन रूप जय जगदीश
हरे ॥ ५ ॥ क्षत्रिय रुधिर मये जग दप गत पापं
स्नपयसि शमित भव तापं केशव धृत भृगुप।
ति रूप जय जगदीश हरे ॥ ६ ॥ वितरसि दिक्षु र
णे दिक्पति कमनीयं दशमुख मौलि वलिं रम

गी
गो

यते वलिं छलयते क्षत्रक्षयं कुर्वते पौलस्त्यं जय
ते हलं कलयते कारुण्य मातन्वते म्लेछान्मूर्छ
यते दशाकृतिकृते कृष्णाय तुभ्यंनमः ५ रागि
नी मधुमाधवी ताल । श्रित कमला कुच मंड
ल धृत कुंडल कलित ललित वनमाल जय जय
देव हरे ॥ ध्रु० । दिनमणि मंडल भव खं ।

ल्लेछ निवह निधने कलयसि करवालं धूमकेत

मिव किमपि करालं केशव धृत कल्कि शरीर

जय जगदीश हरे ।१०। श्री जय देव कवेरिदमु

दित मुदारं श्रृणु सुखदं शुभदं भवसारं केशव

धृत दश विध रूप जय जगदीश हरे ।११। वेदा

नुद्धरते जगन्निवहते भूगोल मुद्बिभ्रते दैत्यं दार

गी
गो

।५। जनक सुता कृत भूषण जित दूषण समर शमि
त दशकंठ जय जय देव हरे ।६। अभिनव जलधर सुंद
र धृत मंदर श्री मुख चंद्र चकोर जय जय देव हरे
।७। श्री जयदेव कवेरिदं कुरुते मुदं मंगल मुज्वल
गीतं जय जय देव हरे ।८। रासोल्लास भरेण विभ्र
म भृता माभीर वामभ्रुवा मभ्यर्णे परिरभ्य निर्भर मुरः

उन मुनि जन मानस हंस जय जय देव हरे ।२।
कालिय विषधर गंजन जन रंजन यदु कुल क
मल दिनेश जय जय देवहरे ।३। मधु मुर नरक
विनाशन गरुडा सन सुर कुल केलि निदान ज
य जय देवहरे ।४ अमल कमल दल लोचन भव
मोचन त्रिभुवन भवन निधान जय जय देवहरे

गी
गो

मलकोमलैरुपनयन्नंगैरनंगोत्सवं स्वच्छंदंव्रज
सुंदरीभिरभितः प्रत्यंगमालिंगितः शृंगारः सखि
मूर्त्तिमानिव मधौ मुग्धो हरिः क्रीडति ।११। नित्यो
त्संग वसद्भुजंग कवल क्लेशादिवेशाचले प्रालेय
प्लवनेच्छयानुसरति श्रीखंडशैलानिलः किंच स्नि
ग्धरसालमौलि मुकुलान्यालोक्य हर्षोदयादुन्मीलंति

प्रेमांधया राधया साधुत्वद्वदनं सुधामय मिति व्याहृ
त्य गीतस्तुति व्याजादुद्भट चुंबितस्स्मित मनोहारी
हरिः पातु वः ।९। अनेक नारी परिरंभ संभ्रम स्फुर
न्मनोहारि विलास लालसं मुरारि मारा दुपद
र्शयंत्यसौ सखी समक्षं पुनराह राधिकां ।१०। वि
श्वेषामनुरंजनेन जनयन्नानंदमिंदीवरश्रेणीश्यामा

गी·
गो·

गोप वधूरनु गायति काचिदुदंचित पंचमरागे ।२।
कापि विलास विलोल विलोचन खेलन जनितम
नोजं ध्यायति मुग्ध वधू रधिकं मधुसूदन वदन स
रोजम् ।३। कापि कपोल तले मिलिताल पि
तुंकि मपि श्रुति मूले चारु चचुंवनि तंबवती ।
दयितं पुलकै रनुकूले ॥ ४ ॥ केलि ।

ऊहूः ऊहूरिति कलोत्तालाः पिकानां गिरः । ९ ।

रागिनी मधुमाधवीताल । चंदन चर्चित नील

कलेवर पीतवसन वनमाली केलि चलन्मणि कुं

डल मंडित गंड युग स्मित शाली ।।। हरि रिह मु

ग्ध वधू निकरे विलासिनि विलसति केलि परे ।।।।

ध्रु। पीन पयो धर भार भरेण हरिं परि रभ्य सरागं

गी
गो

ति सस्मित चारु परामपरा मनु गच्छति वामा
म्॥ ७॥ श्री जयदेव भणित मिद मद्भुत के
शव केलि रहस्यम्। वृंदावन विपिने चरितं वि
तनोतु शुभानि यशस्यम्॥ ८॥ विहरति
वने राधा साधारण प्रणये हरौ विगलित।
निजोत्कर्षा दीर्षा वशेन गतान्यतः।

कला कुन केनच काचिदमुं यमुना जल कूले
मंजुल वंजुल कुंज गतं विचकर्ष करेण दुकू
ले ॥ ५ ॥ करतल ताल तरल वलया वलि क
लित कल स्वन वंशे । रास रसे सह नृत्य परा
हरिणा युवती प्रशशंसे । ६ । श्लिष्यति कामपि
चुंवति कामपि रमयति कामपि रामांपश्य

गी
गो

न्न कुंजे निषसाद माधवः ॥ २ ॥ रागिनी मध्य
माधवी नाल ॥ मामियं चलिता विलोक्य
हृतं वधू निचयेन सा पराध तया मयान नि
वारिता ति भयेन । १ । हरि हरि हता द
रया गता सा कुपितेन ॥ ध्रु ॥ किं करि ।
ष्यति किंवदिष्यति सा चिरं विरहेण किं ।

कवि रपि लता केजे गे जन्म धवन मेडली मुव
र शितवे लोना शीना मुवाव रहः सावी । ९ ।
केसागे रपि संसार वासना वेप शेवलोराया मा
याप हृदये नगाज व्रज संदरीः ॥ ॥ ॥ रनस्तन
स्ता मत्र हरव राधिका मानेग वाए व्रज लिब
मानसः कृनात्र नापः सकलिंदनन्दनी नटा

गी
गो

तन्न वेद्मि कुतो गतासि न तेन तेऽनुनयामि ।
५ । दृश्यसे पुरतो गतागत मेव किम्विदधा
सि किम्पुरे व ससंभ्रमे परिरंभणं न ददासि
क्षम्यता मपरं कदापि तवे दृशं नकरोमि
देहि सुंदरि दर्शनं मम मन्मथेन दुनोमि व
र्णितं जय देव केन हरेरिदं प्रवणेन किंदु वि

धनेन जनेन किं मम किं सुखेन गृहेण ।२।
चिन्तयामि तदाननं कुटिल भ्रूकोप भरेण शोण
पद्म मिवो परि भ्रमता कुलं भ्रमरेण ३। तामहं
हृदि संगता मनिशं भृशं रमया मि किंवनेनु
सारा मितामिह किं वृथा विलयामि ।४। त
न्विखिन्न मसूयया हृदयंतवा कल यामि ।

गी
गो

मनायकः कुवलय दल श्रेणी कंठेन सा गर
ल द्युतिः मलयज रजो नेदं भस्म प्रिया रहिते
मयि प्रहरन हर भ्रांत्या नंग क्रुधा किमु धाव
सि ॥ २४ ॥ रागिनी मधुमाधवी ताल वह।
ति मलय समीरे मदन मुपनिधाय स्फुटति
कुसुम निकरे विरहि हृदय दलनाय ॥ १ ॥

ल समुद्र संभव रोहिनी रमणेन ।८। पाणौमा

कुरु चूत सायक ममुं मा चाप मारो पय क्रीड ।

निर्जित विश्व मूर्छित जना घातेन किं पौरुषं त

स्याएव मृगी दृशो मनसिज प्रेङ्खत्कटाक्षा शुग

श्रेणी जर्जरितं मना गपि मनो नाद्यापि संधुक्ष

ते ॥१२॥ हृदि विला सता हारो नायं भुजंग

गी
गो

धरणिशयने बहु विलपति तव नाम ।४। भ
णति कविजयदेवे विरहिविलसितेन मनसि
रभसविभवे हरिरुदयतु सुकृतेन ।५। पूर्वं
यत्र समन्त्वया रतिपते रासादिताः सिद्ध
यस्तस्मिन्नेव निकुंज मन्मथ महातीर्थे पुनर्मा
धवः ध्यायंस्त्वा मनिशं जपन्नपि तवैवाला

सखि सीदति तव विरहे वनमाली ॥ १ ॥ दह
ति शिशिर मयूखे मरण मनु करोति पतति मद
न विशिखे विलपति विकल तरोति ॥ २ ॥ ध्वन
ति मधुप समूहे श्रवण मपि दधाति मनसि व
लित विरहे निशि रुज मुप याति ॥ ३ ॥ वसति
विपिन विताने त्यजति ललित धाम लुठति ।

गी
गो

च तरला स्निग्धा दृशो विभ्रमा स्तद्वक्राम्बुज सौर
भं स च सुधा स्यंदीगिरो वक्रिमा स बिंबा धर माधु
र्यमिति विषया संगेपि चेन्मानसं तस्यां लग्न समा
धि हंत विरह व्याधिः कथं वर्त्तते ॥१॥ साकूतस्मि
तमाकुला कुल गलद्धम्मिल मुल्लासितं भ्रूवल्ली
कमलीकदर्शित भुजा मूलार्द्ध दृष्टस्तनम् गोपी

य मेत्य वली भूयस्तस्व कुंभ निर्भरपरीरंभाम
ते वांछति ।१० विकिरति मुहुः श्वासा नाशाः
पुरो मुहुरी क्षते प्रवि शति मुहुः कुंजे गुंजे गुंज
न्मुहुर्बहुताम्यति । रचयति मुहुः शय्यापर्या ।
कुले मुहुरीक्षते मदन कदन क्लान्तः कान्ते प्रि
यस्तव वर्तते ॥ ११ ॥ तानिस्पर्श सुखानि ते

गी
गो

कंदर्प ज्वर जनित चिंता कुल तया बलद्बाधां रा
धां सरस मिद मूचे सहचरी रागिनी मधुमाधवीता
ल ॥ ललित लवंगलता परि शीलन कोम
ल मलयस मीरे ॥ मधु कर निकर करम्बित
कोकिल कूजित कुंज कुटीरे १ ॥ विहरति
हरि रिह सरस वसन्ते नृत्य ॥

नाभिभ्रन निरीक्ष्य गमिना कोलाब्धिरं विन्दय ञ

नर्तुगय मनो ह्लगे ह्लनवः क्लेशाम्बवः केशवः

२॥ यमुना तीरवा नीर निकुंजे मन्दमास्थितम्

प्राह प्रेम भरोद्भ्रान्त माधवं राधिका सखी ४

वसन्ते वासन्ती कुसुम सुकुमारै रव यवै भ्रमन्ती

कांतारे बहु विहित कृष्णानु सरणाम् प्रेमेदं

जाले। मदन महीपति कनक देउ सचिके सर
कुसुम विकासे। मिलन सिली शुख पाइल प
टल कनक्सर रुण विलासे।४। विगलित लंगि
न जगदव लोकन तरुण करुण कनहासे वि
रहित केनन कें भुवाकनि केनाकि देवनि
नासे।५। मापविका परिमललिनेनव।

ति युवति जनेन समं सखि विरहि जनस्य दुरंते

ध्रु॰ ॥ उन्मद मदन मनोरथ पथिक वधू जन ज

नित विलापे । अलि कुल संकुल कुसुम समूह नि

रा कुल बकुल कलापे ॥ २ ॥ मृगमद सौरभ रभ

स वशंवद नव दल माल तमाले युवजन हृद

य विदारण मनसिज नख रुचि किंशुक ।

गी
गो

तु गत मदन विकारे ॥८॥ दर विदलित मल्ली व
ल्लि वंचत्पराग प्रकटित पट वासै र्वासयन्कान।
नानि ॥ इहहि दहति चेतः केतकी गंधबंधुः प्रस
र दसम बाण प्राण वद्गंधवाहः ॥२॥ उन्मीलन्मधु
गंधलुब्ध मधुप व्याधूत चूतांकुर क्रीडत्कोकिलका
कली कलकलै रुद्गीर्ण कर्ण ज्वराः नी ।

मालति याति सुगंधौ । मुनि मनसा मपि मोहन
कारणि तरुण कारण बंधौ ।८। स्फुरदति मुक्त
लता परिरंभण मुकुलित पुलकित हूते वृंदाव
न विपिने परि सर परि गत यमुना जल पूते ।
श्री जय देव भणिते मिद मुदयति हरि चरण ।
स्मृति सारं । सरस वसंत समय वर्णन म ।

गी
गो

यति । ३३ । रागिनी मधुमाधवी ताल ।। निंद
ति चंदन मिंदु करण मनुविंदति खेद मधीरंया
ल निलय मिलनेन गरल मिव कलयति मलय
समीरं ।।। माधव सा विरहे तवदीना मनसि
ज विशिखभया दिव भावनया त्वयि लीना ।
ध्रु॰ । अविरलनि पतित मदन श ।

यंते पथिकैः कथंकथ मपि ध्याना वधान क्षण
प्राप्त प्राण समा समा गम रसोल्लासै रमी वास
राः ।२२। उरु लोक स्तोक स्तव कन वकाशोक
लतिका विकाशः का सारो पवन पवनोयं व्य
थयति अपि भ्राम्यद्भृंगी रणित रमणीयान मुकु
ल प्रसूति श्चूतानां सखि शिखरिणीयं सुखय

गी
गो

द विपुलतर देन दलन गलिता मरनयाने ।४। वि
लिखित रहसि कुरंगम देन भवंतम सम शर ।
भूतं प्रण मति मकर मधो विनि धाय करेच श
रं नव चूतं ।५। प्रति पद मिद मपि निग दति
माधव तव चरणे पतिताहं । त्वयि विमुखे मयि
स पदि सुधा निधि रपि तनुते तनुदाहम् ९

रादिव भवदव नाय विशाले। स्वहृदय मर्म्मणि
वर्म्म करोति सजल नलिनी दल जाले ।२। कु
सुम विशिख शरतल्प मनल्प विलास कलाक
मनीयं। व्रत मिव तव परि रंभ सुखाय करोति
कुसुम शयनीयं ।३। वहति च गलित विलोच
न जलधर मानन कमल मुदारं विधु मिव विक

गी
गो

दावदहन ज्वाला कलापायते । सापित्वद्विरहेण
हन्त हरिणी रूपायते हाकथं कंदर्पोपि यमायते
विरचयन् शार्दूल विक्रीडितं । २४ । रागिनी मधु
माधवी ताल ॥ स्तन विनि हित मपि हार मु
दारं सा मनुते कृश तनु रिव भारं राधिका विरहे
तव केशव । ध्रु । सरस मसृण मपि मल

ध्यान लयेनपुरः परिकल्प्य भवेन्त मतीव दुरापे

विलपति हसति विषीदति रोदिति मुंचति तापे

७॥ श्री जय देव भणित मिद मधिके यदि मनसा

नटनीये। हरि विरहा कुल वलव युवति सखी

वचने पटनीये।८। आवासो विपिनायते प्रिय

सखी मालापि जालायते। तापोपि श्वसितेन

गी
गो

कलेव ५ सजति न पाणि तलेन कपोले । बाल
शिशन मिव साय मलोले ।६। हरि रिति हरि रि
ति जपति सकामम् । विरह विहित मरणे व नि
कामम् ७ श्री जय देव भणित मिति गीतम् ।
सुख यतु केशव पद मुपनीतम् ।८। स्मरातुरा
दैवत वैद्य हृद्य त्वदंग संगा मृत मात्र साध्याम्

यज पंके पश्यति विष मिव वपुषि सशंकम्

।२। श्वसित पवन मनुपम परिणाहं । मदन द

हन मिव दहति सदाहम् ।३। दिशि दिशि किर

ति सजल कण जालम् । नयन नलिन मि

व विगलितनाले ।४। नयन विषय मपि कि

शलयतल्पम् । कलयति विहित हुताशन

गी॰
गो॰

ज्वर संज्वरा वरतनो राश्चर्य मस्माश्चिरम् चेतश्चं
दन चंद्रमः कमलिनी चिंतासु संताम्यति किंतु
क्लांति वसेन शीतलतरम् त्वामेक मेव प्रियम्
ध्यायंती रहसिस्थिता कथ मपि क्षीणा क्षणं
प्राणिति । २८ । क्षणमपि विरहः पुरा न सेहे
नयन निमीलन खिन्नया यया ते श्वसि ।

विद्रुम बाणांकुरवेन गणा शुपेंदवत्रा दपि दा

हतोस्मि । २५ । सारोमो चलि सौत्कारोनि विल

पत्सकम्पने नासगति प्यापसद्भ्रमति प्रमील

ति पतत्सुयाति मूर्छंल्यापि पताकाप्त नजरेव

रत्नश्रीवेत्र किन्नेरमान् स्वैवैघ प्रतिम प्रसी

दति ततसपको सग्या हलकः ॥ २६ ॥ केदपे

गी गो

गंतुमशक्तां चिरमनुरक्तां लतागृहे दृष्ट्वा त

च्चरितं गोविंदे मनसिजमंदे सखी प्राह ।३०।

अंगेष्वाभरणं करोति बहुशः पत्रेऽपि संचारिणि

प्राप्तं त्वां परिशंकते वितनुते शय्यां चिरं ध्या

यति । इत्याकल्पविकल्पतल्परचनासंकल्प

लीलाशतव्यासक्तापि विना त्वया वरत न ।

ति कथमसौ रसाल शाखांचिर विरहेण विलो
क्य पुष्पितामसो । २८ । यथा मुग्ध मुखार विंदम
धुप त्रैलोक्य मौलस्थली । नेपथ्योचित नीर
न्न मवनी भागवकार्णेनकः । स्वकेद वजसे
दरी जन मन स्तोक प्रदोषश्रियम कंस धंसन प
मकेन रचन स्तोदेवकी नंदनः ॥ २९ अथतो

गी
गो

सुरमथनि निवेदनम् ।१। नाथ हरे सीदति राधा
वासगृहे । ध्रु॰ । त्वदभि शरण रभसेन वलंती
पतति पदानि कियंति चलंती ।२। विहित ।
विशद विष किश लय वलया । जीवति परमिह
तव रति कलया ।३। मुहुरव लोकित मंडनली
ला मधुरिपु रहमिति भवन शीला ।४। त्वरि

नु नैषा निशंगे थति ।१०। विपुल पुल क
पालिः स्फीतसीत्कार मेनर्ज्जनि तजिडिम ।
का कुव्याकुले व्याहरंती । तव कि तव विधाया
मंदकंदर्प चिंता रस जल निधि मग्ना ध्यान लग्ना
मृगाक्षी ।११। रागिनी मधुमाधवी ताल ॥
पश्यति दिशि दिशि रहसि भवंतम तदधर म

गी
गो

किं विश्राम्यसि कृष्णभोगि भवने भांडीर भूमी
रुहे । भ्रातर्यासि न दृष्टि गोचर मितः सानन्द नं
दास्पदम् । राधाया वचनन्तद ध्वग मुखान्नंदां
ति के गोपतो गोविंदस्य जयंति सायम तिथि :
प्राशस्त्य गर्भा गिरः ॥ ३ ॥ अत्रांतरे च कुलश
कुल वर्त्म पात संजात पातक इव स्फु ।

त मुपैति नकथ मभि सारं । हरि रिति वदति स

खी मनुवारं ।५। श्लिष्यति चुंबति जलधर कल्पं ।

हरि रुप गत इति तिमिर मनल्पं ।६। भवति

विलंबिनि विगलित लज्जा विलपति रोदिति

वासक सज्जा ।७। श्री जयदेव कवेरिद मुदि

ते । रसिक जनं तनुतामपि मुदितम् ॥ ८ ॥

गो·
गो·

तनोति मनोः भुवः सुहृदये हृदये मदन व्यथा
म् ।३९। मनो भवा नंदन चंदनानिल प्रसीदरे दक्षि
ण मुंच वामताम् ॥ क्षणं जगत् प्राण विधा
य माधवे पुरोमम प्राण हरो भविष्यसि ॥
३० ॥ बाणै विधेहि मलया निल पंच बा
ण प्राणान् गृहाण नगृहं पुनरा ।

टलांछन श्रीः। वृंदावनांतर मदीपय दंशुजा
लैर्दिक संदरी वदन चंदन विंदु रिंदुः ॥ ३४ ॥ प्र
सरति शशधर बिंबे विहित विलंबेच माधवे
विधुरा विरचित विविध विलापंसा परितापम
चकारोच्चैः ॥ ३५ ॥ विरह पांडु मुरारि मुखांबु
ज द्युति रियंति रयंन्नपि वेदनाम विधुरतीव ।

गी॰
गो॰

नाय निशि गमन मपि शीलिते । तेन मम हृ
दय मिद मसम शर कीलिते ।२। मम मरण मे
व वरमति वितथ केतना किमिह विषहामि
विरहानल मचेतना ।३। मा महह विधुरय
ति मधुर मधु यामिनी ॥ कापि हरि मनु भ
वति कृत सुकृत कामिनी ।४। अहह ।

श्रयिष्ये । किंते कृतेन भगिनि त्वमया त्वंगै

रंगानि सिंच मम शाम्यतु देहदाहः ॥ २८ ॥ रा

गिनी मधुमाधवी ताल ॥ कथित समयेपि

हरि रहह न ययौ वने मम विफल मिदं मम

ल रूप मपि यौवनं ॥ १ ॥ यामि हे क मिह शर

णं सखी जन वचन वंचिता ॥ ध्रु ॥ यदनु गम

गो· देव कवि भारती । वसत हृदि शुवनि रिव को
गो· मल कलावती । ८ । त्वामप्राप्य मयि स्वयंवर
प रे त्वीरे दनी रोदरे शेके स्वेदरे काल हृदटम
पिबन् सृफो मृडानी पतिः इसे ध्रुवं कथामि
रम मनसो विहिप्य वदो वले रागाया स्नान
कोरको परि मिलतेजो हरिः पातुवः ३९ ।

कलयामि वलयादि मणि भूषणे । हरि विरह
दहन वहनेन बहुदूषणे ।५। कुसुम सुकुमार
तनु मतनु शर लीलया । स्रगपि हृदि हंति मा
मति विषम शीलया ॥ ६ ॥ अह मिह निवसा
मि न गणित वन वेतसा । स्मरति मधुसूदनो
मा मपि न चेतसा ।७। हरि चरण शरण जय

गी
गो

को विशोक माना रमिते कयापि जनार्द्दने दृष्ट
दे न्नरहु । ५ । रागिनी मधुमाधवीताल । स्मर
सम रोचित विरचित वेषा गलित कुसुम दर वि
लु लित केशा । १ । कापि मधुरिपुणा विलसति
युवति रधिक गुणा । ध्रु । हरि परि रंभण वलि
त विकारा कुच कलशो परि तरलित हारा २

तत् किं कामपि कामिनी मभिसृतः किंवाक
लाकेलिभि र्बद्धो बन्धुभि रंध कारिणि वनाभ्यर्णे
किमुद्भ्राम्यति कान्तः क्लान्त मना मना गपि
पथि प्रस्थातुमे वाक्षमः संकेती कृत मंजु वं
जुललता कुंजेपि यन्नागतः । ५ ॥ अथा गता
माधव मंतरेण सखी मियं वीक्ष्य विषाद मू

गी
गो

गे।९। श्रमजल कण भर सुभग शरीरा। परि
पतित तोरसि रति रण धीरा।८। श्री जय देव भ
णित हरि रमितम। कलि कलुषं जनयतु परि
शमितम।८। रागिनी मधुमाधवी ताल ॥
समुदित मदने रमणी वदने चुंबन चलिता धरे
मृग मद तिलकं लिखति सपुलकं मृग मिव र

विचल दलक ललिता ननचंद्रा । तद धर पान
रभस कृत तंद्रा ।३। चंचल कुंडल ललित कपो
ला । मुखरित रशन जघन गति लोला ॥४॥
दयित विलोकित लज्जित हसिता । बहुविध
कूजित रति रस रसिता ।५। विपुल पुलक पृ
थुवे पथुभंगा । श्वसित निमीलित विकसदनंगे

गी
गो

भूषिते ।३। जिन विस शकले मृदुभुज युगले
करतल नलिनी दले । मरकत वलये मधुक
र निचये वितरति हिम शीतले ।४। रति गृह
जघने विपुला पघने मनसिज कनकासने म
णिमय रशने तोरण हसने विकरति कृतवा
सने ।५। चरण विमलये कमला निलये न

जनी करे ।।१।। रमते यमुना पुलिनवने विजय
मुरारि रधुना ।ध्रु॰। घनचय रुचिरे रचयति चिकु
रे तरलित तरुणानने कुरुवक कुसुमं चापला
सुखमं रति पतिमृग कानने ।।२।। घटयति सु
घने कुच युग गगने मृगमद रुचि रुषिते। म
णिसर ममलम् तारक पटलम् नखपद शशि

गी
गो

नृप जय देवके ।८। रागिनी मधुमाधवी ताल
अनिल तरल कुवलय नयनेन तपति न सा कि
सलय शयनेन ।१। सखि या रमिता वनमा
लिना ।ध्रु। विकसित सरसि जल लित मु
खेन । स्फुटति न सा मनसिज विशिखेन २
अमृत मधुर तर मृदु वचनेन ज्वलित न ।

रवमणि गण रंजिते । वहिरिव वरणे पावकभ
रणे जनयति हृदियोजिते ।७। रमयति सुभृ
शं कामपि सुदृशं खलहलधर सोदरे किमफल
मवसं चिरमिह विरसं वद सखि विटपोदरे ।८
इहरस भणने कृतहरि गुणने मधुरिपु पदसेव
के । कलियुग चरितं न वसतु दुरितं कवि

स्त्र मति करुणेन ।७। श्री जयदेवभणित व
चनेन । प्रविशतु हरि रपि हृदय मनेन ।८।१६।
नायातः सखि निर्दयो यदि शठ स्त्वन्दूति ।
किं दूयसे । स्वच्छंद स्वहुवल्लभः सरमते किं
तत्र ते दूषणं । पश्यात्य प्रिय संगमाय दयित
स्या कृष्य माणे गुणै रुत्कंठार्ति भरा ।

सा मलयज पवनेन ।३। स्थल जल रुह रुचि
कर चरणेन । लटति नसा हिमकर किरणेन
४ । सजल जलद समुदय रुचिरेण । दहतिन
सा हृदि विरह भरेण ।५। कनक निकष रुचि
शुचि वसनेन । श्वसितिन सा परिजन हसिनेन
।६। सकल भुवन जनवर तरुणेन वहतिन सा

गी
गो

ध्रु॰। प्रथम समा गम लज्जितया पटु चाटु
शतै रनु कूले। मृदु मधुरस्मित भाषितया
शिथिली कृत जघन दुकूले।२। किसलय
शयन निवेशितया चिर मुरसि ममैव शया
ने कृतपरि रंभण चुंबनया परिरभ्य कृताधर
पाने।३। अलस निमीलित लोचनया पुलकाव

दिव स्फुट दिदंचेतनः स्वयं यास्यति ।४२ रागि

नी मधुमाधवीताल । निभृत निकुंज गृहं

गतया निशि रहसि निलीय वसंते चकित वि

लोकित सकल दिशारति रभस वशेन हसंतं

।१। सखि हे केशि मदन मुदारम । रमय मया

सह मदन मनोरथ भावितया सविकारं ।

गी
गो

कच ग्रह चुंबन दाने ।९। रति सुख समय रसा
ल सया दर मुकुलित वदन सरोजे निसह निप
तित तनुलतया मधुसूदन मुदित मनोजे ७ श्री
जय देव भणित मिदमति शय मधु रिपु निधुवन
शीले । सुखमुत्कंठित राधिकया कथितवितनोत
सलीले ८ हरि आकुल गोकुला वनवशा दुहूनगो

लि ललित कपोले । श्रमजल शकल कलेव
र यावर मदन महाधृति लोले । कोकिल कल
रव कूजितयाजित मनसिज तंत्र विचारे श्लथ
कुसुमाकुल कुंतलया नख लिखित घनस्तन
भारे ।५। चरण रणित मणिनूपुरया परि पूरि
त सुरत वितानं । मुखर विशृंखल मेखलया स

गी॰ गी॰ रे। ४४ रागिनी मधुमाधवीताल । रजनिज

नित गुरु जागर राग कषायित मलसनिमेषव

हति नयन मनु राग मिवस्फुट मुदित रसाभिनि

वेशं ।।१। याहि माधव याहि केशव मावदकैत

व वादं ता मनु सर सरसीरुह लोचन या तव ह

रति विषादम् । ध्रु॰ । कज्जल मलिन ।

वर्द्धने विभ्रद्दलव सेदरोमि रणिका नेदम्बिरंड्डे
विनः दर्पणेव नरवीना धरनटी सिंहर मुद्रो
किनो वाञ्छगौ पतनो स्तनो नभवनः श्रेयांसि
केशद्विषः धत्र अथ कथमपि यामिनी विनी
य स्मर शर जर्जरितापि सा प्रभाते । अनुनय वच
नं वदंत मग्रे प्रणत मपि प्रिय माह साभ्यसू

गी॰
गो॰

यतीव वहि मेदन द्रुम नव किसलय परिवारे
।४। दशन पदेम दधर गत मम जनयति चे
तसि खेदं । कथयति कथ मपु नापि मया सह
नव वकुलेन दमेदं ।५। वहि रिवमलिन तरेन
व हृल मनोपि भविष्यति नूनम् कथ मथ ।
वंचयसे जन मनु गतम मम शरन ।

विलोचन चुंबन विरचित नीलिम रूपं। दशन

वसन मरुणं नव कृस्न ननोति ननो रनुरूपं

२ वपु रनु हरति नवस्मर संगर खरन खरक्ष

त रेखं। मरकत शकल कलित कलधौत।

लि पेरिव रतिजय लेखं २ चरण कमल गल

दलक्त क सिक्त मिदंनव हृदय मुदारं। दर्शि

गी
गो

पादालक्तछुरित मरुणछाय हृदयं ममाद्य प्र
ख्यात प्रणय भर भंगेन कितव त्वदा लोकः।
शोकादपि किमपि लज्जां जनयति।४५। पद्मा
पयो धर तटी परि रंभ लग्न काश्मीर मुद्रित मुरोम
धु सूदनस्य। व्यक्तानुराग मिव खेलद नंग खेद स्वे
दां बुपूर मनु पूर यतु प्रियं वः।४६। अथांतरे मसृण

वर् नूनम् ६ भ्रमति भवानबला कवलाय व
नेषु किमत्र विचित्रं। प्रथयति पूतनिकैव वधू
वध निर्दय बाल चरित्रं ७ श्रीजय देव भणितर
ति वंचित खण्डित युवति विलापं। शृणुत सुधा
मधुरं विबुधा विबुधालय तोपि दुरापं ८। १७
तवेदं पश्यन्त्याः प्रसरदनुरागं बहिरिव प्रिया

गी॰
गो॰

रंभे विधेहि विधेयताम् । ४८ । सुगो विधेहि म
यि निर्दय दन्त देश दोर्वल्लि बंध निबिड स्तन ।
पीडनानि चंडित्व मेव मुदमंचय पंचवाण वे
डाल कोंड दलनादसवः प्रयांतु । ४९ अथ
यति स्वया मोने नलिख पंचय पंचमेन कणिमधुंला
पैस्तापं विनोदय दृष्टिभिः सुमुखि विमुखी भावतात

रोषवशा मसी मनिः श्वास निःसह मुखी सुमु
खी मुपेत्य सव्रीड मीक्षित सखी वदनां दिनान्ते
सानंद गद्गद पदं हरि रित्युवाच ४७ पदि हर कृता
नेके शेकान्नया सनने स्वनसन जवनया क्का
न्ते स्वान्ते पतानव कामिनि विशालि विनतोर
मो यन्मो नकोपिमसांतरं प्रणयिनि परीरंभा

गी
गो

नानलोदहति मम मानसं देहि मुख कमल मधुपा
ने ध्रु०। सत्यमेवासि यदि सुदति मयि कोपिनी
देहि खर नयन शर घातं। घटय भुज बंधनं जन
य रदखंडनं येन वा भवति सुखजातं २ त्वमसि म
म भूषणं त्वमसि मम जीवनं त्वमसि मम भव जलधि
रत्नम भवतु भवतीह मयि सततमनुरोधिनी तत्र

हिमंचन मुंचमो स्वय मनिशय स्त्रिगय सुभगे
प्रियोय सुपस्थित: ५॰ रागिनी मधुमाधवी ता
ल वदसि यदि किंचिदपि दन्त रुचि कौमुदी हर
ति दरति मिर मति घोरं । स्फुर दधर सीधवे त
व वदन चंद्रमा रोचयति लोचन चकोरं । प्रिये
चारुशीले मुंचमपि मानमनिदानं । सपदि मद

गी० गो०

कमल गंजन मम हृदय रंजन जनित रतिरंग
परभागं । भण मसृण वाणि करवाणि चर
ण द्वयं सरसलसद लक्तक रागं ।८। स्मर गर
ल खंडनं मम शिरसि मंडनं देहि पद पल्लवमु
दारं । ज्वलति मयि दारुणो मदन कदनानलो हर
तु तदुपाहित विकारं ॥ इति चटुल चाटु चारु मुरवैरिणो

मम हृदय मति यत्ने ३ नीलनलि नाभ मपि त
न्वितव लोचने धार यति कोक नद रूपे। कुसु
म शरवाण भावेन यदिरंजयसि कृस्न मिदमेत
दनुरूपे ४ स्फुरतु कुच कुंभयो रुपरि मणि मंज
री रंजयतु तव हृदय देशं। रसनु रसनापि तवघ
न जघन मंडले घोषयतु मन्मथ निदेशं ५ स्थल

गी॰
गो॰

विश्लेषसुषमा गुपः ५१ दृशौ तव मदालसे वदनमिन्दु
मत्यन्वितं गतिर्जनमनोरमा विजितरम्भमूरुद्वये
रतिस्तव कलावती रुचिरचित्रलेखे भ्रुवावहो
विबुधयौवतं वहसि तन्वि पृथ्वीगता ५२ भ्रूपल्लवं धनु
रपाङ्गतरङ्गितानि बाणा गुणः श्रवणपालिरिति स्म
रेण तस्यामनङ्गजयजङ्गमदेवताया मस्त्राणि निर्जित

राधिका मधि वचन जाते। जयति पद्मावती र
मण जय देव कवि भारती भणित मति शातं ८
१९ वेषक श्रुति वोधको य मधुरः स्निग्धा मधक
छविः गंडे चंडिव कान्ति नील नलिन श्री मो
चने लोचने नासाभ्येति तिल प्रसून पदवीं कुं
दाभ देति प्रिये प्रायस्त्वन्मुख सेवया विजयते

गी
गो

डवेण समुद्धृतः श्रीमद्गोपालक थतिः ५५ तामथ
मन्मथखिन्नां रतिरसभिन्नां विषादसम्पन्नां । अनुचिं
तितहरिचरितां कलहान्तरितामुवाच रहः सखी
५६ । स्निग्धे यत्परुषासि यत्प्रणमति स्तब्धासि
यद्रागिणि द्वेषस्थासि यदुन्मुखे विमुखतां या
तासि तस्मिन् प्रिये । तद्युक्तं विपरीतकारिणि

जगंति किमर्पितानि ।५३। भ्रूचापे निहितः क

टाक्ष विशिखो निर्मातु मर्म व्यथां श्यामात्मा कु

टिलः करोतु कबरी भारोपि मारोद्यमे । मोहंताव

द यंच तन्वि तनुता बिंबाधरो रागवान् सद्वृत्तः

स्तन मंडलस्तव कथं प्राणै र्मम क्रीडति ५८ ।

मानिनी मान विध्वं सदक्षो जयति सांप्रतं म

गी
गो

ऊरुषे ऊव कलशे ।२। कतिन कथित मिद मत्र
पद मचिरे । मापरि हर हरि मनि शय हचिरे
किमिति विषीदसि रे दिषि विकला । विहसति
युवति सभा तव विकला ।४। जनयसि मन।
सि किमिति गुरु खेदम् ॥ शृणु मम वचन
मनी हित भेदम् ।५। इति हयघात वद

४३

तव श्री खंड चर्चा विषं शीतांशुस्तपनो हिमं हुत

वहः क्रीडा मुदो यातनाः ५८ ॥ रागिनी मधुमाध

वी ताल ॥ हरि रभि सरति वहति मृड पवने

किम पर मधिक सुखे सखि भवने ॥ १ ॥ मा

धवे मा कुरु मानिनि मानमये । ध्रु । ताल

फला दपि गुरु मति सरसे । किमु विफली ।

गी
गो

मानिलो विषमिव सुधारश्मि यस्मिन् दुनोति म
नो गते । हृदय मदये तस्मिन् नेव पुनर्बलनेव ।
लान् कुवलय दृशा वामः कामो निकाम निरं
कुशः ।५८। गणयति गुणग्रामे भ्रामे भ्रमा द
पि नेहते वहति च परि तोषं दोषं विमुंचति दूर
तः युवतिषु वलत्तृष्णो कृष्णो विहारिणि मो

त्तबद्ध मधुरे। किमिति करोषि हृदय मति वि
धुरे।६। सजल नलिन दल शीतल शयने
हरि मव लोकय सफलय नयने।७। श्री ज
य देव भणित मति ललिते। सुखय यतु रसि
क जने हरि चरिते।८।९। श्रीराधिकाजी
के वचन निजसखि सखी समझा सोयं सखी वहि

गी
गो

सुचिरमनुनयेन प्रीणयित्वा मृगाक्षीं गतवति कृ
तवेषे केशवे कुंजशय्यां रचित रुचिर भूषां दृष्टि
मोषे प्रदोषे स्फुरति निरवसादां कापि राधां ज
गाद ॥ ६१ ॥ सा मां द्रक्ष्यति वक्ष्यति प्रिय कथां प
त्यंग मालिंगनैः प्रीतिं यास्यति रंस्यते सखि
समागतेति चिन्ताकुलः । स त्वां पश्यति वेपते

४५

विना पुनरपि मनो वामं कामं करोति करोमि
किं ५९ प्रीतिंवस्तनोतु नो हरिः कुवलया पीडेन
सार्द्धं रणे। राधा पीन पयोधर स्मरण कृत्
कुम्भेन संभेदवान्। यत्र स्विद्यति मीलति क्ष
ण मथ क्षिप्ते द्विपे तत्क्षणात्। कंसस्यालम
भूज्जित मिति व्या मोह कोलाहलः ।६०। स

गी· गो·

रम्योसि सारवनाः १३ आश्लेषा दत्तु छुंबना दत्तु नाके

लेखा दत्तु स्तानज प्रेहोथा दत्तु से अमा दत्तु रता रे

भा दत्तु प्रीतयोः । अन्यासें गतयो अमान् मिलि

तयोः सेभाषणैर्ज्ञानतो दंपत्यो रिह कोन कोन

नमसि ब्रीडा विमिश्रो रसः ।१४। अन्यो निद्रि

पदे जने श्रवणयो स्तापिक्च गुच्छावली मूर्ध्निश्यना

पुलकयन्ता नेंदति स्विपति प्रसुङ्कवति मू
र्छति स्विरतमः पुंजे निकंजे प्रियः ॥१९॥ व
हामे न समे समय मधुना निरगं शुरले गते
गोविंदस्य मनो रथे नच समे प्राज्ञे नमः सो
दृतो कोकानां करुण स्वनेन सहशो दीर्घो
मदभ्यर्थना तन्मन्ये विफले विलंबन मसौ

गी
गो

क्षेमहेमनिकषोपलतां तनोति ।८८। रागिनी म
धुमाधवी ताल विरचित चाटु वचन रचने चरणे र
चित प्रणिपातं संकेते मंजुलसी मनि केलि शय
न मनुयातं । मुग्धे मधु मथन मनुगत मनु सर राधि
के ॥ध्रु॥ घन जघन स्तन भार भरे दर मन्थर चर
ण विहारं । मुखरित मणिमंजीर मुपैहि विधेहि

म सरोज दाम कुचयोः कस्तूरिका पत्रके ।
धूर्त्तानामभि सार सत्वरहृदां विष्वङ्‌निकुंजे
सखिध्वान्तन्नील निचोल चारु सुदृशां प्रत्यंग
मालिंगति ।१५। काश्मीर गौर वपुषा मभि
सारिकाणा माबद्ध रेख मभितो रुचि मंज
रीभि । एतत्तमाल दल नील तमं तमिस्रंत

गी
गो

हृचित हरि परिरंभे। एक मनोहर हार विमल ज
ल धार मंजुकुच कुंभे।५। अधिगत मखिल सखी
भिरिदं तववपु रपि रति रण सज्जे। चंडि रणित
रशना रव डिंडिम मभि सर सरस मलज्जे ६ स्म
र शर सुभ शुवेन सखी ममलंब्य करेण सलीले।
चल वलय क्वणितै रवबोधय हरि मपि निजगतिशी

मराल विकारे ।२। स्फुरत रमणीय तरंनफणी
जन मोहन मधुरिपु रावे कुसुम शरासन शास
न वेदिनि पिक निकरे भजभावे ।३। अनिल
तरल किसलय निकरेण करेण लतानि कु
रंबे प्रेरण मिव कर भोरु करोति गति प्रति
बंध विलंबे ४ स्फुरित मनंग तरंग वशा दिव

गी
गो

प्रसङ्गन्काति मूर्छति स्मिरतमः पुंजे निकुंजे प्रियः
।९९। रागिनी मधुमाधवी ताल । रति सुख सा
रेगत मभि सारे मदन मनो हर वेषं । नकुरु नि
ते विनि गमन विलंबन मनु सरतं हृदयेशं ।
धीर समीरे यमुना तीरे वसति वने वन माली
गोपी पीन पयोधर मर्दन चंचल करयुगशाली

ले ।७। श्री जय देव भणित मधुरी कृत हारमु

दा सितवामे । हरि विनि हित मनसा मधि तिष्ठ

तु कंठ तटी मविरामे ।८। ।८। सामोद्दद्याति व

द्याति प्रियकथां अत्येगमालिंगनैः प्रीतिंयास

ति रेस्यते सखिसमागम्येति चिंताकुलः । स

त्वाम्म श्यति वेपते पुलकयत्यानंदति स्विद्यति

गी
गो

ति किर पुंजे शीलय नील निचोले ।४। उरसिमु
रारे उपहितहारे घन इव तरल बलाके तडिदिव
पीते रति विपरीते राजसि सुकृत विपाके ।५।
विगलित वसने परिहृत रशने घटय जघन म
पिधाने । किसलय शयने पंकज नयने निधि मि
व हर्ष निधाने ।६। हरि रभि मानी रजनि रिदानी

ध्रु०। नाम समेतं कृत संकेतं वादयते मृदु वे
णुं बहु मनुते ननु ते तनु संगत पवन चलितम
पि रेणुं ।२। पतति पतत्रे विचलति पत्रे शंकित
भवदुपयानं । रचयति शयनं सचकित नय
नं पश्यति तव पन्थानं ।३। मुखर मधीरं त्यज मं
जीरं रिपुमिव केलि सुलोलं चल सखि कुंजं स

गी० त्वंनी कण मपि रहः प्राह्ना मेगे नरेग नरेगिभिः

गी० समवि सभगः सत्नाम्यप त्नुपैव सलाम्यैना ।

म् । १७ । हारावली तरल कांचन कांचिदाम मं

जीर कंकण मणि द्युति दीपि तस्य द्वारे निकुंज

निलयस्य हरिं निरीक्ष्य ब्रीडावतीम् अथ स

खी निजगाद राधाम् । १८ । रागिनी ।

मिय मपियाति विरामे । कुरु मम वचनं सत्वर
रचने पूरय मधु रिपुकामे ।८। श्री जय देव कृ
त हरि सेवे भणति परम रमणीयं । प्रमुदित
हृदयं हरिमपि सदयं नमत सुकृत कमनीयं
।९।११। सस्मय चकितं विन्यस्तंनी दृशौ तिमि
र पश्यिव्रति कृत मुकुः स्थित्वा मंद पदानि विन

गी·
गो·

पवन सुरभि शीते । विलस रति वलित ललि
तगीते ।४। विजन वधू वलितव पल्लवशयने ।
विलस चिर मलस पीन जघने ।५। मधुमुदित
मधुप कुल कलित रावे विलस मदन रससभा
वे ।६। मधुर तरपिकनिकरनि नद मुखरे । विल
स दशन रुचि रुचिर शिखरे ।७। विहितपद्मा

मधुमाधवी ताल । मंजुतर कुंजतल केलि स
दने विलस रति रभस हसित वदने ।१। प्रविश
राधे माधव समीप मिह ।ध्रु। नव भवद शोक
दल शयन सारे । विलस कुच कलश तरल
हारे ।२। कुसुम चय रचित शुचि वास गेहे वि
लस कुसुम सुकुमार देहे ।३। चल मलय वन

गी॰
गो॰

सामियाहिराधा मनुनय मद्वचने चा नयेथाः
। इति मधु रिपुणा सखी नियुक्ता स्वय मिद मे
त्य पुन र्जगाद राधां ।१॥ लोचिनेन विरेवहन्न
यमति श्रान्तो भृशं तापितः कंदर्पेणच पान्त
सिक्ताति स्मृथा मेवाय विबा यरं । असो कन्तद
ले कुरु नाण सिहृ भ्र लेप लक्ष्मी लवक्षीते

वनी सव समाजे । भणति जयदेव कवि राज
राजे ।८। सान्द्रा नन्दपुरन्दरादिदि विषद्वृन्दैरम
दा दारा दानम्रै मुंकुटेन्द्र नील मणिभिः संद
र्शितेन्दीवरम् । स्वच्छन्द मकरन्द सुंदर गल
न् मन्दा किनी मे दुरं श्री गोविंद पदारविंदम
शुभ स्कंदाय वन्दामहे ।१९। ग्रह सिह निव

गी॰ दोबु भ्रमर यिव हृषो सुनिकरः ।७३। भजन् त्वा
गो॰ स्तल्यान्ते कृत कपट कंडू निविहित स्मिते या

ते गेहा द्वहिरव हिताली परिजने । प्रिया संप

श्येत्याः स्मरशर समा कृत सुभगे सलज्जाया

लज्जा व्यगम दिवहरं मृगदृशः ।७४। ताभि

नी मधुमाधवी ताल । राग वदन वि ।

दास इवोप सेवित पदां भोजे ऊतः संभ्रमः।१।
सामसाध्वस सानंद गोविंदे लोल लोचना सि
ञान मंज मंजीरं प्रविवेश निवेशनम।२।अनि
ऊम्मा पांगे श्रवणपथ पर्यन्त गमन प्रयासे नै
वाहणो स्तरल तर तारयानि नयोः। तदानी
राधायाः प्रिय तम समालोक समये पपात स्वे

गी
गो

चित मिव यमुना जल पूरे ।२। श्यामल मृडुल
कलेवर मंडल मधिगत गौर दुकूले नील न
लिन मिव पीत पराग पटल भर वलयित मू
ले ।३। तरल दृगंचल चलन मनोहर वदन ज
नित रति रागे । स्फुट कमलोदर खेलित खंज
न युग मिव शरदित डागे ।४। वदन क

लोचन विकसित विविध विकार विभंगे । जल
निधिमिव विधु मंडल दर्शन तरलित तुंग तरंगे
।५। हरि मे कर संचिर मभिल षित विलासे सा
द दर्श गुरु हर्ष वश म्वद वदन मनंग विकासे
॥ ध्रु० ॥ हार ममल तरतार मुरसि दधतं परि
लंब्य विहरम् ॥ स्फुट तर फेन कदम्ब करं

केलि कलाभिरधीरे। मणि गण किरण समूह
समुज्वल भूषण सुभग शरीरे। ७। श्रीजयदेव भ
णित विभव द्विगुणी कृत भूषण भारे। प्रणम
त हृदि विनिधाय हरिं सुचिरं सुकृतोदय सारे
। ८। २१। गतवति सखी वृन्दे मंद त्रपा भर नि
र्भर स्मर पर वशा कूतस्फीत स्मित स्नपि।

मल परि शीलन मिलित मिहिर सम कुंडल ।
शोभे । स्मित रुचि कुसुम समुल्लसिताधरप ।
ल्लव कृत रति लोभम् ।५। शशि किरण छु
रितो दरजलधर सुंदरस कुसुम केशे तिमि
रोदित विधु मंडल निर्मल मलयज तिलक
निवेशे ।६। विपुल पुलक भर दंतुरित रति

गी
गो

नायण मनुगत मनुसर राधिके ।१। कर कम
लेन करोमि चरण मह्मा गमिता सि विदूरे क्ष
ण मुप कुरु शयनो परिमा मिव नूपुर मनुग
ति शूरं ।२। वदन सुधानिधि गलित ममृत
मिव रचय वचन मनुकूलं । विरह मिवापन
यामि पयोधर रोधक मुरसि दुकूलं ।३।

नाधरम। सरसमलसं दृष्ट्वा राधां मुहुर्नव पल
व प्रसव शयने निक्षिप्ताक्षी मुवाच हरिः प्रि
या ।७५। रागिनी मधुमाधवी ताल ॥ कि
शलय शयन तले कुरु कामिनि चरण क
मल विनिवेशं । तव पद पलव वैरि पराभव
मिदमनु भवतु सुवेशं ।।। क्षणमधुना ना

गी
गो

रशना गुण मञ्जु गुण केटविनादम् । क्षरित गुग
लेपिकरुन मम शमय चिरादव सादम् ।८। मा
मनि विफल रुषा विफली कृत मव लोकित
मधुनेदम् । मीलति लज्जित मिवनयनं तव विर
मविसृज रतिखेदम् ।९। श्री जय देव कवेरिदम
तु पद लिना दिन मधु रिपु मोदम् ॥ जय ।

प्रिय परिरंभण रभसवलित मिव पुलकित म

ति दुरवापम् । मधुरसि कुच कलशे विनिवेशय

शोषय मनसि नितापम् । ४ । अधर सुधारस मुप

नय भामिनि जीवय मृतमिव दासम् । त्वयि

विनिहितमनसं विरहानल दग्ध वपुष म ।

विलासम् । ५ । शशि मुखि मुखरय मणि



गी
गो

न कपोल मूलके सीत्कार धारा वशा इव्यक्ता
कुलकेलि काकु विकसद्दशना शुधौ ताधरं श्वासो
त्कम्प पयोधरं भृशपरिष्वंगात्‌ कुरंगीदृशो
हर्षोत्‌ कर्ष विमुक्त निःसहतनो धन्यो धय।
त्याननम्‌ ॥ ७७ ॥ दोर्भ्यां संयमितः पयो धर
भरे ण पीडितः पाणिजै राविद्धो द ।

नव रसिक जनेषु मनोरम रति रसभाव वि
नोदम ।८।२२। प्रत्यूहः पुलकांकुरेणनिविडा
श्लेषैर्नि मेषेण चक्रीडा कूत विलोकितेधरसु
धापानेकथानर्मभिः । आनंदाधिगमेन म
न्मथकला युद्धेपि यस्मिन्नभू दुद्भूतः सतयोर्ब
भूव सुरतः रंभाः प्रियंभावुकः ७ मीलदृष्टिमिल

गी॰
गो॰

लिलत्कम्पिते वन्दोन् मीलिते मदि पीहषः रसः
स्रोणोजनः सिप्यति ।७९। नस्पाः पाटल पाणिजो
किनशुरो निश्रा कषायेहशो । निर्ह्नो पवर्णो भणि
मा विललिता स्वस्लस्जो मूर्हजाः । कोचीदामद
रस्लथ्यो चल मिति ग्रानतिरवानैर्हशो रेभिः कामश
रैसल्द्दुनमभ्रूमत्तमीनः कीलिते ८॰ आलोलाः केश

शनैः लज्जापरप्तुदः श्रोणी तटे नाहृतः हस्ते
ना नमितः कचेयर मधु स्पंदेन सम्मोहितः
कान्तः कामपिलक्ष्मि मायनदहो कामस्य वामा
गतिः ७८ वामोकेरतिकेलिसंकुलरणारंभेतया
साहसप्रायंकान्तजयायकिंडुपरिप्रारंभि यत्सं
चि
भ्रमान् निस्पंदाजघनस्थली शिथिलिता दोर्व

गी

गो

स्वाधीनभर्तृका ८२ इति मनसा निगदन्तं सुरता
न्ते सा नितान्तखिन्नाङ्गी राधा जगाद सादरमिद
मानन्देन गोविन्दम् ।८३। रागिनी मधुमाधवी
ताल कुरु यदुनन्दन चन्दन शिशिर तरेण करे
ण पयोधरे । मृगमद पत्र कमत्र मनोभव मंग
ल कलश सहोदरे । निजगाद सा यदु नन्दने क्री

पाश स्खलित मलकैः स्वेदलोलौ कपोलौ द
ष्टा बिंबाधर श्रीः कुच कलश रुचा हारिता हार
यष्टिः कांची कांचिद्गताशा स्तन जघन पदं पा
णिना छाद्य सद्यः पश्यन्ती सत्रपं मान्तदपि वि
लुलित स्रग्धरेयं धिनोति ।८। अथ कांते रतिश्रां
तमपि मंडन वांछया निजगाद निराबाधा राधा

गी
गो

खे जित कमले विमले परिकल्पय नर्मजनकम
लकंगुखे ।४। मृगमद रस ललितं ललितं कुरु
तिलक मलिक रजनीकरे । विहित कलंक क
लंक मलानन विश्रमित श्रमशीकरे ।५। मम
रुचिरे चिकुरे कुरु मानद मानसजध्वजचामरे । र
तिगलिते ललिते कुसुमानि शिखंडि शिखंडकडामरे

इति हृदया नेदने । ध्रु । दथर चुंवन लांविलक
ज्ञल मुत्वलय पियलोचने थलि ज्ञल गेजन मे
ज्ञन के रति नायक मोचने ।२। नयन ज्ञंग वि
का सिति वासकरे स्फति मेउले । मनसिज पा
श विलास करे शुभवेष निवेशय ज्ञेउले । ३ ।
भ्रमर चयं रचयंत मुपरि रुचिरं सुचिरं ममसंमु

गी
गो

कांची मंचमस्रजा कवरीभरं कलय वलय श्रेणी
पाणौपदे कुरु नूपुरा विनिति गदितः प्रीतःपी
तो वरोपि तथा करोत् । ८४ प्रातर्नील निचोल
मच्युत मुरः संवीत पीतांशुकं राधायाश्चकिते
विलोक्य हसति स्वैरं सखी मंडले व्रीडा चंचल मंच
ले नयनयो राधाय राधानने स्वैरं स्मेरमुखोयमस्तु

।६। सरसघने मम शेवर दारण वारण के
दरे। मणि रशना वसना भरणानि शुभाशय
वासय सुंदरे ।७। श्री जय देव वचसि जयदे।
सदये हृदये कुरुमंडने हरि चरण स्मरण म
त केत कलि कलष ज्वरखंडने ।८। रचय कुच
योः पत्रे चित्रे कुरुष कपोलयो र्घटय जघने।

गी
गो

तेमस्य वंशोद्भव कीर्तिस्थान कृता वथान लल
नालदेश केदलिताः समय मधुरे तथा गुवे
नै सुधामारेवो मधुसूदनस्य ददन्तदेमे कदाको
मयः ।८७। ८८। रागिनी मधुमाधवी ताल ॥

संचर दधर सुधा मधुरधनि मुखरित मोहनवंशे
चलित दृगंचल मौलि कपोल विलोल वसंते ॥

जगदानंदाय नंदात्मजः ।८५। पर्यंकीकृतना
गनायक फणाश्रेणी मणीनां गणे संक्रांत प्र
तिबिंब संकलनया बिभ्रद्विभु प्रक्रियाम् । पा
दांभोरुह धारि वारिधि सुता मक्ष्णां दिदृक्षुः श
तैः कायव्यूह मिवाचर न्नुपचितो भूतो हरिः पा
तु वः ।८६। तिर्यक् कंठ विलोल मौलि तरलो

गी.
गो.

विपुल पुलक भुजपल्लव वलयित वल्लव युवति स
हस्रे । करचरणोरसि मणिगण भूषण किरण
विभिन्न तमिस्रे ।४। जलद पटल चलदिंदुवि
निन्दक चंदन तिलक ललाटे । पीन पयोधर परिस
र मर्द्दन निर्द्दय हृदय कपाटे ।५। मणिमय मकर
मनोहर कुंडल मंडित गंड मुदारे । पीत वसन

रासे हरि मिह विहित विलासं । स्मरति मनो
मम कृत परिहासं । ध्रु० । चंद्रक चारु मयूर शि
खंडक मंडल वलयित केशं । प्रचुर पुरंदर धनु
रनुरंजित मेदुर मुदिर सुवेशं ।२। गोप कदंब
नितंबवती मुखचुंबन लंभित लोभं । बंधुजीव
मधुराधर पल्लव मुल्लसित स्मित शोभं ।३।

गी॰ विलास वेशमनञ्ज भुवलिमदलवी हेदोन्सा

गो॰ रि हगेतवीदित मति सेदाद्रगेडस्पले। माश्च

दीक्ष विलज्जितस्मित सधा मुग्धाननेकानने

गोविंदं व्रज सुंदरी गण वृतं पश्यामि हृष्या

मिच ८८ श्रेनमोहन मौलिहूणो नवलन मंदारवि

हेमनः स्नव्याकर्षणा दृषि हर्षणा मद्दा मे।

मत्त सति मत्तज सुरा सुरवर परिवारे। विशद
कदंब तले मिलितं कलि कलष भयंशमयंतं
मामपि किंमपि तरंग दनंग दृशा मनसा र
मयंतं।७। श्री जय देव भणित मति सुंदर मो
हन मधुरिपु रूपे हरि चरण स्मरणं प्रति सं प्र
ति पुण्यवता हृपम्॥ ८ ॥ २४ ॥ हस्त स्वस्त

गी
गो

दाः परिशोध येन सुधियः श्रीगीत गोविंदतः
९ । साध्वी माध्वीक चिंतान भवतिभवतः शर्के
रे कर्कशासि द्राक्षे द्रक्ष्यंति केत्वा ममृत मृतम ।
सि क्षीर नीरं रसस्ते । माकंदे क्रंद कांता धर
णितले गच्छ यच्छंति यावद्भावम् शृंगार सार
स्वत मय जय देवस्य विष्वग्वचांसि ॥ ९१ ॥

ते झरंगीदृशो हृष्यद्दानव दूयमान दिविषद्दुर्वा
रदुःखापदां भ्रंसः कंस रिपो व्यपो हयतु वः श्रे
यांसि वंशीरवः ।८४। यद्गांधर्व कला सु कौश
ल मनुध्यानंच यद्वैष्णवं यत् श्रृंगार विवेक त
त्व मपि यत् काव्येषु लीला यितं । तत्सर्वं ज
यदेव पंडित कवेः कृष्णैक ता नात्मनः सानं

वि·ग
गी·

मावती चरण चारण चक्रवर्त्ती श्रीवासुदेव रति
केलि कथा समेत मेतं करोति जयदेवकविः प्रबंधं
२। यदि हरि स्मरणे सरसं मनो यदि विलास कला
सुकुतूहलं। मधुर कोमल कांत पदावली शृणु
तदा जयदेव सरस्वतीं ३ वाचः पल्लव यत्युमा प
तिधरः संदर्भ शुद्धिं गिरां जानीते जयदेव एव।

अथ गीतगोविंद माह विभास रागस्य ताल गीत ।।

२प २म २ग २रे २ग २म २प २नि २प २म २ग २रे २सं

ॐ मेघैर्मेदुरमंबरमबनभुवः श्यामास्तमालद्रु

२म २प २नि २सं २रे २ग २रे २सं २नि २प २म २ग २रे

मै नैक्तम्भीरु रयं त्वमेव तदिमं राधे गृहं प्राप

२सं २प २म २ग २रे २ग २म २प २नि २प २म २ग २रे २ग

य । इत्थं नंदनिदेशतश्चलितयोः प्रत्यध्व कुंज

२रे २सं २म २प २नि २सं २रे २ग २रे २सं २नि २प २म २ग

द्रुमं राधामाधवयो जैयंति यमुना कूले रहः के

२रे २सं

लयः १ वाग्देवता चरित चित्रित चित्त सद्मा प

वि·गी
गो

रणि धरण किण चक्रगरिष्ठे केशव धृत कच्छ
प रूप जय जगदीश हरे २ वसति दशन शिखरे
धरणी तव लग्ना शशिनि कलंक कलेव निम
ग्ना केशव धृत शूकर रूप जय जगदीश हरे ३ त
व करकमल वरे नख मद्भुत शृंगे दलित हिर
ण्य कशिपु तनु भृंगे केशव धृत नरहरि रूप जय

शरणाः श्लाघ्यो दुरूहद्रुतेः शृंगारोत्तरसत्प्रमेय

रचनै राचार्य गोवर्द्धन स्पर्द्धी कोपिन विश्रुतः

श्रुतिधरो धोयीक विक्ष्मापतिः ४ प्रलय प

योधि जले धृतवानसि वेदं विहित वहित्र चरि

त्र मखेदं केशव धृत मीन शरीर जय जगदीश

हरे १ क्षिति रति विपुल तरे तव तिष्ठति पृष्ठे य

वि॰ ग॰
गी॰

मुख मौलि वलिं रमणीयं केशव धृत रघुपति
रूप जय जगदीश हरे ७ वहसि वपुषि विशदे व
सने जलदाभं हलहति भीति मिलित यमनाभं
केशव धृत हलधर रूप जय जगदीश हरे ८ निं
दसि यज्ञ विधेरहह श्रुतिजाते सदय हृदय द
र्शित पशुघातं केशव धृत बुद्ध शरीर जय जग

जगदीशहरे ४ छलयसि विक्रमणे वलिमद्भु
त वामन पदनख नीरजनितजन पावन केशव
धृत वामन रूप जय जगदीश हरे ५ क्षत्रियरुधि
रमये जगदपगतपापं स्नपयसि शमितभव
तापं केशव धृत भृगुपति रूप जय जगदीश
हरे ६ वितरसि दिक्षुरणे दिक्पति कमनीयं दश

वि-रा
गी·

संहारयते वलिं छलयते क्षत्रक्षयं कुर्वते पौलस्त्यं
जयते हलं कलयते कारुण्यमातन्वते म्लेच्छान्मू
र्छयते दशाकृतिकृते कृष्णाय तुभ्यं नमः ॥ ५ ॥
विभासरागास्य तालः । । श्रितकमलाकुचमंड
ल धृतकुंडल कलितललितवनमाल जय जय देव
हरे ॥ ध्रु ॥ दिनमणिमंडलमंडन भवखंडन ।

५

दीशहरे ९ म्लेछनिवहनिधने कलयसि करवा
ले। धूमकेतमिव किमपि करालं केशव धृतक
ल्कि शरीर जयजगदीशहरे १० श्रीजयदेवकवे
रिदमुदितमुदारं। शृणु सुखदं शुभदं भवसा
रे केशव धृत दश विधरूप जयजगदीशहरे ११
वेदानुद्धरते जगन्निवहते भूगोलमुद्बिभ्रते दै

वि॰गो॰
गी॰

जनकसुताकृतभूषण जितदूषण समरशमित
दशकंठ जय जय देव हरे ६ अभिनवजलधरसुंद
र धृतमंदर श्रीमुखचंद्रचकोर जय जय देव हरे
७ श्रीजयदेवकवेरिदं कुरुते मुदं मंगलमुज्ज्वल
गीतं जय जय देव हरे ८ रासोल्लासभरेण विभ्रम
भृतामाभीरवामभ्रुवामभ्यर्णे परिरभ्य निर्भर

न मुनि जन मानस हंस जय जय देव हरे २ कालि
य विषधर गंजन जन रंजन यदु कुल कमल दि
नेश जय जय देव हरे ।३। मधु मुर नरक विना
शन गरुडा सन सुर कुल केलि निदान जय जय
देव हरे ।४। अमल कमल दल लोचन भव मोच
न त्रिभुवन भवन निधान जय जय देव हरे ।५।

वि·गी·
गी·

णीश्यामलकोमलैरुपनयन्नंगैरनंगोत्सवं स्व
च्छंदं व्रजसुंदरीभिरभितः प्रत्यंगमालिंगितः शृंगा
रः सखि मूर्त्तिमानिव मधौ मुग्धो हरिः क्रीडति ॥
नित्योत्संगवसद्भुजंगकवलक्लेशादिवेशाचले
प्रालेयप्लवनेच्छयानुसरति श्रीखंडशैलानिलः
किंच स्निग्धरसालमौलिमुकुलान्यालोक्य हर्षोद

6

रः प्रेमांधया राधया साधु त्वद्वदनं सुधामयमि
ति व्याहृत्य गीतस्तुतिव्याजादुद्भटचुंबितः स्मित
मनोहारी हरिः पातु वः ९ अनेकनारीपरिरंभसं
भ्रमस्फुरन्मनोहारिविलासलालसं मुरारिमारा
दुपदर्शयन्त्यसौ सखी समक्षं पुनराह राधिका १
विश्वेषामनुरंजनेन जनयन्नानंदमिंदीवरश्रे

वि-ग
गी

गोप वधू रन गायति काचिदुदंचित पंचम रागम् २
कापि विलास विलोल विलोचन खेलन जनितम
नोजे ध्यायति मुग्ध वधूरपिकं मधुसूदन वदनस
रोजम् २ कापि कपोल तले मिलिताल पितुं कि
मपि श्रुति मूले चारु चुंचुंवति नेव वती दयितं
पुलकै रनुकूले ४ केलि कला कुतुके न च का।

या उन्मीलति ऊहू रिति कलो नानाः पिकांवांगि

रः १५ विभास रागस्य ताल। ।चंदन चर्चित नी

ल कलेवर पीत वसन वनमाली। केलि चलन्म

णि कुंडल मंडित गंड युगस्मित शाली। हरिरिह

मुग्धवधू निकरे विलासिनि विलसति केलिपरे

१ ध्रु। पीन पयोधर भार भरेण हरिं परिरभ्य सरागं

वि॰ग
गी

भणित मिदमद्भुत केशव केलि रहस्यं। वृंदाव
न विपिने चरितं वितनोतु शुभानि यशस्यम् ८
विहरति वने राधा साधारण प्रणये हरौ विगलि
त निजोत्कर्षा दीर्षा वशेन गतान्यतः। क्वचिदपि
लता कुंजे गुंजन्मधुव्रत मंडली मुखर शिखरे ली
ना दीनाप्युवाच रहः सखीं ९ कंसारिरपि संसार

विदग्धे यमुना जल कूले मंजुल वंजुल कुंजग

ते विच कर्ष करेणा दुकूले ५ करतल ताल तरल

वलया वलि कलित कल स्वन वंशे। रासरसे स

ह नृत्य परा हरिणा युवती प्रशशंसे ६ श्लिष्य

ति कामपि रमयति कामपि रामां पश्यति सस्मि

त चारु परामपरामनु गच्छति वामां ७ श्रीजयदेव

वि॰
गी॰

तातिभयेन १ हरि हरि हतादरतया गतासा कुपिते
व ।छ। किं करिष्यति किं वदिष्यति सा चिरं विरहे
ण किं धनेन जनेन किं मम किं जीवितेन गृहेण २
चिंतयामि तदाननं कुटिलभ्रूकोपभरेण शोणप
द्ममिवोपरि भ्रमताकुलं भ्रमरेण ३ तामहं हृदि सं
गतामनिशं भृशं रमयामि किंवनेनु सरामि

वासना वंध शृंखलां राधामाधाय हृदये तत्याज व्र

ज सुंदरीः ॥१॥ इतस्ततस्तामनुसृत्य राधिकामनं

ग वाण व्रज खिन्न मानसः कृतानुतापः स कलिं

द नंदनी तटान्त कुंजे निषसाद माधवः ॥२॥ वि

भास रागास्रताल। । मामियं चलिता विलो

क्य वृते वधू निचयेन सापराधतया मयान निवारि

वि.गो.
गी

जयदेवकेन हरेरिदं प्रवणेन किंद बिल्व समुद्र
संभव रोहिणी रमणेन ।८। पाणौ मा कुरु चूतसा
यक ममुं मा चाप मारोपय क्रीडा निर्जित विश्व
मूर्छित जना घातेन किं पौरुषं तवैव हरिणी
दृशो मनसिज प्रेंखत्कटाक्षा शुग श्रेणी जर्जरि
ते मना गपि मनो नाद्यापि संधुक्षते ।१३। हृदि बि

नामिह किं वृथा विलपामि ४ तन्विखिन्नमसू

यया हृदयं तवाकलयामि तन्न वेद्मि कुतो गतासि

न तेन ते नुनयामि ५ दृश्यसे पुरतो गतागतमे

व किं विदधासि किं पुरेव ससंभ्रमं परिरंभणं न

ददासि क्षम्यतामपरं कदापि तवेदृशं न करोमि

देहि सुंदरि दर्शनं मम मन्मथेन दुनोमि वामिने

सीदति नव विरहे वनमाली ।ध्रु॰। दहति शिशि
र मयूखे मरण मनु करोति पतति मदन विशि
खे विलपति विकल तरोति ।२। धनति मधुपस
मूहे श्रवण मपि दधाति मनसि वलित विरहेति
शिरुज मुपयाति ३ वसति विपिन विताने त्य
जति ललित धाम लुठति धरणि शयने बहु वि

ता शाना हारो नायं भुजंगमनायकः कुवलयद

लश्रेणी कंठे न सा गरलद्युतिः मलयजरजो ने

दं भस्म प्रियारहिते मयि प्रहर न हरभ्रांत्या नंग

क्रुधा किमु धावसि १४ विभास रागस्य ताल

वहति मलयसमीरे मदनमुपनिधाय स्फुटति

कुसुमनिकरे विरहिहृदयदलनाय १ सखि

वि·ग
गी

भ्रमरपदी रंभा स्तने वोक्षति ।९। विकिरति मङ्गः
श्यामा नाशाः श्रेो मञ्जरी लते प्रविशति मङ्गः
झेझे गेझे गेजन्मङ्गवेङ्ग नाम्यति । वचयति म
ङ्गः शय्या मय्यी झले मञ्जरी लते मदन कद
न क्लान्तः कान्ते प्रियसव वर्तिते ॥१॥ ता
निसाषी स्हावोनि नेव नरला स्निग्धा हशो ।

लपति नवनाम ४ भणतिक विजय देवे विरहि
विलसितेन मनसि रभस विभवे हरि रुदयतु
सुकृतेन ५ पूर्वंयत्र समन्त्वया रतिपते रासा दि
तः सिद्धये तस्मिन्नेव निकुंज मन्मथ महा ती
र्थे पुनर्माधवः ध्यायंस्त्वा मनिशं जपन्नपि
तवै वालाप मंत्रा वली भूयस्त्वत्कुच कुंभनि

वि॰ गी॰

स्तगमिना कौतस्मिरे विलसयन्नन्तर्मिरयः मनोहृ-
गे हरतु वः क्लेशान्नवः केशवः २ यमुना तीरवा-
नीर निकुञ्जे मन्दमास्थितम् । प्राह प्रेम भरोद्भ-
्रान्तम्माधवं राधिका सखी ४४ वसन्ते वास-
न्ती कुसुम सुकुमारै रवयवै र्भ्रमन्ती कान्तारे
बहु विहित कृष्णानुसरणां अमन्दे कन्दर्प ज्व-

विभ्रमा लहक्रोत्ज मैारभे मव स्वथा संदी गिरो
वक्रिमा साविंवाधर माधुरीति विषया संगेपिवे
न्मानसे नस्यां लग्न समाधिर्हैन विरह व्याधिः क
ये वर्तते २ साकूत स्मितमा झला झल गलद्द
मिल्लमल्लासितै भ्रूवल्ली कमलीक दर्शित भ
जा मह्लाई हृष्यनम गोपीनाथ्नि मनन्निरी

वि·गा·
गी

नोरथ पथिक वधूजन जनित विलापे। अलि
कुल संकुल कुसुम समूह निराकुल बकुल क
लापे।२। मृगमद सौरभ रभस वशंवद नव द
ल माल तमाले युवजन हृदय विदारण मनसिज
नख रुचि किंशुक जाले। मदन महीपति कनक
दंड रुचि केसर कुसुम विकासे। मिलित शिली

र जनित चिंता कुलतया वलद्बाधां राधां सरस

मिद मूचे सहचरी । ललित लवंगलता परिशी

लनकोमल मलय समीरे । मधुकर निकर क

रम्बित कोकिल कूजित कुंज कुटीरे । विहरति

हरिरिह सरस वसन्ते नृत्यति युवति जनेन समं

सखि विरहिजनस्य दुरंते । ध्रु । उन्मद मदन म

वि·श·
गी·

मुक्तलता परिरंभण मुकुलित पुलकित चूते हे
दावन विपिने परिसर परिगत यमुना जल पू
ते श्रीजयदेव भणितमिदमुदयति हरि चरण
स्मृति सारं। सरस वसंत समय वन वर्णन मनुगत
मदन विकारं॥८॥ दर विदलित मल्ली वल्लि चं
चत्पराग प्रकटित पटवासैर्वासयत्काननानि॥

मुख पाटल पटल कृतस्मर तूण विलासे ।४।
विगलित लज्जित जगदव लोकन तरुण करु
ण कृत हासे विरहि निकृन्तन कुन्त मुखाकृति
केतकि दन्तुरिताशे ५ माधविका परिमल ललि
ते नव मालति जाति सुगन्धौ । मुनि मनसा मपि
मोहन कारिणि तरुण कारण बन्धौ ६ स्फुरदति

वि॰गी॰

दुरालोकस्तोकस्तवकनवकाशोकलतिका
विकाशः कासारोपवनपवनोऽपि व्यथयति अपि
भ्राम्यद्भृङ्गीरणितरमणीया न मुकुलप्रसूतिश्चूता
नां सखि शिखरिणीयं सुखयति ॥ २३ ॥ निंदति चं
दनमिंदुकिरणमनु विंदति खेदमधीरं । व्यालनि
लयमिलनेन गरलमिव कलयति मलयसमीरं । १

ति। इहहि दहति चेतः केतकीगंधवंधुः प्रसरद

समवाणप्राणवद्गंधवाहः २१ उन्मीलन्मधुगं

धलुब्धमधुपव्याधूतचूतांकुर। क्रीडत्कोकि

लकाकलीकलकलैरुद्गीर्णकर्णज्वराः नीयं

ते पथिकैः कथंकथमपि ध्यानावधानक्षण

प्राप्तप्राणसमासमागमरसोल्लासैरमीवासराः २२

वि॰ गी

करोति कुसुम शयनीये ३ वहति च गलित वि
लोचन जलधर मानन कमल मुदारं विधुमिव
विकट विधुन्तुद दंत दलन गलितामृत धारे ४
विलिखति रहसि कुरंगम देन भवंतम सम श
र भूतं प्रणमति मकर मधो विनिधायकरे च
शरं नवचूतं ५ प्रतिपद मिदमपि निगदति माध

माधव मा विरहे नवदीना मनसिज विशिखभ
या दिव भावनया त्वयि लीना । ध्रु । अविरल निप
तित मदन शरादिव भवदव नाय विशाले । स्वहृ
दय मर्मणि वर्म करोति सजल नलिनी दलजा
ले । २ कुसुम विशिख शरतल्प मनल्प विलास
कला कमनीयं । व्रत मिव तव परिरंभ सुखाय

वि·गा·
गी·

।८। आवासो विपिनायते प्रियसखीमालापि
जालायते। तापोपि श्वसितेन दावदहनज्वाला
कलापायते। सापित्वद्विरहेण हन्त हरिणी रू
पायते हा कथं कन्दर्पोपि यमायते विरचयन्
शार्दूलविक्रीडितो।१४।स्तनविनिहितमपि
हारमुदारं सा मनुते कृशतनुरिव भारं राधिका

18

व नव चरणे पतिताहं । नयि विमुखे मयि सपदि

सुधा निधि रपि तनुते तनुदाहं ६ ध्यान लयेन पु

रः परि कल्प्य भवंत मतीव दुरापं विलपति हसति

विषीदति रोदति चंचति मुंचति तापं ।७। श्रीजयदेव भ

णित मिदमधिकं यदि मनसा नटनीयम् । हरि

विरहा कुल वल्लभ युवति सखी वचनं पठनीयं

वि. गी.

कलयति विहितहुताशनकल्पे ।५। त्यजति न

पाणितलेन कपोले । बालशशिनमिव सायम

लोले ६ हरिरिति हरिरिति जपति सकामे । विर

ह विहितमरणेव निकामे ७ श्रीजयदेव भणित

मिति गीतम । सुखयतु केशव पदमुपनीत

म ।८। स्मरातुरां दैवतवैद्यहृद्य त्वदंगसंगामृ

विरहे तव केशव ।ध्रु०। सरस मसृण मपि मलय

ज पंके पश्यति विषमिव वपुषि सशंके २ श्वसित

पवन मनुपम परिणाहे । मदन दहन मिव वह

ति सदाहम् ३ दिशि दिशि किरति सजल कणजा

लम । नयन नलिन मिव विगलित नालम् ।

॥ ४ ॥ नयन विषय मपि किशलय तल्पम ॥

वि·ग्रॊ
गी·

रसेजवरा नरतनो राक्षये मस्याक्षिरे वेन रवेदन
वेद्गमः कमलिनी विंनाम्ह सेनाम्पनि किंन
दोनिरसेन शीतलनरे न्वामेक मेवविंयं ध्यायं
द्दसिस्थिता कथमपि दीणातणं धाणानि ॥१
२॥ दाणमपि विरह्तः पतन मेह्रे नयन निमी
लित विन्नयानयाते श्वसिति कथमसौ रसा

न मात्र सायं । विमक्क वायं ऊकषेन रायो मयेंद्

वज्रा दपि दारुणोसि । १।१२५। सारोमो चनि सो

न्करोति विलप न्तकम्पते नामपति ध्यायन्तु कुम

प्रमीलति पतन्तु याति मूर्छनपि पतावन्न ननन्न

रे वरनन जीवेन्न किंतेरसान सर्वेय प्रतिमप्रमी

दसि ननस्पको मण्या हलकः। १।१२६। केदंपज्ज

वि-रा
गी

न रुको लना गरहे हला नखविने गोविंदे मनसिज
मंदे सखी प्राह ॥ ४।३६ ॥ शेमेषा भरणो कयोनि व
ड्रुशः परेपि मेघारिति प्रामेनाम्पारि शोकने वि
नयने श्याम्पो विरे प्पायनि । इत्पा कल्प विक
ल्प तल्प रचना संकल्प लीला शत प्पा शक्ता
पि विना त्वया वर तन नैषा निशां नेष्य ।

ल शाखो चिर विरहेण विलोक्य अस्थितामो ।२।

२८। गाथा मध्य माचार विंद मध्ये त्रैलोक्य मौल

स्थली। नेपथ्ये चितनी रत्न मवनी भारा वना

गांतकः। स्वच्छंद व्रज सुंदरी जन मनस्तोक प्रदो

पश्चिरं केस ध्वंसन धूम केतु रवतु त्वां देवकी

नंदनः ॥१३॥२४॥ प्रथमो गतन म शाको चिर म

विरा
गी

अः। त्वदभिशरणरभसेन वलेती पतति प
दानि कियेति चलेती।२। विहित विशद विष
किशलय वलया। जीवति पर मिह तव रति
कलया।३। मुहुरव लोकित मंडल लीला मधु
रिपुरह मिति भावन शीला।४। त्वरित मुपै
ति न कथ मभि सारं। हरि रिति वदति सखी

ति ॥ १५ ॥ ३१ ॥ विपुल पुल कपालिः स्फीत सीत का
र मेंत जेनित त्रिडिमका ऊर्य्याऊले व्याहरंनी नव
कि नव विथाया भेंद केंदर्प विना रस जल निधि
मवना ध्यान लगना स्मगाही ॥ १६ ॥ ३२ ॥ पशुपति
दिशि दिशि रहसि भंवंतम लदयर मधुर मधु
नि पिंवंतम ॥ १ ॥ नाथ हरे सीदति राधा वासगृहे

वि॰स॰
गी॰

न दृष्टिगोचरमितः सानन्द नन्दास्पदम् राधा
या ववननद धग म्राबोन्नेदोतिके गोपनोगो
विंदस्य जयेति सायम तिथिः प्राशस्य गर्भीः
गिरः २ अंगनेव जलदा जल वर्मी पान संजा
न पानक इव स्फुटलो क्वनश्रीः। हेदावनो न
र मदीपयदं मजाले दिक संदरी वदन चेदन

मनुवारं ५ स्लिष्यति चुंबति जलधरकल्पं । हरि
रुपगत इति तिमिरमनल्पं । ६ । भवति विलं
बिनि विगलितलज्जा । विलपति रोदति वास
कसज्जा । ७ । श्रीजयदेवकवेरिदमुदितं । रसिक
जनंतनुतामतिमुदितं । ८ । किं विश्राम्यसि कृ
ष्णभोगिभवने भांडीरभूमीरुहे । भ्रातर्यासि

वि॰रा॰
मी॰

णमेव वामताम् । नृणां जगत्प्राण विधाय माध
वे पुरो मम प्राण हरो भविष्यसि ३७ बाधां विधेहि
मलयानिल पंचबाण प्राणान् गृहाण न गृहं
पुनराश्रयिष्ये । किंते कृतांत भगिनि क्षमया
तरंगै रंगानि सिंच मम शाम्यतु देह दाहः ।
॥ ३८ ॥ कथित समये पि हरि रहह न ययौ व

विंदु विंदुः ३४ प्रसरति शशधर बिंबे विहित विलं
बेच माधवे विधुरा विरचित विविध विलापं सा
परितापम् चकारोचैः ३५ विरह पांडु मुरारि मु
खांबुज द्युति रयं तिरयन्नपि वेदनां । विधुरतीव
तनोति मनो भुवः सुहृदये हृदये मदन व्यथाम्
॥३६॥ मनोभवानंदन चंदनानि प्रसीदरे दक्षि

वि॰रा॰
गी॰

हरिमनुभवति कृतसुकृतकामिनी ।४। अह
इ कलयामि वलयादि मणिभूषणं । हरिविर
ह दहन वहनेन बहुदूषणं ५ कुसुमसुकुमार
तनु मतनु शरलीलया । स्रगपि हृदि हंतिमाम
ति विषमशीलया ६ अह मिह निवसामि नग
णित वनवेतसा । स्मरति मधुसूदनो मामपिन

ने मम विफल मिद ममल रूप मपि यौवनं १ या

मिहेक मिह शरणं सखी जन वचन वंचिता ।

ध्रु॰ ।। यदनु गमनाय निशि गहन मपि शीलि

तम् २ मम मरण मेव वर मति वितथ केतना

कि मिह विषहामि विरहा नल मचेतना ।३।

मामहह विधुरयति मधुर मधुयामिनी कापि

विरा
गी

हरिः पातु वः ३९ नक्तं कामपि कामिनीमभिसृ
तः किं वा कलाकेलिभिर्बद्धो बन्धुभिरंधकारिणि
वनाभ्यर्णे किमुद्भ्राम्यति। कान्तः क्लान्तमना मना
गपि पथि प्रस्थातुमेवाक्षमः संकेतीकृतमञ्जुवे
तसलताकुञ्जेऽपि यन्नागतः ४० अथागतां माध
वमन्तरेण सखीमियं वीक्ष्य विषादमूकाम्

वेनसा । ११ । हरिचरण शरण जयदेव कविभार
ती । वसतु हृदि युवतिरिव कोमल कलावती
८ । त्वामप्राप्य मयि स्वयंवर परां क्षीरोदतीरो
दरे शंके सुंदरि कालकूट मपिबन्मूढो मृ
डानीपतिः इत्थं पूर्व कथाभिरन्य मनसो विक्षि
प्य वक्षो वले राधायाः स्तन कोरकोपरि मिलन्नेत्रो

विचल दलक ललिता ननचंद्रा । तदधर पानर
भस कृत तंद्रा ३ चंचल कुंडल ललित कपोला·
मुखरित रशन जघन गति लोला ४ । दयित वि
लोकित लज्जित हसिता । बहु विध कूजित
रति रस रसिता । ५ । विपुल पुलक पृथुवे
पथुभंगा । श्वसित निमीलित विकसद नं

विशंकमानारमितंकयापिजनार्द्दनंदृष्टवदेतदा
ह ॥ ४ ॥ विभासरागएकताला ॥ स्मरसमरो
चित विरचित वेशा गलित कुसुम दर विलुलित
केशा ॥ १ ॥ कापि मधुरिपुणा विलसति युवति
रधिकगुणा ॥ ध्रु० ॥ हरिपरिरंभण वलित वि
कारा । कुच कलशोपरि तरलित हारा ॥ २ ॥

रमते यमुना पुलिनवने विजयि मुरारिरधु
ना ।ध्रु॰। घनचय रुचिरे रचयति चिकुरे तर
लित तरुणानने कुरुवक कुसुमं चपला सु
खमं रति पति मृग कानने २ घटयति सुघने
कुचयुग गगने मृगमद रुचि रुषिते । मणि
सर ममलम् तारक पटलम् नख पद शिश

गो।६। श्रमजलकण भर सुभग शरीरा।परि

पतितोरसि रतिरण धीरा।७। श्री जय देव

भणित हरि रमितम् ॥ कलि कलुषं जनयतु

परि शमितम ॥८॥ सम दित मदने रमणी

वदने चुंबन वलिता धरे मृग मद तिलके

लिखतिम पुलके मृग मिव रजनी करे।१।

वि·गो·
गी·

णि गण पूजिते । बहिरप वरणे यावक भरणे ज
नयति हृदियोजिते ।६। रमयति सुभृशं काम
पि सुदृशं खल हलधर सोदरे । किमफलमवस
चिर मिह विरसं वदसखि विटपो दरे ।७। इह
रस भणने कृतहरि गुणने मधुरिपु पदसेवके
कलियुग चरितम् नवसतु दुरितम् क ॥

मुषिते ।३। जित बिस शकले मृदुभुज युगले

करतल नलिनी दले । मरकत वलये मधुकर

निचये वितरति हिम शीतले ।४। रति मृदु

जघने विपुला पवने मनसिज कनकासने म

णिमय रशने तोरण हसने विकरति कुन वास

ने ।५। चरण विमलये कमला निलये नाखम

पवनेन ।३। स्थलजल रुह रुचि कर चरणेन ।
लुठति नसा हिमकर किरणेन ।४। सजल
जलद समुदय रुचिरेण । दहति नसा हृदि
विरह भरेण ।५। कनकनिकष रुचि शुचि
वसनेन । श्वसिति नसा परिजन हसितेन
।।६।। सकल भुवन जन वर तरुणेन वह

विलप जय देवके ।८। विभास रागेण ना-
अनिल तरल कुवलय नयनेन तपति न सा कि-
सलय शयनेन ।१। सखि या रमिता वनमालि-
ना ।ध्रु। विकसित सरसिज ललित मुखेन ।
स्फुटति न सा मनसिज विशिखेन ।२। अमृत
मधुर मृदुतर वचनेन ज्वलति न सा मलयज

वि गी

स्फुटदिदैवेन स्वयं यास्यति ॥ ४२ ॥ विभासरा
गस्य ताल। ।निभृत निकुंज गृहं गतया
निशि रहसि निलीय वसंतं चकित विलोकि
त सकल दिशा रति रभस वशेन हसंतम् ॥
॥ २ ॥ सखि हे केशि मदन मुदारम् ॥ रमय
मया सह मदन मनोरथ भावितया सविका

जिन सारुज मतिकरणेन ।७। श्रीजयदेव भ
णित वचनेन । प्रविशत हरि शरण हृदय मनेन
८।१२। नायातः सखि निर्द्दयो यदि शठस्त्वं दू
ति किं दूयसे । स्वच्छन्दम्बहु वल्लभः स रमते
किं तत्र ते दूषणं । पश्याद्य प्रियसंगमाय दयि
तस्याकृष्यमाणं गुणै रुत्कण्ठार्त्तिभराद्दिव

विरा
गी

ललित कपोले। श्रमजल शकल कलेवर याव
र मदन मदादिति लोले। कोकिल कलरव कू
जित याजित मनसिज तेत्र विचारे स्वय ऊरुमा
कुलऊंतलया नरव लिखित घनस्तन भारे। ५
चरन रणित मणि नू पुरया परि पूरित विता
नम॥ मावर वि स्रंवल मेवलया मक

ये।फ॰। प्रथम समागम लज्जितया पटु चाटु श

तै रनुकूले । मृदु मधुरस्मित भाषितया शिथि

ली कृतजघन दुकूले ।२। किसलय शयन

निवेशितया चिरमुरसि ममैव शयानं । कृत

परिरंभण चुंबनया परिरभ्य कृताधरपानं ।

।।३।। अलस निमीलित लोचनया पुलकावलि

गी.
१९॥

वि॰गी॰

ने विभ्रमलव संदर्भीभि रधिका नेदाछिवैर्त्रुविनः

दर्पणैव नदर्पिता यरनटी सिंधूर मुद्रो कितो वा

ड्रगौ पतनो लतो न भवतः श्रेयो सिके सहिषः ४३

अथ कथ मपि यामिनी विनीय स्मर शरजर्ज

रितापि सा प्रभाते । अन नय वचनम् वदे

न मग्रे प्रणत मपि प्रिय माह साभ्य सू ।

व ग्रह त्रुवन दाने ।८। रति सुखे समय रसाल सया

दर मुकुलित वदन सरोजे निसह निपतित तनुल

तया मधुसूदन मुदित मनोजे ७ श्रीजय देव भणि

त मिदमति शय मधु रिपु निधुवन शीले सुखमु

त्कंठित गोपिकया कथित वितनो तु सलीले ।

८। हरि आकुल गोकुल वनवशा उद्धृत गोवर्द्ध

कि.गा
गी

ञ्जन विरचित नीलिम रूपे । दशन वसन म
रुणे नव कूल तनोति तनो रत रूपम् ॥२॥
वपु रत हरति नवस्मर संगार खिवन खिवदन्त
वेखम । मरकत शकल कलित कलधौत
लि पेरिव रति जयलेखं ॥३॥ चरण कमल
गल दलक्तक सिक्त मिदं नव हृदय मुदा

यम्।४४। विभासरागस्यताल। ।रजनिज

नित गुरु जागार राग कषायित मलसनिवेषं।व

हति नयन मनराग मिवस्फुट मुदित रसाभिनि

वेशं।१। याहि माधव याहि केशव मावदकै त

व वादंता मनसर सरसीरुह लोचन यातव हर

ति विषादम्।ध्रु।। कजल मलिन विलोचन

वि॰ग
गी॰

हूते ।६। भ्रमति भवा नबला कवलाय वनेषु कि
मत्र विचित्रे । प्रथयति पूतनिकैव वधूवध नि
र्दय बाल चरित्रे ।७। श्रीजय देव भणित रति वं
चित खंडित युवति विलापं । स्रणुत सदा मधुरे
विबुधा विबुधालय तोपि दुरापम् ।८। १५ ॥
तवेदं पश्यन्त्याः प्रसरदनुरागं बहिरिव प्रिया

वे। दर्शयन्ती ववहिर्मदन द्रुम नव किसलय प
रिवारे।४। दशन परिभ दयर गात म्मम जनय
ति चेतसि खेदे। कथयति कथ मथ नापि मधा
मह नव वधीरत दयेभेदे।५। वहि रिव मलिनत
वे नव कुसुम मनोपि भविष्यति नूनम्॥ कथ
मथ वेदयसे जन मन गानम सम शावज चव

१६०॥

वि॰ गी॰

ष वशाममी मनिःश्वास निस्सह मत्वो स्वभवो

म्ब्येन सखीड मीत्तिन मावो वदने दिनेति सानेद

गाह्नद पदे ह्रीरि विह्नवाव ५ परि ह्नर ह्नना ते

के शंकान्वया सतते ग्वनसन जवनया क्रान्ते

स्वान्ते पयानवकाशिनि विशानि विननो र।

न्यो यमो नकोपि ममोनरे श्रणायिनि पनी

पादालक्तकुरित मकरणा योति हृदयं ममाद्य श्रव्या
न श्रणाय भरंभेणन किमव न्वदा लोकः शोकादपि
किमपि लज्जां जनयति ।४५। पश्चा पयो यरत
टी परिरंभलग्न काश्मीर म्रद्धित म्रद्धित मरोम
धमहस्य व्यक्तानुराग मिव खेल दनंगविद खेदा
तु हूर मन दूरयन प्रियेयवः ४६ अन्योन्य मसृणा रो

वि·ग·
गी·

ह्निमेवचन मेवमो स्वय मतिशय स्निग्ध मयेपि
योय मपस्थितः। ५। ॥ विभासरागगसा ताल ।
वदसि यदि किंचिदपि दन्त रुचि कौमदी हरति
दरति मिर मतिघोरं । स्फुरदधर सीधवे तव वद
न चंद्रमा रोचयति लोचन चकोरं १ प्रिये चारु
शीले मुंचमयि मानमनिदानं । सपदिमद नाद

देमा देभे वियेहि वियेयतो ४८ मगये वियेहिम

यि निर्दय दन्त देश दोर्वैलि वेथ निविडस्तनपीड

नादि वेदिनमेव मद मेवय पंचवाण वेडाल कांड

दलना दमवः श्रयोत ४९ व्यथयति कृथा मौने

तन्विश पंचय पंचमे तरुणि मधुलापे स्वापम्

विनोदय दृष्टिभिः सुमाति विमुखी भावेनाव

विरा
गी

मम हृदय मति यन्त्रे ३ नील नलिनाभ मपि तन्वि
नव लोचने धारयति कोक नद रूपे । कुसुम शर
वाण भावेन यदि रंजयसि कृष्ण मिद मेतदनु रू
पे ४ स्फुरतु कुच कुंभयोरु परि मणि मंजरी रंज
यतु तव हृदय देशे । रसतु रसनापि तव घन ज
घन मंडले घोषयतु मन्मथ निदेशे ५ स्थलक

लो दहति मम मानसं देहि मुख कमल मधुपानं

।ध्रु०। सत्यमेवासि यदि सुदति मयि कोपिनी दे

हि खर नयन शर घातं । घटय भुज बंधनं जनय

रद खंडनं येन वा भवति सुख जातं २ त्वमसि मम

भूषणं त्वमसि मम जीवनं त्वमसि मम भव जलधि

रत्नं भवतु भवतीह मयि सततम नुरोधिनी तत्र

वि॰ रा॰
गी॰

राधिका मधि वचन जाते । जयति पद्मावती रमण
जयदेव कवि भारती भणित मतिशाते ।८। १६ ॥
बंधूक द्युति बांधवोय मधुर स्निग्धा मधूक छवि:
गंडे चंडिच कास्ति नील नलिनश्री मोचने लोच
ने नासाभ्येति तिलप्रसून पदवीं कुंदाभ दंति
प्रिये प्रायस्त्वन्मुख सेवया विजयते विश्वंस ७

मलगंजनं मम हृदयरंजनं जनितरति रंगपरभा

गं । भण मसृण वाणि करवाणि चरण द्वयं सर

सलसद लक्तकरागं ६ स्मर गरल खंडनं ममशि

रसि मंडनं देहि पद पल्लव मुदारं । ज्वलति मयि

दारुणो मदन कदना नलो हरतु तदुपा हित

विकारं ७ इति चतुल वाट्ट पड्वाक मर वैरीनो

कि-रा
गी

ति निर्जितजगन्ति किमर्पितानि ५३ स्त्रुवाये निरु

तःकटात विशिखो निर्भिन्न ममे व्यथा शपामात्मा

त्कुटिलःकरोति कवरी भारोपि मारोद्यमे । मोहं

नावदयेव नलि नत्तुना स्विकायरो रागवान सह

तःस्तनमेडलमलकथं आतोमिम कीडति ५४ मा

निनीमानविध्वंसदक्षो जयति सोऽनंगः । मदडेवाए स

घ्यायुतः ॥५१॥ दृशौ तव मदालसे वदनमिंदुसंदीप
नं गतिर्जनमनोरमा विजितरंभमूरुद्वयं रति
स्तव कलावती रुचिरचित्रलेखे भ्रुवावहो विबु
धयौवनं वहसि तन्वि पृथ्वीगता ॥५२॥ भ्रूपल्लवं
धनुरपांगतरंगितानि बाणा गुणाः श्रवणपालि
रिति स्मरेण तस्यामनंगजयजंगमदेवतायामस्त्रा

वि॰ रा॰
गी॰

श्री खेड वची विषे मीनो शुक्लपनो हिमेडुन वहः

कीडा मुदे यातनः । ५७ । विभास रागस्य ताल

हरि गमि मरनि वहनि मुड पवने किम पर

मथिक मुखे मथि भवने ॥ १ ॥ माथवी माझ

रु मानिनि मानमये ॥ ध्रु ॥ ताल फला

टपि गुरु मनि सरसम ॥ किम विफली

सम्भूतः श्रीमद्गोपालकखवितिः ५५ नामय मन्मथ

खिन्नो रतिरसभिन्नो विषादसम्पन्नो । अनुचिंति

तहरिचरितो कलहान्तरिता मवाव सहः सखी

५६ स्निग्धे यत्परुषासि यत्प्रणमति स्तब्धासि य

द्रागिणि द्वेषस्थासि यदुन्मुखे विमुखतां याता

सि तस्मिन्प्रिये । तद्युक्तं विपरीतकारिणि तव

वि॰ गी॰

किमिति करोषि हृदय मति विभ्रमम् ॥६॥ स
जल नलिन दल शीतल शयने हरि मव लो
कय सफलय नयने ॥७॥ श्री जय देव भणि
त मति ललितम् ॥ सुखय तु रसिक जने हरि
चरितम् ॥८॥१९॥ श्री राधिकाजीके वच
न चित्र लिख साखी सखा सोये साखी वहिमा

ऊरुषे ऊच कलशे ३ कतिन कथि मिद मनु पद
मचिरं । मा परि हर हरि मतिशय रुचिरं किमि
ति विषीदसि रोदिषि विकला । विहसति युव
ति सभा तव विकला ४ जनयसि मनसि कि
मिति गुरुखेदम् । शृणु मम वचन मनी हित
भेदम् ॥ ५ ॥ हरि रुप यातु वदतु बहु मधुरं

वि॰
गी॰

वद्ध मधुरे। किमिति करोषि हृदयमति विधुरे
॥६॥ सजल नलिन दल शीतल शयने हरिम
वलोकय सफलय नयने ७ श्री जय देव भणित
मति ललितम्। सुखयतु रसिक जने हरि च
रितम् ॥८।१९॥ श्री राधिका जीके वचन
सिष सिव सखी सखा सोयें सखी वहिमा

निलो विष मिव सूया रश्मि यस्मिन् डुनोति म
नोगते । हृदय मद्ये तस्मिन् नेव प्रज्वलते व
लान् ज्वलय दृष्णाम्बामः कामो निकाम निरं
कुशः ।५८। गाणायति गणायामे आमे भसाद
पिने हते वहन्तिव पोर नोष दोष विमेचति हर
तः प्रवतिष्ठ नलन्दलो कूलो विहारिणी मांत्र

किरा
गी

नयेन प्रीणयित्वा मृगाक्षी गतवति कृतवेषे के
शवे कुंजशय्यां रचित रुचिर भूषां दृष्टिमोषे प्रदो
षे स्फुरति निरवसादां कापि राधां जगाम ६१
सामे इदति वदति प्रिय कथां पंचगमालि
गानैः प्रीति यास्यति रेस्यते सखि समा गत्ये
ति विना कलाः ॥ सनाम् पशुपति वेपते

विना पुनरपि मनो वामं कामं करोति करोमि किं

५९ प्रीतिं वस्तनुतां हरिः कुवलयापीडेन सार्द्धं

रणे। राधापीनपयोधरस्मरणकृत्कुम्भेन सं

भेदवान्। यत्र स्विद्यति मीलति क्षणमथ क्षि

प्ते द्विपे तत्क्षणात्। कंसस्यालमभूज्जितं जित

मिति व्यामोहकोलाहलः॥ ६०॥ स्फुरति मन

वि॰ग॰
मी

६३ ॥ श्राश्लेषाः दव छेबना दव्ननवो लेवोदव
स्वान्तज श्रोडोया दवसंभमा दवरना रेभादव
श्रीनयोः ॥ श्रन्यार्थं गनयोर्भेमान् मिलिनयोः
मेभाघौ जीनतो देपन्यो विहू कोन कोन न
मस्ति श्रीडा विमिश्रोरसः ६४ श्रनो लिदिप
दे जने श्रवणायो स्नापिकुरुवावली मू ह्लिशण

45

ञ्चलकयमुना नेदति स्विद्यति भम्भञ्छति मञ्छति

स्थिवननमः पुंजे निकुंजे प्रियः ।६२। त्वहामेनम

मे समग्र मधुना निर्गमाश्चरंत्त यनो गोविंदस्य म

नोरथे नवसमं धामं नमःसो श्नो । कोकाने

श्री.
करुणा स्वनेन सदृशी दीर्घा मदभ्यर्थना । तन

१२.१.
मुपये विफले विलंवन मसौ रम्योभि सारक्षणः

वि॰
गी॰

पतनीं तनोति ॥६६॥ विभासरागस्य ताल । १
विरचित चाटु वचन रचने चरणे रचित प्रणिपाते
संकेत मंजुलसी मनि केलि शयन मनुयाते ।
मुग्धे मधु मथन मनुगत मनु सर राधिके ।ध्रु-
घन जघन स्तन भार भरे दर मन्थर चरण विहा
रम ॥ मुखरित मणि मंजीर मुपैहि विधेहि

म सरोज दाम कुचयोः कस्तूरिकापत्रके । धूर्त्ताना
मभि सार सत्वर हृदां विष्वङ् निकुंजे सखि । ध्वां
तं नील निचोल चारु सुदृशां प्रत्यंग मालिंग
ति ।६५। काश्मीर गौर वपुषा मभि सारिकाणा
माबद्ध रेख मभितो रुचि मंजरीभि । एतत्तमा
ल दल नील तमं तमिस्रं तत्प्रेम हेम निकषो

वि॰ रा॰
गी॰

रि रंभे । एकु मनोहर हार विमल जल धारमने

ऊच कंभे ५ अधिगत मोतिल सखी भिरिदंत

व वघ रणिरति रणा सजे । चेडि गणिन रशनारव

डिडिम भीम सव सरस मलजे ६ स्मरशारसभ स

खिन सखी मवलेऋकरेणा सलीले । वल वल

यक्षकणितै रव वेयय हरी मधि निज गतिशी

मराल विकारं ।२। श्रृणु रमणीय तरं तरुणीज

न मोहन मधुरिपु रावं । कुसुम शरासन शास

न वंदिनि पिक निकरे भज भावं ।३। अनिल

तरल किसलय निकरेण करेण लतानि कुरंवं-

प्रेरण मिव करभोरु करोति गतिं प्रति मुंच विलं

वं ।४। स्फुरित मनंग तरंग वशा दिव सूचित हरि प

वि·रा·
गी

ऋलति सर्कौति स्थिरतमःपुंजे निकुंजे प्रियः ॥ ९॥
९९॥ विभास रागस्य ताल। ।रति सुख सारे
गत मभि सारे मदन मनोहर वेषं। नकुरु नितं बि
नि गमन विलंबन मनु सरतं हृदयेशं ॥ १ ॥ धीर
समीरे यमुना तीरे वसति वने वन माली गोपी
पीन पयोधर मर्दन चंचल कर युग शाली ॥

ले ।७। श्रीजयदेवभणितमधुरीकृतहारमुदा
सितवामे । हरिविनिहितमनसामधितिष्ठतु
कंठतटीमविरामे ।८।१९। सामे इच्छति वदन्
ति प्रियकथा प्रत्यंगमालिंगनैः श्रीनिवासस्य निरे
क्षेन सखि समं गात्येति विनाजलः । मन्वाम्य
शपति वेपते पुलकयत्यानंदति खिद्यति प्रत्युङ्क

वि॰ रा॰
गी॰

शीलय नील निचोलम् ४ उरसि मुरारे रुपहित
हारे घन इव तरल बलाके। तडि दिव पीते रति
विपरीते राजसि सुकृत विपाके ५ विगलित
वसने परिहृत रशने घटय जघन मपिधानम्।
किसलय शयने पंकज नयने निधि मिव हर्ष
निधानम् ६ ॥ हरि रभि मानी रजनि रिदानी

रु॰ । नाम समेतं कृतसंकेतं वादयते मृदुवेणुं । ब

हु मनुते ननु ते तनु संगत पवन चलित मपिरेणुं

२ । पतति पतत्रे विचलति पत्रे शंकित भवदुपया

नं । रचयति शयनं सचकित नयनं पश्यति तव

पन्थानं ३ मुखर मधीरं त्यज मंजीरं रिपु मिव

केलि सुलोलं । चल सखि कुंजं सतिमिर पुंजं

कण्ठ मणि रहः श्यामा मैत्री तरंग तरंगिणिभिः स्व
भावि स्वभगः सत्वात्मयशपञ्चपैन कृतार्थितो।
६७ हारावली तरल कांचन कांचिदाम मंजीर
कंकण मणि द्युति दीपितस्य द्वारे निकुंज
निलयस्य हरिं निरीक्ष्य व्रीडा वतीम् अथ
सखी निजगाद राधाम् ॥६८॥ विभासरागस्य

मिह मपि याति विरामे । जह मम वचने सतत व
चने प्रथय मधुरिकामे ।७। श्रीजय देव कृत ह
रि सेवे भणति परम रमणीये । प्रमोदित हृदयं
हरि मपि सदयं नमत सुकृत कमनीयं ॥८॥
समय चकिते विमस्यंती दृशौ तिमिर पथि
प्रति रुत मङ्कः स्थितामंद पदानि वितन्वतीम्

विरा॰
मीं॰

रसि शीते । विलस रति वलित ललित गीते ।

४। वितत बहु वल्लि नव पल्लव घने विलस चि

र मलस पीन जघने । ५। मधु मुदित मधुप

कुल कलित रावे विलस मदन रस सरस भावे

॥६॥ मधुर तर पिक निकर निनद मुखरे । वि

लस दशन रुचि रुचिर शिखरे ७ विहित पद्मा

माल। ।मंजतर कुंजतलकलि सदने विलस

रति रभस हसित वदने ।१। प्रविश राधे माधव

समीप मिह ।ध्रु। नव भवद शोकदल शाय

न सारे । विलस कुच कलश तरलहारे ।२। कु

सुम चय रचित शुचि वासगेहे । विलस कुसुम

सुकुमार देहे ॥३॥ चलमलय वन पवन सु

वि·रा
मी

याहिगाथा मननय महवने वानेयथ्याः । इति म
धुरिशुणा मावोनिशुका स्वय मिद मेला धनजेवा
दगाधाम् ७ न्वोविनेन विं वहन्नय मति थ्रो
नो भटशं ता पिनः केदर्पणाव पान मिछुति सुधा
संवाय विंवापरे ८। श्रस्यां कन्त दलम् ऊरु
लगण मिह भू देप लक्ष्मी लव क्रीने

वनी सखे समाजे । भणति जयदेव कवि राज रा
जे ।८। सान्द्रानंद पुरन्दरादि दिविषद् वृन्दैर मे
दा दरा । दानम्रै मुकुटेंद्र नील मणिभिः संद
र्शितेन्दीवरम् । स्वच्छन्दम मकरन्द सुन्दर गलन
मन्दाकिनीमेदुरे । श्री गोविंद पदारविंद मशु
भ स्कंदाय वन्दामहे ।९। अह मिह निवसा मि

वि॰ गी॰

भ्रमर यिव हृषी भतिकरः ।७३। भजनन्याल्ल । ल्यान्नम् कृत कपट केतूनि विक्षिन स्मितेया ते गेहा द्वहिरव हिताली परिजने ॥ श्रिया से परशंपत्याः स्मर शर सम्मा कृत स्वभरम् म लजाया लज्या व्यगम द्विवहरम मरागदृशः । विभाम रागस्य ताल । ॥ गाथा वदन वि

दाम इवोप सेवित पदां भोजे जनः संभ्रमः ७१
सास साधस सा नंद गोविंदे लोल लचना सिं
जान मंजु मंजीरं प्रविवेश निवेशनं ७२ शित क्र
स्यापांगे श्रवण पथ पर्यन्त गमन प्रयासे नेवा
क्ष्णो स्तरल तरतारं गमित नयोः । नदानी राधा
याः प्रिय तम समालोक समये पपात स्वेदांबु

वि·रा
गी·

मिव यमुना जल पूरम् ।२। श्यामल मृदुल
कलेवर मंडल मधिगत गौर दुकूले । नील
नलिन मिव पीत पराग पटल भर वलयि
तमूले ।३। तरल दृगंचल चलन मनोहर वदन
जनित रतिरागे । स्फुटकमलोदर खेलितखं
जन युग मिव शरदि तडागे ।४। वदनक

लोकन विकसित विविध विकार विभंगे । ज
लनिधि मिव विधु मंडल दर्शन नरलित नेगत
रंगे ।२। हरिमे कर संचिर मभिलखिन विलासे
सार दर्शी गुरुहर्ष वशम्वद वदन मनेग विकासे
श्रु॰। हार ममल नरनार मरसि दयते परिले
ख विहारम ।। स्फुट नर फेन कदम्ब करंबित

वि॰गी॰

कलाभिरधीरे । मणिगणकिरणसमूहसम

ज्वलभूषणसुभगशरीरे ॥७॥ श्रीजयदेवभ

णितविभवद्विगुणीकृतभूषणभारे । प्रणम

त हृदि विनिधाय हरिं सुचिरं सुकृतोदयसारे

॥८॥२१॥ गतिवति सखी वृन्दे मंदत्रपाभर

निर्भरस्मरपरवशाकूतस्फीतस्मितस्नापित

५५

मल परि शीलन मिलित मिहिर सम कुंडलशो

भं। स्मित रुचि कुसुम समुल्लसिता धर पल्लव

कृत रति लोभम् ।५। शशि किरण छुरितो

दर जलधर सुंदर स कुसुम केश तिमिरो दित

विधु मंडल निर्मल मलयज तिलक निवेश

म् ।६। विपुल पुलक भर दंतुरितं रतिकेलि

वि॰रा
गी

न मनुसर राधिके । ध्रु । करकमलेन करोमि
चरणमहमागमितासि विदूरं क्षणमुपकु
रु शयनोपरि मामिव नूपुरमनुगतिशूरम्
।२। वदनसुधानिधिगलितममृतमिव र
चय वचनमनुकूलम् ।। विरहमिवापन
यामि पयोधररोधकमुरसि दुकूलम् ।।३।।

नाधराम । सर समलसं दृष्ट्वा हृष्ट्वा मुहुर्नव पल्लव
प्रसर शयने निक्षिप्ताक्षी मुवाच हरिःप्रियाम्
७५॥ विभासरागस्य ताल । । किशलय श
यशयन तले कुरु कामिनि चरण कमल विनि
वेशं । तव पद पल्लव वैरि पराभव मिद मनुभ
वतु सुवेशं । २ । क्षण मधुना नारायण मनुग

वि॰ग॰
गी॰

गणमनगणकंठ विनादे । स्फलित स्रुत लोपि
करुन मम शमय चिरादव सादे ।६। मामति
विफल रुषा विफली कृत मव लोकित मधुने
दम् । मीलति लजित मिव नयनं तव विरम
विसृज रति खेदम् ।७। श्री जयदेव कवेरिद
मनुपद निगा दित मधु रिपु मोदम् ।। जय

विपटोरि रंभास्तंभसवलितमिव कलित म

निजवाणम् । मञ्जरसि कुचकलशे विनिवेश

य शोषय मनसिजतापं ४ अधर सुधारसम

पनय भामिनि जीवय मृतमिव दासं । त्वयि वि

निहित मनसं विरहानल दग्ध वपुषमविला

सम् ।५। शशिमुखि मुखरय मणिरशना

वि॰ग॰
मी

पोल पुलके सीत्कार धारा वशा द्रवत्का जलके
लि काङ्क विकसद्दना प्रथोनाथरे स्वासोत्क
म्प पयोधरे म्हशापरि घेगान ज्रोरगो दशो हर्षी
न् कर्ष विमक्त निस्मइमनो र्थस्यो थयन्यान
नम् ॥ ७७ ॥ दोर्भ्यां संयमितः पयो धरभ
रे एग पीडितः पाणिजे रविद्धो दशनैः

नन्न रसिक जनेषु मनोरम रति रसभाव विनोदे

।८।२२।। प्रत्यूहः पुलकांकुरेण निविडा श्लेषे

नि मेषेणाव क्रीडा कूत विलोकिते धरसु पाने

कथा नर्मभिः । आनंदाधि गमेन मन्मथ क

ला युद्धेपि यस्मिन्नभूद् उद्भूतः सतयोर्बभूव सु

रतः रंभाः प्रियंभावुकः ७ नीलहृष्टि मिलनक

वि. गी.

केपि ते व्वलोन्मीलिते मलि पीतकछः रसस्रोतसां
कृतः सिध्यति १८ तस्याः पाटलपाणिजांकितमु
रो निद्राकषाये दृशौ। निर्द्धौतो धरशोणिमा वि
लुलिताः स्रस्तस्रजो मूर्द्धजाः। कांचीदामदरश्ल
थो चलमिति प्रातर्निखातैर्दृशो रेभिः कामशरै
स्तदद्भुतमभूत्पत्युर्मनःकीलितैः ८ व्यालोलः के

शनैः स्तनायरपुदः श्रोणी नटे नाहनः हस्तेनान
मितः कचेषर मधु स्पंदेन संमोहितः कान्तः का
मपि त्वंपि मापन दहो कामस्य वामा गतिः१८
वामांके रति केलि संकुलरणा रंभतया साहस
प्रायं कोन्त जयाय किंचिदुपरि प्रारंभि यत्संभ्रमा
न्निस्पंदा जघनस्थली शिथिलिता दोर्वल्लिरु

वि·रा·
गी·

स्वाधीनभर्तृका ८८ इति मनसा निगदंते स्मरमो
ते सानितां न निविन्ना गी राधा जगाद सादरमिद
मानंदेन गोविंदं ८९ विभासरागस्यताल ।
कुरु यदुनंदन चंदन शिशिरतरेण करेण पयो
धरे । मृगमदपत्रकमत्र मनोभवमंगलकल
शसहोदरे १ निजगाद सा यदुनंदने क्रीड

शपाशस्तरलितमलकैः स्वेदलोलौ कपोलौ
दृष्टा बिंबाधरे श्रीः कुचकलशरुचा हारिता हा
रयष्टिः कांची कांचिद्गताशा स्तनजघनपदे पा
णिना । च्छाद्य सद्यः पश्यंती सत्रपं मां तदपि वि
लुलित स्रग्धरेयं धिनोति ८ अथ कांतं रतिक्लां
तमपि मंडन वांछया निजगाद निराबाधा राधा

विग॰
गो॰

कमले विमले परि कल्पय नर्मजनकमल
के मले ४ मृग मद रस ललितं कुरु तिलक
मलिक रजनीकरे । विहित कलंक कलंक
मला नन विश्रमित श्रमशीकरे ५ ममरुचि
रे चिकुरे कुरु मानद मानसज धजचामरे । रतिग
लिते ललिते कुसुमानि शिखंडि शिखंडकडामरे

इति हृदयानंदने । फ्र । दयर द्रैवन लोवित क

ज्जल मज्जलय प्रियलोवने धलिजल गेजन

मे जनके रति नायक मोचने । २ । नयन ऊरेग वि

कामिनि वामकरे ऋनि मेडले । मननिज पाश

विलासकरे शुभवेष निवेशय कैडले २ भमरव

ये रवयंत्र मणी रुचिरे रुचिरे ममसन्कावे जित

विरा
गी

वस्रजा कवरीभरं कलय वलय श्रेणीं पाणौ
पदे करुनूपुरा विति निगदितः प्रीतः पीतांवरो
पि तथाकरोत् ५८ प्रातर्नीलनिचोलमच्युत
मुरःसंवीतपीतांशुकं राधायाश्चकितं विलो
क्य हसति स्वैरं सखीमंडले व्रीडा चंचलमंचलं
नयनयोराधाय राधानने स्वैरं स्मेरमुखोंऽजोऽस्तु

६। सरसघने जघने मम शंबरदारणवारणकं

दरे। मणिरशनावसनाभरणानि शुभाशय

वासय सुंदरे।७। श्रीजयदेववचसिजयदेवे सद

ये हृदयं कुरुमंडने हरिचरणस्मरणामृतकृत

कलिकलुषज्वरखंडने।८। रचय कुचयोः प

त्रं चित्रं कुरुष्व कपोलयोर्घटय जघने कांचीमं

गी.
१९१

वि॰रा॰
गी॰

मस्य वेशोद्दार जीनिस्यान कुना वयान ललना
लहेण्ण केदलिनाःस्वमुग्ध मधुरे राधामवैदे
स्या सा वेवो मधुसूदनस्य ददवदेलेम कटाक्षो
मध्यः ८७।८८। विभास रागस्यताल ।संचर
दधर सुधा मधुर ध्वनि मुखरित मोहन वंशव
लित दृगंचल मौलि कपोल विलोल वतंसे १।

जगदानंदाय नंदात्मजः ।८५। पंथेकी हतना
ग नायक फणा श्रेणी मणीनां गणे संक्रान्तप्र
ति विंब मेवलनया विभ्रद्विभु प्रक्रियो । पादेभो
हह धाग्रि वारिधि हता मदणो दिट त्वः शौनैःका
यव्यूह मिवाचरन्नु पविनी भूतो हरैः पातु वः
।८६। तिर्यक कंठ विलोल मौलि तरलो ते

गि.गो.

ल पुलक भुज पल्लव वलयित वल्लव युवति स

हस्रे १ कर चरणो रसि मणिगण भूषण किर

ण विभिन्न तमिस्रे ४ जलद पटल चलदिंदु वि

निंदक चंदन बिंदु ललाटे । पीन पयोधर परिस

र मर्द्दन निर्द्दय हृदय कपाटे ५ मणिमय मकर

मनोहर कुंडल मंडित गंडमुदारे । पीन वसन

रासे हरिमिह विहितविलासं । स्मरति मनो म
म कृतपरिहासं ।ध्रु-। चंद्रकचारुमयूरशिखं
डकमंडलवलयितकेशं । प्रचुरपुरंदरधनु
रनुरंजितमेदुरमुदिरसुवेशं २ गोपकदंबनितं
बवतीमुखचुंबनलंभितलोभं । बंधुजीवमधु
राधरपल्लवमुल्लसितस्मितशोभं ॥३॥ विपु

वि·रा·
मी

वेशमन्नुज स्नुवलि मह्लवी ह्वेदोन्सारि दंगेत
वीदित मति खेदाद्दंगेडस्यले । मामहीद्यावि
लज्ञितस्मित स्नया स्नयानने कानने गोविंदेव
ज हेदरी गाण हृते पश्पामि हच्चामिव ।८८। श्रे
तमोहन मोलिहृणी ननलन मेदार विसे स
नःस्नया कृष्ण दृष्टि हृष्ण महा मेत्रे क्रावे

मन सखि मनज सरा सहचर परिहारे । विशद

कदंब तले मिलिते कलि कलुष भयं शमयंते ।

मामपि किमपि तरंग दनंग दशा मनसा रमयं

ते ।७। श्रीजयदेव भणित मति सुंदर मोहन म

धुरिपु रूपं हरिचरण स्मरणं प्रति संप्रति पुण्य

वता मनुरूपम ।८।। १४ ।। हस्त स्रस्त विलास

विरा॰
गी॰

परि शोधयंतु सुधियः श्रीगीतगोविंदतः ९-
साधी माधीक चिंतानभवति भवतः शर्करे
कर्कशासि द्राक्षे द्रक्ष्यंति केत्वाममृत मृतमसि
क्षीरनीरं रसस्ते। माकंदं क्रंद कांता धरणित
लेगच्छंति यावद्भावे शृंगार सार स्वत म
य जयदेवस्य विषग्वचांसि ॥ ९१ ॥ः

गीर्हर्षो दृष्यद्दानव हृयमान दिविषद्वीर
दुःखापहा धेमः केसरिपोतापो हृयत्नवो ग्र
योसि वेशी रवः ।१४९। यस्मां थर्ववे कला स्वकौ
शल मन्त्र ध्यानैव यद्दैस वै यत शृंगार विवेक
नव मपिपयत काव्येषु लीला यिते । तस्मंवैज
यदेव पंडित कवेः कृसैकता नान्मनः सानेदाः

३५.
१३५.

वि॰रा
गी

भज देहो मम जितः ॥ ६२ ॥ इतिश्री वि
भास रागस्य गीतगोविंदा समाप्ते ॥

श्री भोज देव प्रभवस्य रामा देवी सुत श्रीज

य देवकस्य । पाराशरादि प्रियवर्ग कंठे श्री ।

गीत गोविंद कवि त्वमस्तु ।१२ जय श्री विन

स्तैर्महित इव मंदार कुसुमैः स्वयं सिंदूरेण

द्विपरण मुदा मुद्रित इव । भुजा पीड क्रीडा ह

त कुवलया पीडक रिणः प्रकीर्णा सृग्बिंदु

गी ङेयति भुजदेशे मुरजितः । २३ इतिश्री गीत ।
गो गोविंदे समाप्तम ॥ शुभमस्तु ॥

मादेवीसुत श्रीजयदेवकस्य पराशरादिप्रियवर्गकंठे

श्रीगीतगोविंदकवित्वमस्तु ५ इति रागिनी एवंभाव

नी गीतगोविंदपरिच्छेदः समाप्तः ॥ ॥ ॥ ॥

ཀ་ཚེ་
ཀི་

श्री भोज देव प्रभवस्य रामा देवी सुत श्री जयदे

व कस्य । परा शरादि प्रिय वर्ग कंठे श्री गीत

गोविंद कवित्वमस्तु १२ जय श्री विन्यस्तै महि

त इव मंदार कुसुमैः स्वयं सिंदूरेण द्विपरण

मुदा मुद्रित इव । भुजा पीड क्रीडा हत कुव

लया पीडकरिणः प्रकीर्णा सृग्बिंदुर्जयति

पद्मावती चरण चारण चक्रवर्ती ॥ श्रीवासुदे
व रति केलि कथासमेत ॥ मेतं करोति जय
देव कविः प्रबंधम् ॥२॥ यदि हरि स्मरणे स
रसं मनो यदि विलास कलासु कुतु हलम्
मधुर कोमल कांत पदावली शृणु तदा
जय देव सरस्वतीं ॥३॥ ॥ ॥ वाचः

अथ राग गंधार गीतगोविंद परिछेदः ताल ॥४

मेघैर्मेदुरमंबरं वनभुवः श्यामास्तमाल द्रुमैर्नक्तं

भीरुरयं त्वमेव तदिमं राधे गृहं प्रापय । इत्थं

नंदनिदेशतश्चलितयोः प्रत्यध्वकुंज द्रुमम्

राधामाधवयोर्जयंति यमुनाकूले रहः के

लयः ॥१॥ वाग्देवता चरित चित्रित चित्तसद्मा

हित विहित्र चरित्र मखेदं केशव धृत मीन श
रीर जय जग देश हरे ॥१॥ क्षिति रति विपुल
तरे तव तिष्ठति पृष्ठे धरणि धरण किण चक्र
गरिष्ठे केशव धृत कच्छप रूप जय जग देश
हरे ॥२॥ वसति दशन शिखरे धरणी तव
लग्ना शशिनि कलंक कलेव निमग्ना +

पल्लव यत्युमा पति धरः संदर्भ शुद्धिं गिरो ॥

जानीते जयदेव एव शरणः श्लाघ्यो दुरूह

द्रुतेः । शृंगारोत्तर सत्प्रमेय रचनै राचार्य गोव

र्द्धन स्पर्द्धी कोपि न विश्रुतः श्रुतिधरो धोयी

कविक्ष्मापतिः ॥ अष्टपदी ॥ राग गोंडार ताल

॥ ४ ॥ प्रलय पयोधि जले धृतवानसि वेदं वि

ग॰ गो॰
गी॰

जय जगदीशहरे ॥५॥ क्षत्रिय रुधिर मयेज
गदप गत पापम् ॥ स्नपयसि पयसि शमि
त भव तापम् ॥ केशव धृत भृगुपति रू
प जय जगदीशहरे ॥६॥ वितरसि दिक्षु
रणे दिक्पति कमनीयम् ॥ दशमुख मौ
लि बलिं रमणीयम् । केशव धृत रघु प

केशव धृत शूकर रूप जय जगदीश हरे ॥३॥
तव कर कमल वरे नख मद्भुत शृंगं दलित
हिरण्य कशिपु तनु भृंगं केशव धृत नरहरि
रूप जय जगदीश हरे ॥४॥ छलयसि विक्र
मणे बलि मद्भुत वामन पद नख नीर जनि
त जन पावन केशव धृत वामन रूप

रा गें
गी

म्लेछकुति दहनि धने कल यसि करवालं । धूम
केतु मिव किमपि करालं ॥ केशव धृत क
ल्कि शरीर जय जगदीश हरे १० श्री जयदेव
कवे रिद मुदित मुदारं । श्रृणु सुखदं शुभदं भ
वसारं ॥ केशव धृत दशविध रूप जय जग
दीश हरे ॥ ११ ॥ रागगोंयार ताल ॥ ४ ॥ श्लोक ।

ति रूप जय जगदीश हरे ॥ ७ ॥ वहसि वपुषि वि
शदे वसनं जलदाभं ॥ हल हति भीति मिलि
त यमुनाभं ॥ केशव धृत हलधर रूप जय
जग दीश हरे ॥ ८ ॥ निंदसि यज्ञ विधे रह
श्रुति जातं ॥ सदय हृदय दर्शित पशु घातं
केशव धृत बुध शरीर जय जगदीश हरे ॥ ९

गी.गो.
गी

कुंडल। कलित ललित वनमाल जय जय दे
व हरे॥१॥ दिन मणि मंडल मंडन भव
खंडन मुनि जन मानस हंस ॥ जय जय
देव हरे॥२॥ कालिय विषधर गंजन ज
न रंजन यदु कुल कमल दिनेश ॥ जय ज
य देव हरे॥३॥ मधु मुर नरक विनाशन

वेदा नद्धरते जगन्नि वहते भूगोल मुद्बिभ्रते

दैत्यं दारयते वलिं छलयते क्षत्रक्षयं कुर्वते-

पौलस्त्यं जयते हलं कलयते कारुण्यमा

तन्वते ॥ म्लेछान्मूर्छयते दशा कृति कृते

कृष्णाय तुभ्यं नमः ॥ ५ राग गंधार ताल ॥

अष्टपदी ॥ श्रित कमलाकुच मंडल धृत

गी॰गे॰
मी॰

दर श्रीमुखचंद्रचकोर ॥ जय जय देव हरे ॥७
श्रीजयदेवकवेरिदं कुरुते मुदं मंगलमुज्व
लगीतं ॥ जय जय देव हरे ॥ ८ ॥ रागगेयार
माल ॥ ४ ॥ श्लोक ॥ रासोलासभरेण विभ्र
मभृता माभीरवामभ्रुवा मभ्यर्णं परिरभ्य नि
र्भरमुरः प्रेमांधया राधया ॥ साधु त्वद्वदनं

गरुडासन । सुरकुलकेलि निदान जयजय
देव हरे ॥४॥ अमल कमल दल लोचन भवमो
चन । त्रिभुवन भवन निधान । जय जय देव
हरे ॥५॥ जनक सुता कृत भूषण जित दू
षण समर शमित दशकंठ ॥ जय जय दे
व हरे ॥६॥ अभिनव जलधर सुंदर धृत मे

गी. गो.
टी.

श्रीणीश्यामलकोमलैरुपनयन्नङ्गैरनङ्गोत्स
वं ॥ स्वच्छंदं व्रजसुंदरीभिरभितः प्रत्यंगमालि
ङ्गितः शृंगारः सखि मूर्तिमानिव मधौ मु
ग्धो हरिः क्रीडति । ८ । नित्योत्संग वसद्भुजं
ग कवल क्लेशादिवेशाचलं प्रालेय प्लव
नेच्छयानुसरति श्रीखंड शैलानिलः किंच

सुधामयमिति व्याहृत्य गीतस्तुति व्याजाउ
त्कट भावित स्मित मनो हारी हरिः पातु वः
अनेक नारी परिरंभ संभ्रम स्फुरन्मनो हारि
विलास लालसं मुरारिमारा उपदर्शयन्त्यसौ
सखी समक्षं पुनराह राधिका ॥ १ ॥ विश्ले
षा मन रंजनेन जनयन्त्यानंद मिन्दीवर

गी-गो
गीं

मुग्ध वधू निकरे। विलासिनि विलसति के
लि परे ॥१॥ पीन पयोधर भार भरेण हरिं
परि रभ्य सरागं ॥ गोप वधू रनु गायति
काचि दुदंचित पंचम रागम् ॥२॥ कापि वि
लास विलोल विलोचन खेलन जनित
मनोजम् ॥ ध्यायति मुग्ध वधू रधिकं म ।

स्निग्धरसाल मौलि मकुला म्यालोक्य हर्षोद

या उन्मीलन्ति कुहूः कुहूरिति कलोत्तालाः

पिकानां गिरः ॥ ९ ॥ अष्टपदी । राग गंधार ॥

ताल ॥ ४ ॥ चंदन चर्चित नील कलेवर पीत

वसन वनमाली । केलि चलन्मणि कुंडल

मंडित गंड युगस्मित शाली ॥ १ ॥ हरिरिह

गी·गो·
मी·

करतल ताल तरल वलया वलिकलितक
ल स्वन वंशे ॥ रासरसे सह नृत्य परा हरि ।
णा युवती प्रशशंसे ॥६॥ श्लिष्यति कामपि
चुंबति कामपि रमयति कामपि रामां पश्य
ति सस्मित चारु परा मपरा मनुगच्छति वा
माम ॥ ७ ॥ श्री जयदेव भणित मिद म

9

६

धु सूदन वदन सरोजे ॥३॥ कापि कपोल त

ले मिलि तालपितं किमपि श्रुति मूले ॥

चारु चुचुंबति नेब वती दयितं पुलकै रनुकू

ले ॥४॥ केलि कला कुत केनच काचिद

मं यमुना जल कूले ॥ मंजुल वंजुल

कुंज गतं विच कर्ष करेण दुकूले ॥५॥

रा॰ गो॰
गी॰

ता पुलकावलि रहस्यावली ॥१०॥ कंसारिरपि संसार

वासना वंध संखलां राधामाधाय हृदये त

त्याज व्रज सुंदरी ॥१॥ इतस्तत स्तामनु सृत्य

राधिका मनंगबाण व्रजखिन्न मानसः कृ

तानुतापः सकलिंद नंदनी तटान्त कुंजे वि

षसाद माधवः ॥२॥ रागगंधार ताल ॥७॥

त्तन केशव केलि रहस्यम्॥ वृंदावन विपिने
ललिते वितनोतु शुभानि यशस्यम्॥८॥ अष्टप
दी राग गंधार ताल॥४॥ विहरति वने राधा
साधारण प्रणये हरौ विगलित निजोत्कर्षा
दीर्ष्या वशेन गतान्यतः। क्वचिदपि लताकुंजे
गुंजन्मधुव्रत मंडली मुखर शिखरे लीनादी

गी.गो.
गी.

नदाननम् कुटिलभ्रुकोपभरेण शोणपद्म
मिवोपरि भ्रमताकुले भ्रमरेण तमहं हृ
दि संगता मनिशं भृशं रमयामि किंवने
नुसरामि तमिह किंवृथा विलपामि ॥
४॥ तन्विखिन्न मसूयया हृदयन्तवाक
लयामि नजानेकुनो गता सि नते

ष्टपदी रागगेयारताल॥४॥ मामियं चलिता

विलोक्य हतं वधूनिचयेन। सापराधतया मया

न निवारितातिभयेन॥१॥ हरि हरि हतादरत

यागता सा कुपितेव॥ किं करिष्यति किंव

दिष्यति सा चिरं विरहेण किंधनेन जनेन

किं मम किं सुखेन गृहेण॥२॥ चिन्तयामि

णी रमणीन ॥८॥ पाणौ मा कुरु चूत साय
कममुं मा चाप मारोपय क्रीडा निर्जित वि
श्व मूर्छित जना घातेन किं पौरुषं ॥ तस्याए
व मृगी दृशो मनसिज प्रेंखत्कटाक्षानल ज्वा
ला जर्जरितं मना गपि मनो नाद्यापि संधु
क्षते ॥१२॥ इति विलासिना हारो नायके भुजंग

नने त्रनयामि ॥५॥ हशणसे श्रवनोगतला गत

मेव किं विदयामि ॥ किंध्रे वश सेध्रमे परि

रंभणेन ददामि ॥ तमपना मपदं कदाचिनवे

हशेन करोमि ॥ देहि संदीव दर्शने मम म

न्मथेन डुनोमि ॥ वर्णिते जयदेव केन हरे

रिदं प्रवणेन किं ड बिल ममद संभव रोहि

मनायकः कुवलय दल श्रेणी कंठेन साग
रल द्युतिः मलयज रजो नेदं भस्म प्रिया रहि
ते मयि प्रहरन हरभ्रांत्या नंग क्रुधा किमु
धावसि ॥ ५ ॥ अष्टपदी ॥ राग गंधार ना
ला ॥ ४ ॥ वहति मलय समीरे मदन मुप
निधाय स्फुटति कुसुम निकरे विरहि हृद

ग·गं·
गी·

मन्मथमहातीर्थे पुनर्माधवः । ध्यायंस्त्वामनि
शं जपन्नपि तवैवालापमंत्रावलीं भूयस्त्वत्कु
चकुंभनिर्भरपरीरंभामृतं वांछति ।५। वि
किरति मुहुः श्वासा नाशाः पुरो मुहुरीक्षते
प्रविशति मुहुः कुंजे गुंजे गुंजन्मुहुर्बहुता
म्यति । रचयति मुहुः शय्यां पर्याकुले

जति ललित धाम ॥ लुठति धरणि शयने

बहु विपलति तव नाम ॥ ४ ॥ भणति कवि

जयदेवे विरहि विलसितेन । मनसि रभस

विभवे हरि रुदयत सुकृतेन ॥ ५ ॥ रागगं

धार नाला ॥ ४ ॥ श्लोक ॥ पूर्व यत्र समन्वयार

तिपते रासा दिताः सिद्धय स्तस्मिन्नेव निकुंज

गी·गो·
मी·

साकूतस्मितमाकुलाकुलगलद्धम्मिल्लमुल्ला
सितभ्रूवल्लीकमलीकदर्शितभुजामूलार्द्ध
दृष्टस्तनम् ॥ गोपीनां निभृतं निरीक्ष्य गा
मिताकांक्षश्चिरं चिन्तयन् नन्तर्मुग्ध म
नोहरो हरतु वः क्लेशं नवः केशवः ॥२॥
यमुनातीरवानीरनिकुञ्जे मन्दमास्थितम्

ऊरीकृते मदन कदन क्लान्तः कान्ते प्रियस्त
व वर्त्तते ॥११॥ तानि स्पर्श सुखानि ते च तरला
स्निग्धा दृशो विभ्रमा स्तद्वक्त्रांबुज सौरभं स च
सुधा स्यंदी गिरां वक्रिमा ॥ सा बिंबाधरमा
धुरीति विषया संगेपि चेन्मानसं तस्यां ल
ग्न समाधि हंत विरह व्याधि कथं वर्त्तते ॥१२

गा॰ गो॰
गी॰

लवंग लता परि शीलन कोमल मलय समीरे
मधुकर निकर करंबित कोकिल कूजित कुं
ज कुटीरे ॥ १ ॥ विहरति हरिरिह सरस वसंते
नृत्यति युवति जनेन समं सखि विरहि जन
स्य दुरंते ॥ उन्माद मदन मनोरथ पथिक व
धूजन जनित विलापे । अलिकुल संकुल

प्राइ प्रेम भरे आनन्दमाधवे राधिका सखी।

वसंते वासंती कुसमसुकुमारै रव यवैभ्रम

न्ती कान्तारे वहु विहिन कृस्नानु शरणा प्र

मेदे कंदर्प ज्वर जनित चिंता कुल नया व

लद्बाधां राधां सरस मिदमूचे सह चरी ॥

राग गंधार ताल ॥४॥ अष्टपदी ॥ ललित

गी·गो·
गी

तूण विलासे ॥४॥ विगलित लेजित जगद व
लोकन तरुण करुण कृत हासे ॥ विरहि नि
कृन्तन कुन्त मुखा कृति केतकि दन्तुरिताशे
॥५॥ माधविका परिमल ललिते नव मा
लति जाति सुगन्धौ ॥ मुनि मनसा मपि
मोहन कारिणि तरुणा कारण बन्धौ ॥६॥

17 ८

कुसुम समूह निराकुल बकुल कलापे ॥२

मृगमद सौरभ रभस वशंवद नव दल माल

तमाले ॥ युव जन हृदय विदारण मन सिज

नखरुचि किंशुक जाले । मदन महीपति

कनक दंड रुचि केसर कुसुम विकासे मि

लित शिलीमुख पाटल पटल कृत स्मर

दरविदलित मल्ली वल्लि चंचत्पराग प्रकटित प
टवासै र्वासयन्काननानि । इहहि दहति चेतः
केतकी गंधबंधुः प्रसरद सम बाण प्राण व
द्गंधवाहः ॥ २ ॥ उन्मीलन्मधुगंधलुब्ध मधुप
व्याधूत चूतांकुर क्रीडत्कोकिल काकली क
लकलै रुद्गीर्णकर्णज्वराः नीयंते पथिकैः

स्फुर दति मुक्त लता परि रम्भण मकुलित
पुल कित चूते ॥ वृंदावन विपिने परिसर
परि गत यमुना जल पूते ॥ श्री जयदेव भणि
ते मिद मुदयति हरि चरण स्मृति सारं ॥ स
रस वसंत समय वन वर्णन मनुगत मद
न विकारं ॥ ८ ॥ राग गंधार माला ॥ श्लोक

गी·गो·
गी·

रागगंधारलाल ॥४॥ अष्टपदी ॥ निंदति चंद
नमिंदु करणमनु विंदति खेदमधीरं व्याल
निलय मिलनेन गरल मिव कलयति मलय
समीरं १ माधव मा विरहे तव दीना ॥ मन
सिज विशिख भयादिव भावनया त्वयि ली
ना ॥ अविरल निपतित मदन शरादिव भव

19

कण्ठे कण्ठ मणि ध्यानाव ध्यानतरणि प्रभ प्रभास

म मम ग[illegible] रसोल्लासै रसी वासराः ॥२२॥ इन्द्रा

लोक स्लोक स्तव कन वका शोक लतिका । वि

काशः काशारो पवन पवनोयं व्यथयति । अपि

भ्रामं ऽङ्गी रागिम रमणी यान सङ्कल । सम्

ति स्मृत्नानं सवि शिविविराणीयं स्थवयति २२

गी.गो.
गी

व विकट विधुंतुद दन्त दलन गलितामृतधा
रम॥४॥ विलिखति रहसि कुरंगमदेन भवं
तम सम शर भूतं प्रणमति मकरमधो वि
निधाय करे च शरं नवचूते ५ प्रतिपदमिदम
पि निगदति माधव तव चरणे पतिताहं।त्व
यि विमुखे मयि सपदि सुधानिधिरपि तनुते

दव नाग विशाले । स्वहृदय मर्म्मणि वर्म्म क
रोति सजल नलिनी दल जाले ।१। कुसुम वि
शिख शरतल्प मनल्प विलास कला कमनी
यं । व्रत मिव तव परिरम्भ सुखाय करोति
कुसुम शयनीयं ।२। वहति च गलित विलो
चन जलधर मानन कमल मुदारम् विधुमि

रा.गों.
वी.

आवासो विपिनायते प्रिय सखी मालापिजा
लायते। तापोपि श्वसितेन दावदहनज्वाला
कलापायते। सापि त्वद्विरहेण हन्त हरिणी
रूपायते हा कथं कंदर्पोपि यमायते विरच
यन् शार्दूलविक्रीडितं॥ रागगोंधारमाल
॥९॥ अष्टपदी॥ स्तनविनिहितमपि हारमु

21

नवदाहे ६ ध्यान लयेन पुरः परिकल्प्य भवंत

मतीव दुरापं । विलपति हसति विषीदति रो

दति चंचति मंचति तापं ।७। श्री जयदेव भणि

त मिद मधिके यदि मनसा नट नीयं । हरि

विरहा कुल वलव युवति सखी वचनं पठ

नीयम ।।८।। रागगंधार ताल ।।७।। श्लोक ।

गी गो

मिव विगलित नाले।४। नयन विषयमिव

किशलय तल्पे। कलयति विहित हुताश

न कल्पे।५। त्यजति न पाणि तलेन कपोलं

बाल शशिन मिव सायम लोलं।६। हरिरि

ति हरि रिति जपति सकामं। विरह विहि

त मरणे व निकामं ७ श्रीजय देव भणित

दारे मा मनुते कृशानन रिवमारे राधिका विर
हे नव केशव । सार सम सुधा मणि मलयज
पंकं पश्यति विषमिव वपुषि सशंकम ॥२
श्वसित पवन मनुपम परिणाहम ॥ मदन
दहन मिव दहति सदाहम ॥३॥ दिशि दि
शि किरति सजल कण जाले ॥ नयन नलिन

गी· गो·
गी·

प्रमीलति पतत्युद्याति मूर्छत्यपि एतावत्यत
नुज्वरे वर तनुर्जीवेन्न किन्ते रसा त्स्वर्वैद्य प्रति
म प्रसीदसि न त्यक्तो ऽन्यथा हस्तकः २९ ॥
कंदर्प ज्वर संज्वरा तुरतनो राश्चर्य मस्याश्चिरं
चेत श्चंदन चंद्रमः कमलिनी चिंतासु सं
ताम्यति किंतु क्लांति रसेन शीतलतरं त्वा

मिति गीते ॥ श्रीवियत केशव पद शरणीते
राग गंधार ताल ॥ ४ ॥ श्लोक ॥ स्मरतुरां दै
वत वैद्य हृद्य त्वदंग संगा मृत मात्र साध्याम्
विमुक्त बाधां कुरुषेन राधा मुपेंद्र वज्रा दपि
दारुणोसि ॥ २५ ॥ सा रोमांचति सीत्करोति
विलपत्युत्कंपते ताम्यति ध्यायत्युद्भ्रमति

रा॰गो॰
गी॰

नेपथ्यो चित नीलरत्न मवनी भागावनाबोन
का॰ ॥ लंबंद वज संदरी जन मन लोक प्रदोष
श्चिंदं केश पंत्रन पूम केन रचन नांदेवकीनं
दनः ॥२४॥ ग्रथ्यतां ... नगांको चिर मन
रंका ललना रहे दृष्टा ॥ नखिविते गोविंदे मन
सिज मन्दे मली आह ॥३॥ श्रंगेषा भरणं क

मेकमेव प्रिये ध्यायन्ती रहसि स्थिता कथमपि
दीयतां न ते प्राणानि ॥२७॥ तां मपि विर
ह[illegible]व्यथान मेहे नयन निमीलित विन्नया न
याते। [illegible]मसि कथमसौ रसाल शाखो विर
हिरहेण विलोक्य भक्षितामे ॥२८॥ तथा
मथय मकोरविंद मधपस्तैलोकमे लसयली

रा॰गे॰
गी॰

झलेख्या हरंती। नवकि नव वियाया मन्दकंद
पि विना रम जल निधि मग्ना ध्यान लग्ना म
गाही ॥ ३३ ॥ राग केदार ताल ॥ ६ ॥ ध्रुव
पदी ॥ पशपति दिशि दिशि वहसि भवेत
त्वद यर मधुर मधूनि पिवंतम ॥ १ ॥
नाथ हरि सीदति राधावासग्रहे ॥ त्वद

25 २५

योनि वङ्क्षणः पंचेपि संचारिणि आमेन्त्वामपरि
शेकुते विकन्नते शय्यां चिरं ध्यायति ॥ इत्या
कल्प विकल्प तल्प रचना संकल्प लीलाश
त । व्यासक्तापि विना त्वया वरतनु नैषा
निशां नेष्यति ॥ ३ ॥ विपुल पुलक पालिः
स्फीत सीत्कार मन्तर्जनित जडिमकाकुव्या

गी गो
गो

सखी मन्नवारम् ॥५॥ स्निग्धति द्रवति जल
धरकलाम् ॥ हरिरूपगत रुचि तिमिर मन
लो ६ भवति विलेविति विगलित लज्जा । वि
लपति रोदति वासक सज्जा ॥७॥ श्रीजय दे
व कवेरिद मदितम् ॥ रसिक जनन्तनुता
मपि मदितं ॥८॥ रागगौ यारमाल ॥४॥ श्लोक

भि शरण रभसेन वलंती पतति पदानि कि
यंति वलंती ॥२॥ विहित विशद विष किशल
य वलया । जीवति परमिह तव रति कलया
॥३॥ मुहुर वलोकित मंडन लीला मधुरि
पु रह मिति भावन शीला ॥४॥ त्वरित मुपै
ति न कथ मभिसारम् ॥ हरि रिति वदति

गी॰गो॰
गी॰

इव स्फुट लांछन श्रीः ॥ वृंदावनांतर मदीपय
दंशु जालै र्दिक सुंदरी वदन चंदन बिंदु रिंदुः
॥३४॥ भ्रमरति शशधर बिंबे विहित विलं
बेच माधवे ॥ विधुरा विरचित विविध विला
पं सा परिता पंच कारोच्चैः ॥३५॥ विरह पा
ण्डु मुरारि मुखांबुज द्युतिरयंतनपिवेद

किं विश्राम्यसि कृष्ण भोगि भवने भांडीरभूमी
रुहे । भ्रातर्यासि न दृष्टि गोचर मितः सानंद नं
दास्पदम ॥ राधाया वचनं तदध्वग मुखान्नं
नंदांति के गोपतो गोविंदस्य जयंति सायम
तिथिः प्राशस्त्य गर्भा गिरः ॥३३॥ व्रजान्त
रे व कुटला कुल वर्त्मपाता संजात पातक

रा॰गे॰
गी॰

म्रतरा श्रियिख्या। किंने कतोन भगिनि तम
या नरंगै रंगानि खिव मम शाम्यत्र देह दा
रू: ॥ राग गंधार नाल ॥५॥ अष्टपदी ॥
कथित समये पि हरि हरहरन ययौवनं मम
विफल मिद ममल रूप मपि यौवने ॥२॥
यामि ह्रेक मित्र शरणं सावी जन ववन +

28

नो वियुरनीव ननोनि मनोभवः सुहृदये हृद
ये मदन बाणाम् ॥ ३६ ॥ मनोभवा नेदन चेद
ना निल प्रसीदये दक्षिणा मेव वामताम् ॥ त
णं जगन् प्राणा वियाय माधवे ध्रुवो मम प्राण
हो भविष्यति ॥ ३७ ॥ कथं वियेहि मल
या निल पंच बाण प्राणान् गृहाण नयदह

गा·गं·
गी·

हृतकामिनी ॥४॥ अरुह कलयामि वलया
दिमणि भूषणं ॥ हरिविरह दहन वहनेन
बहुदूषणं ॥५॥ कुसुम सुकुमार तनुमतनु
शरलीलया ॥ स्रगपि हृदि हन्ति मामति
विषम शीलया ॥६॥ अह मिह निवसा
मि न गणित वनवेतसा ॥ स्मरति मधु

वेचिना। यदनु गमनाय निशि गहन मपि

शीलितं। तेन मम हृदय मिद मसम शरकी

लितम्॥२॥ मम मरण मेव वर मति वि

तथ केतना किमिति विषहामि विरहानल

मचेतना।३। मामहह विधुर यति मधुरम

धु यामिनी। कापि हरि मनु भवति कृत सु

गी.गो.
मी.

इत्यंएवं कथा भिरन्य मनसो विलिख्य वक्षोवले

राधाया स्तन कोरको परि मिलन्नेत्रो हरिःपा

तुवः तत्किंका मपि कामिनी मभिसृतः

किंवा कला केलिभि र्वद्धो वंधुभिरन्ध का

रिणि वना भ्यर्णे किमुद्भ्राम्यति कांतः

क्लांत मना मना गपि पथि प्रस्था

हृदये मा मपि नवेतसा ।।७।। हरि चरण शर
ण जयदेव कवि भारती ।। वसतु हृदि युव
ति रिव कोमल कलावती ।।८।। राग गंधा
र ताल ।।४।। श्लोक ।। त्वाम प्राप्य मयि
स्वयंवर परां क्षीरोदे तीरोदरे । शंके सुंदरि
काल कूट मपिवन मूढो मृडानी पतिः

रा· गो·
गी·

वित वेषा गलित कुसुम दर विलुलित केषा ।।२।
कापि मधुरिपुणा विलसति युवतिरधिकगु
णा ।। हरिपरिरंभण वलित विकारा । कुच
कलशोपरि तरलित हारा ।४। विचल दल
क ललितानन चंद्रा । तदधरपानरभसकृ
त तंद्रा ।३। चंचल कुंडल ललित कपो

31

नमेबालमः मेकेनी क्लन मेज वेजललना
उंजेपि यन्त्रागनः ॥४॥ ग्रष्या गनो माय
व मन्तरेण मावो मिमे वीद्य विषादमको
विशेक माना रमिने कयापि जनाई ने रुष
व देनटाह ॥४५॥ रागगंधार गीतगोविंद
नाल ॥४॥ ग्रष्टपदी ॥ स्मर समरोचन विर

गी·गो·
गी·

श्री जयदेव भणित हरि रमितम् ॥ कलिकलु
षे जनयतु परिशमितं ॥८॥ राग गंधार ताल
॥३॥ अष्टपदी ॥ सोरठ ॥ समुदित मदने रम
णी वदने चुंबन वलिताधरे । मृगमद तिलकं
लिखति सपुलकं मृगमिव रजनीकरे ॥१॥
रमते यमुना पुलिन वने विजयमुरारि रद्य

ला। स्खलित रशन जघन गति लोला॥४॥
दयित विलोकित लज्जित हसिता॥ बहुवि
ध कूजित रति रस रसिता॥५॥ विपुल पुल
क पृथुवेपथुभंगा। श्वसित निमीलित वि
कसदनंगा॥६॥ श्रमजल कणभर सुभग
शरीरा। परिपतितोरसि रतिरणधीरा॥७॥

ले करतल नलिनी दले । मरकत वलयम्मधु
कर निचये वितरति हिम शीतले ॥४॥ रतिगृ
ह जघने विपुलपघने मनसिज कनकासने
मणिमय रशने तोरण हसने विकिरति
कृत वासने ॥५॥ चरण किसलये कम
ला निलये नखे मणि गण पूजिते ॥

ना। वनचय रुचिरे रचयति विकरे नवलित न
रुणा नने कुरुवक कुसुमे चपला सुखमे व
ति पति सुरा कानने।२। वहयति रुचिने कु
वशग नागने सुरा मद रुचि रुषिते। मशि
सर ममले नारक पटले नखपट शशि भू
षिते।३। जित विम शकले सुड भजशग

गी· गो·
टी·

वके ॥८॥ राग गंधार ताल ॥१॥ अष्टपदी ॥

अतिस तरल कुवलय नयनेन तपति न सा

किसलय शयनेन ॥ १॥ सखि या रमिता व

न मालिना ॥ विकसित सरसि जललित

मुखेन ॥ स्फुटति न सा मनसिज विशिखे

न ॥२॥ अमृत मधुर तर मृदु वचनेन ॥ ज्व

बहिरप वरणं यावक भरणं जनयति हृदि
योजिते ॥ ६ ॥ रमयति सुभृशं कामपि सुदृ
शं खल हलधर सोदरे ॥ किमफल मव सं
चिर मिह विरस वद सखि विटपोदरे ॥ ७ ॥
इह रस भणने. मधुरिपु पद सेवके ॥ कलि
युग चरितं न वसतु दुरितं कविनृप जयदे

गी॰ गो॰
गी॰

व जनवर नरुणेन वरुतिनमाकज मतिकरु
णेन॥७॥ श्री जयदेव भणित वचनेन प्रवि
शतु हरिरपि हृदयमनेन॥८॥ राग गंधार
ताल॥३॥ श्लोक॥ नायातः सखि निर्दयो
यदि शठ स्त्वन्दूति किं दूयसे। स्वच्छंदम्बहु
वल्लभः स रमते किन्तत्र ते दूषणं॥ पश्याद्य

लति नसा मलयज पवनेन ।३। स्थल जलरु

ह रुचि कर चरणेन ।। तपति नसा हिमक

र किरणेन ।४।। सजल जलद समुदय रुचि

रेण । दहति नसा हृदि विरह भरेण ।।५।।क

नक निकष रुचि शुचि वसनेन ।। श्वसिति न

न सपरिजन हसितेन ।६।। सकल भुव

गा॰गं॰
गी॰

हे केशि मदन मदारं ॥ रमय मया सह मदन म
नोरथ भावितया सविकारं ॥ प्रथम समागम
लज्जितया पटु चाटु शतै रनकूलं मृदु मधुर
स्मित भाषितया शिथिली कृत जघन दु
कूलम् ॥ २ ॥ किसलय शयन निवेशि
तया चिर मुरसि ममैव शयानं कृत परि

यद्यपि संगमाय दयि नस्या कृष्णमार्गे गुरोह

केदार्णि भरा दिव स्फुट दिदं चेनः स्वयं यास्य

ति ॥४२॥ रागगंधार ताल ॥ अष्टपदी ॥

निभृत निकुंज गृहं गतया निशि रहसि नि

लीय वसन्तं चकित विलोकित सकल दि

शा रति रभस वशेन हसन्तम ॥१॥ सखि

गी॰ गो॰
गी॰

घन स्खलन भारे ॥५॥ चरण रणित मणि नूपुरया
परि पूरित सुरत वितानम् ॥ मुखर वि स्रंख
ल मेखलया सकच ग्रह चुंबन दानम् ॥६॥
रति सुख समय रसालसया दर मुकुलि
त वदन सरोजम् ॥ निस्सह निपतित तनु
लतया मधुसूदन मुदित मनोजे ॥७॥ श्री

रेभसा त्रेवनया परिरभ्य कृताधरपानं ॥३॥ श्ल

स निमीलित लोचनया पुलकावले ललित

कपोलम ॥ श्रम जल शकल कले वरयावर

मदन मदादति लोलं ॥ कोकिल कल रव

कूजितया जित मन सिज तंत्र विचारं ॥ श्ल

थ कुसुमा कुल कुंतलया नख लिखित

रा·गं·
गी·

पैं रौव नदर्षिना परनटी सिंहर् मङो किनो वाइ
वैं पतनो मनेो नभनः श्रेयांसिकेसहिषः॥
॥४३॥ ग्रथ कय मपि यामिनं विनीय स्म
र प्राव् जर्जरिमापि स्मा प्रभाते॥ अन्त नयव
चनम्बदनले मघे प्राण मपि प्रिय माह
सास्य स्वयम॥४४॥ राग गेयारनाल॥

जय देव भणित मिद मति शाय मधु रिपुनिधु
वन शीलम् ॥ सुख मुत्कंठित राधिकया क
थितं वितनोतु सलीलं ॥८ अष्टपदी ॥ राग
गंधार ताल ॥ ॥ श्लोक ॥ वृष्टि व्याकुल
गोकुला वनवशा उद्धृत्य गोवर्द्धने विभ्रद
लव मेदरी भिः रधिका नंदा च्चिरं चुंवितः द

गी.गो.
गी.

न विलोचन चुंवन विरचित नील मरूपं दश
न वसन मरुणं नव कृष्ण तनोति तनरनु
रूपम् ॥२॥ वपु रनु हरति नव स्मर संग र
खर नख रक्षत रेखे ॥ मरकत शकल क
लित कल धौत लिपे रिव रति जय लेख
म् ॥३॥ चरण कमल गल दलक्तक सिक

माह ॥ १ ॥ अष्टपदी ॥ रजनि जनित गुरु जाग
र राग कषायित मलस निमेषं वहति नय
न मनुराग मिव स्फुट मुदित रसा भिनिवे
शं ॥ १ ॥ याहि माधव याहि केशव मा वद कै
तव वादम् ॥ तामनु सर सरसीरुह लो
चन या तव हरति विषादम् । कज्जल मलि

गी.गो.
मी.

कथ मथ वंचयसे जन मन गतम सम शरज्व
र दूनम ॥६॥ भ्रमति भवान बला कवला
य वनेषु किमत्र विचित्रं प्रथयति पूतनि
कै वदधू वध निर्दय बाल चरित्रम ॥७॥
श्री जय देव भणित इति वंचित खंडि
त युवति विलापम ॥ शृणुत सुदा

मिदं तव हृदयमुदारं ॥ दर्शयतीव वहिर्मदन
द्रुम नव किसलय परिवारम् ॥ ४ ॥ दशन
पदं भव दधरगतं मम जनयति चेतसि खे
दम् ॥ कथयति कथ मधुनापि मया सह
तव वपुरेतदभेदम् ॥ ५ ॥ वहिरिव म
लिन तरं तव कृष्ण मनोपि भविष्यति नूनं

गी· गो·
गी·

पद्मा पयो धर तटी परि रम्भ लग्न काश्मीर
मुद्रित मुरो मधुसूदनस्य ॥ व्यक्ता नुरा
ग मिव खेलद नंग खेद स्वेदाम्बु पूर मनु
पूर यतु प्रियम्वः ॥ ४६ ॥ प्रशान्तरे मस्
ल रोष वशा मसी मनिः श्यामास् निस्म
ह मंवी मम्ब्रवी मपेना मम्बीडमी ।

मधुरे विवुधा विवुधालय तोपि ॥ ८ ॥ अष्टपदी
रागं भैयार ताल ॥ ३ ॥ श्लोक ॥ तवेदं पश्यंत्याः
प्रसर दनुरागं वहिरिव प्रिया पादा लक्तछु
रित मरुण छाय हृदयम्ममाद्य प्रख्यात
प्रणय भर भंगेन कितव त्वदा लोकः
शोका दपि किमपि लज्जां जनयति ॥ ४५

रा.गं.
मी.

येहि मथि लिटिय देन देश दोवीलि वेयनि
विडु सन पीडनालि वेहि त्वमेव मद मेव
य पंचवाण चंडाल कोंड दलना दसव:
थयांव ।।५।। घाणि मथि नव भाति भेत्र
दभस्रव जन मोह कवाल कोल सपी ।।
लडु दिति भय भंजनाय हनां त्वद थवसी

52

त्तिन सावी वदने दिनोते सानंद गद्गद पदं
हरि विष्णवाव ॥७॥ परि हर कृष्ण नेक श्री
के स्वया स्मनें धन स्मन जघनस्य क्रोने प
दनव काशिनि विशनि विनतो रमो यन्मो
नकोपि भमांनरं श्रम यिनि परी रम्भा
रम्भे वियेहि वियेयनाम् ॥८॥ मध्ये वि

सि यदि किंचिदपि दन्त रुचि कौमुदी हरति
दरतिमिर मति घोरम् ॥ स्फुर दधर सीधवे
तव वदन चंद्रमा रोचयति लोचन चकोरं
२॥ प्रिये चारुशीले मुंच मयि मानमनिदानं
सपदि मदनानलो दहति मम मानसं देहि
मुख कमल मधु पानं । सत्यमेवासि यदि

य समैव सिद्धिमेवः ५ ग्रथयति हयमेने

नल्लिश्र ंवैयपंव मंनरुणि मधुरा लापै स्ना

पै विनोदय दक्षिणिः सम्नावि विस्तवी भा

वनावद्धि मंवन मेवमे स्वय मति शाय स्वि

रय स्मृपै प्रयोग स्वप स्थितः ॥ रागगंधा

र ताल ॥२॥ गीतगोविंद ॥ गुर्जरी ॥ वट

गी·गो·
गी

नीलनलिनाभमपि तन्वि तव लोचनं धारयति
कोकनदरूपं ॥ कुसुमशरबाणभावेन
यदि रंजयसि कृष्णमिदमेतदनुरूपम।
४॥ स्फुरतु कुचकुंभयोरुपरि मणिमं
जरी रंजयतु तव हृदयदेशं ॥ रसतु र
सनापि तव घनजघनमंडले घोषय।

सुदति मयि कोपिनी देहि खर नखर शरघा
तम् । घटय भुज बंधनं जनय रद खंडनं ये
न वा भवति सुखजातं ॥२॥ त्वमसि मम भू
षणं त्वमसि मम जीवनं त्वमसि मम जल
धिरत्नम् ॥ भवतु भवतीह मयि सततमनु
रोधिनी तत्र मम हृदय मति यत्नम् ॥३॥

रा·गं·
गी·

करतलं नलो हरत नइपाहिन विकारं ॥८॥३

नि वटल चाइ पइ चारु सर वैरिणो राधिका

मयि वचन जातं ॥ जयति पद्मावती रमण

जयदेव कवि भारती भणित मति शातम्

रागी वंधार गीत गोविंद नाल ॥२॥ श्लोक ।

वं हृन्न श्रुति वंथ वंयवोयमथुरा·स्निग्धमथ

45 ४५

रा.गो.
गी

वंशी कवित्र स्त्रिय लोके कवा वंशो विलय यो

वंशे वसंमिनत्वि स्वच्छी गता ॥५२॥ सूपल

वे यन्त्रवंशोगान वेगिनानि वालागता: स

वला पालि रिति स्मरेला ॥ नखा मनेन जरा

जंगम देवताया महाशक्ति निर्जित जगंति

किमपितानि ॥५३॥ मुखापि निहन्ता: कटाक्ष

क च्छविः गंडे चंडि चकास्ति नील नलिन श्री
मोचने लोचने । नासाभ्येति तिल प्रसून पद
वीं कुंदाभ दंति प्रिये प्रायस्त्वन्मुखसेवया
विजयते विश्वं स पुष्पायुधः ॥५१॥ दृशौ तव
मदालसे वदन मिंदु संदीपनं गतिर्जन म
नो रमा विजित रंभ मूरुद्वये रतिस्तव कला

गी·गो·
टी·

मामथ मन्मथ गविन्नो रतिरति रसभिन्नो विषा
द सम्पन्नाम्॥ ब्रजविजितन हरि चरितेन कल
हान्तरिता सवावे रहः संवी।५८। त्रियये
यमहषा त्रियमणा मतिलधाभियहागिरा
हेषस्यामि यडन्मदे विस्रवेनो यामकिनक्ति
स्रिये। नयुमे विपरीतकारिणि नव स्त्री ट्वे

विषिवो निर्मान मर्मच्छो श्यामाङ्गा कुटिल:
करोति करुणी भगोति मारोपयमे । सोऽहं नावद्ये
व नलिनवने विनायके भगवान महत्न: सु
द मेदल स्नव कर्ण प्राणे निम कीडति ॥ ४ ।
मालिनी मात्र विधं सदलो जयति सोऽगते ॥
सत्वेश्वरा समयमहन: श्रीमज्ञोपालकथनि: १५५

रा॰ गं॰
गो॰

फली ऊकषे ऊच कलेशं ॥३॥ कलि न कथि
न मिट मन पट मलिनं ॥ मापति हरि हर मति
माय कविनं ॥ किमिनि विषाद सिये दिषि
विकला ॥ वहसनि शुवनि सभा नव विकला
४॥ ऊनयनि मनुनि किमिनि शुक वेदम ॥
शुण मम वचन मनी हित भेदं ॥५॥ हरि

ड वधो विधे श्रीतोष्ठ स्लयनो ह्रिमेङ्गन वद्दः
क्रीडा खदे यालनाः ॥ ५७ ॥ सरा गेयार ष्ठ
ह्रपदी माल ॥ ३ ॥ हरि रमि सखनि वहति
स्तु पवने किम परमपिक स्तवि सवि भ
वने ॥ ॥ माथवे माक्तक मानि नि मान मये ॥
माल फला दपि गुह मनि सखसे ॥ किम वि

रा.गं.
गी.

वचन विष दिव सावी सेवा मोयं व्हावी दहिमा
निलें विष मिव स्वया रश्मि यंस्मिन् इनोति
मनो गने ॥ हृदय मध्ये तस्मिन्नेव प्रनवि
लने दलान कंवलय दशा स्वामः कामो
निकाम निरंकुशः ॥५८॥ गगन यनि गुणा
यामे भामे भ्रमा दपि नेहने वहनि चप ।

न मन्मथ निदेशे ॥ ५ ॥ स्थल कमल गंजनं
मम हृदय रंजनं जनित रति रंग परभागम
भण मसृण वाणि करवाणि चरण द्वयं
सरस लसद लक्तक रागम् ॥ ६ ॥ स्मर गर
ल खंडनं मम शिरसि मंडनं देहि पद प
ल्लव मदारं ॥ ज्वलति मयि दारुणो मदन

गी· गो·
गी

द्विषे द्विषे मन्दगान्के मम्पालम भूजित मि
ति व्या मोहू कोलाहलः ॥६०॥ सुचिर मनुन
येन प्रीणयित्वा मृगाक्षीं गत वति कृतवेशे
केशवे कुंज शय्यां रचित रुचिर भूषां दृष्टि
मोषे प्रदोषे स्फुरति निरव सादां कापिरा
धां जगाद ॥६१॥ ॥ सामोद्दस्मति वदन

50 ५

रिनोषे दोषे विमोचयति हरनः ॥ प्रवतिष्ठ वलहृ
लो हृलो विहारिणि मोचिना प्रनरापि मनो
वामे कामे करोति कदोमिकिं ॥ ५९ ॥ श्रीनि
म्लनमो हरिः कुवलया पीडेन साई रमो
राधा पीन पयोधर स्मरणा हृत्कुम्भेन संभे
दवान ॥ यत्र स्थिययति मीलति नगामथ

गा·गे·
गी·

मनो रथेनच सर्मे प्राने नमः स्रोद्दनो कोकाने
ककण स्वेनेन सदृशी दीची सद ध्यानीना न
नृगये विफले विले विले नमस्ते स्योमि
सावद्यः ॥६४॥ प्रश्नेष दन्न त्रुबना स्न
नवो लेवा दन स्वानज प्रोदोथा दन्न से
भ्रमा दन्नसना रंभादन्न पीनयोः प्रमास्थे

नि प्रियकथा प्रसंगा मालिंगनैश्चीनि यास्य
ति रंस्यते सखि समागत्येति चिंताकुलः ॥
स त्वां पश्यति वेपते पुलकयत्यानंदति स्वि
द्यति प्रत्युद्गच्छति मूर्छति स्थिर तमः पुंजे
निकुंजे प्रियः ॥१८॥ त्वद्वाम्येन समं सम
ग्र मधुना तिग्मांशुरस्तंगतो गोविंदस्य

गी॰गो॰
गी॰

ध्वांतं नीलनिचोल चारु सुदृशं प्रत्यंगमालिं
गति ॥६५॥ काश्मीर गौर वपुषा मभि सारिका
णा माबद्ध रेख मभितो रुचि मंजरीभिः ॥
एतत् तमाल दलनील तमं तमिस्रं तत्प्रेम
हेम निकषो पलतां तनोति ॥६६॥ राग
गंधार ताल ॥१॥ अष्टपदी ॥ विर चित चा

मनयो र्धमाक्षिलिनयोः संभाषणैरोजीनतो

हृदये गिरः कोन कोन नमस्मि वीडविमि

श्रोत्रसः ॥१८५॥ प्रदतो र्विलिप इजनं प्रवणा

ये स्तापिठ गङ्गावली मूर्ध्निशफाम सखोजनम

स ऊष्वयोः कलहारिका पञ्चकम ॥ पूर्णो नाम

मि साव मला हृदं विपद्ध्य विजंज्ञे सोवि

ग·गो·
गी·

स्फुरत रमणीय नरे नकणी जन मोहन मधुवि
पु रावे ॥ कुसुम शरा सन शासन वंदिनि पि
क निकरे भज भावं ॥३॥ अनिल तरल कि
सलय निकरेण करेण लता निकुरंबे ॥ प्रेर
ण मिव करभोरु करोति गति प्रति मंचवि
लंबम ॥४॥ स्फुरित मनंग तरंग वशा दिव

वचन रचनं चरणे रचित प्रणि पातनम्॥ सम्प्र
ति मंजुल वंजुलसी मनि केलि शयन मनु
यातम्॥ २॥ मुग्धे मधु मथन मनुगत मनु
सर राधिके॥ घन जघन स्तन भार भरे दर
मन्थर चरण विहारं॥ मुखरित मणि मंज
री मुपैहि विधेहि मराल विकारम्॥ २॥

गा·गं·
गी·

लय कणितै ववदीयय हरि मपि निज गति
शीलम् ॥७॥ श्रीजयदेव भणित मधरी कृ
त हार मुदासित वामम् ॥ हरि विनिहित म
नसा मधि तिष्ठतु कंठ तटी मविरामम् ॥८॥
रागगंधारतालाः ॥२॥ श्लोक ॥ सामान्दस
ति वदति प्रियकथ्या प्रसंगमालिंगनै श्री

स्फटिक हरि परिरंभं ॥ सदा मनो हर हार विम
ल हस्त धारं ममे ज्वल कंभम् ॥५॥ श्रयि मानम
खिल माली भिरि वंतव बडु वपिवनि ददा म
जम् ॥ वंडि वणान वशाना वव डिंडिम मभि
म च लम लजम ॥६॥ स्मर शर स भगा मवेव
मली मवलेख कवेणा सलीलम ॥ वल व

गी॰ गो॰

गमन विलंवन मनुसरतं हृदयेशं ॥१॥ धीरस
मीरे यमुना तीरे वसति वने वन माली ॥ गोपी
पीन पयोधर मर्दन चंचल कर युग शाली ॥
नाम समेतं कृत संकेतं वादयते मृदुवेणुं ।
बहु मनुते ननु ते तनु संगत पवन चलि
त मपि रेणुम ॥२॥ पतति पतत्रे विचलित पत्रे

नियास्यति वेश्मनि सखि समायास्यति विनाकृ

तः ॥ मन्वास्य शृणोति वेपते पुलकयत्यानन्द

ति श्विद्यति प्रत्युद्गच्छति मूर्छति स्थिरतमः

पुंजे निकुंजे प्रियः ॥ ११ ॥ रागगोंयार नाल

॥१२॥ अष्टपदी ॥ रतिसुखसारे गतमभिसा

रे मदनमनोहरवेषम् ॥ नकुरु नितंबिनि

गी॰गो॰
गी

परीते राजसि सुकृत विपाके ॥५॥ विगलित
वसनं परिहृत रसनं घटय जघनं मपिधानं
किसलय शयने पंकज नयने निधि मिव हर्ष
निधानं ।६। हरि रभि मानी रजनि रिदानी मि
य मपि याति विरामम ॥ कुरु मम वचनं स
त्वर रचनं पूरय मधु रिपु कामं ।७॥ श्री जयदे

शंकित भवदुपयानम् ॥ रचयति शयने सच
कित नयने पश्यति तव पन्थानम् ॥३॥ मु
खरमधीरं त्यज मंजीरं रिपुमिव केलिसुलोलं
चल सखि कुंजं सतिमिर पुंजं शीलय नील
निचोलम् ॥४॥ उरसि मुरारे रुपहित हारे घ
न इव तरल बलाके ॥ तडिदिव पीते रति वि

रा॰गं॰
गी॰

स्मरति सुभगः सन्यामाणपन्नैरेव कृतान्येता
म् ॥ ७ ॥ हारावली तरल कांचन कांचिदाम
मंजीर कंकण मणि द्युति दीपितस्य ॥ द्वारे
निकुंजनिलयस्य हरिं निरीक्ष्य व्रीडा वतीम
थ सखी निजगाद राधाम् ॥ ६८ ॥ रागगं
याद माल ॥ ३ ॥ अष्टपदी ॥ ॥ मंजुतर

57 ५७

व ह्लन हरि सेवे भगतिन परमणीयम्॥ श्र
दिन हृदये हरि मणि मटयं नमन सुह्लन क
मनीयम्॥ ८ ॥ रागगेयार नाल॥ २॥ श्लोक
सभय चकितं विमसंतौ हशौ तिमिर पथि
प्रति रुत मुहुः स्थित्वा मन्द पदानि वितन्वं।
तीं कथमपि रहः प्राप्ता मंगै रनंगै तरंगिभिः

गा·गो·
गी·

लस रति वलितलल लित गीते।४। वितत वङ्क व
लि नव पलव चये। विलस विर मल सपीन
जघने।५। मधु मदित मधुप जल कलित गा
वे। विलस मदन रस सरस भावे॥६॥ मधुर
नर पिक निकरनि नद कलरवे। विलसदशा
न रुचि रुचिर शिखरे॥७॥ विहित पद्मा।

कुंजतल केलि सदने विलस रति रभस हसित
वदने ॥१॥ प्रविश राधे माधव समीपमिह न
व भवद शोक दल शयन सारे । विलस कुच
कलश तरल हारे ॥२॥ कुसुम चय रचित शु
चि वास गेहे ॥ विलस कुसुम सुकुमार देहे
॥३॥ चल मलय वन पवन सुरभि शीते वि

गा॰गं॰
गी॰

य वेश्म भद्रे ॥६९॥ अहमिह निवसामि याहि

राधामनुनय मद्वचनेन चानयेथाः ॥ इति म

धुरिपुणा सखी नियुक्ता स्वयमिदमेत्य पु

नर्जगाद राधाम् ।७०। ग्रंथिनेन विरं वहेन

य मति श्रीनो ष्टशेनागिनः केदर्पणाचप

न सिकृति स्वया मन्वाय विका यरम॥ घ

59

५९

वनी सवे समाजे ॥ भणति जयदेव कविराज
राजे ॥ ८ ॥ अष्टपदी ॥ राग गंधार न्माल ॥ २ ॥
श्लोक ॥ सान्द्रानंद पुरंदरादि दिविषद्वृंदै रमंदा
दरा दानम्रै र्मुकुटेंद्र नील मणिभिः संदर्शीतेंदी
वरम् ॥ स्वछंदं मकरंद संदरगलन्मन्दा कि
नी मेदुरं श्री गोविंद पदार विंद मशुभस्कंदा

गी. गो.

नवनारद्यति नयोः ॥ तदानीं राधायाः प्रिय
तम समालोकसमये पपात स्वेदाम्बुप्रस
र इव हर्षाश्रुनिकरः ॥ ११ ॥ भजन्त्यास्तल्पा
न्तं कृतकपटकण्डूतिपिहितः स्मितं याते
गेहाद्बहिरवहितालीपरिजने ॥ प्रियास्यं
पश्यन्त्याः स्मरपरवशाकूतसुभगम्

ङ्कं तदलं कुरु क्षणमिह भ्रूक्षेप लक्ष्मीलव
क्रीते दास इवोप सेवित पदां भोजे कुतः संभ्र
मः ॥७॥ सा ससाध्वससा नंद गोविंदे लो
ल लोचना सिंजाना मंजु मंजु मंजीरं प्रविवे
श निवेशनम् ॥८॥ अति क्रम्या पांगं श्रव
ण पथ पर्यंत गमन प्रयासे नैवाक्ष्णो स्तरल

राग
गी

हसि वशे वद वदन मनंग विकासं ॥ हारममल
तर तार मुरसि दधतं परिलंब्य विदूरम् ॥
स्फुट तर फेन कदम्ब करंबित मिव यमुना
जल पूरम् ॥ २ ॥ श्यामल मृदुल कलेवर मं
डल मधि गत गौर दुकूलम् ॥ नील नलि
न मिव पीत पराग पटल भर वल यित मू

मलजाया लजा धगाम दिव हूं स्वगारशः ॥७४

राग मेघार ताल ॥२॥ अष्टपदी ॥ राधावद

न विलोकन विकसित विविध विकार वि

भंगम् । जल निधि मिव विधु मंडल दर्शन

तरलित तुंग तरंगम् ॥८॥ हरि मेकर सं

चिर मभि लषित विलासम् ॥ सा ददर्श गुरु

किरण कुरितो दवजल धर सुंदर स कुसुमके
शे तिमिरे दित विधु मंडल निर्मल मलयज
तिलक निवेशे ।६। विपुल पुलक भर दंतुरि
ते रति केलि कला भिरधीरे । मणि गण किर
ण समूह समुज्वल भूषण सुभग शरीरम्
७॥ श्रीजयदेव भणित विभव द्विगुणी कृ

ले ॥३॥ तरल दृगंचल चलन मनोहर वदनज
नित रति रागम् । स्फुट कमलोदर खेलित
खंजन युग मिव शरदि तडागम् ॥४॥ वदन
कमल परीशीलन मिलित मिहिर सम कुंड
ल शोभम् ॥ स्मित रुचि रुचिर समुल्लसि
ताधर पल्लव कृत रति लोभम् ॥५॥ शशि ।

गी॰ गो॰
टी॰

मवोच हरिः प्रियाम्॥ रागगंधार ताल॥ १॥ ष्ट
पदी॥ किशलय शयने तले कुरु कामिनि च
रण कमल विनिवेशं॥ तव पद पल्लव वैरप
राभव मिद मनु भवतु सु वेशम्॥ ५॥ क्षणमधु
ना नारायण मनुगत मनुसर राधिके॥ कर
करकमलेन करोमि चरणमह मागमि मिता

63

न भूषण भारं ॥ अगमत हृदि विनिधाय ह्रीं

सविरं हकतोः दयमानं ॥ ८ ॥ अष्टपदी ॥ राग

गंधार ताल ॥ २ ॥ श्लोक ॥ गतवति सखी वृं

दे मंदत्रपा भर निर्भर स्मर पर वशाकूतस्फी

तस्मितस्नापिता धरां । सरस मनसं दृष्ट्वा

दृष्ट्वा मुहुर्नव पल्लव प्रसव शयने निक्षिप्ताक्षी

गी·गो·
गी·

शे विनिवेशय शोषय मनसिज नाशम्॥४॥
प्रथय कथया रस मानय भामिनि जीवय म
ने मिव दासम्॥ त्वयि विनिहित मनसं विर
हानल दग्ध वपुष मविलासम्॥५॥ शशिमु
खि मावरय मणि रशना गुण मनु गुण कंठ
निनादम्॥ श्रुति युगले पिक रुत मम शा

सि विरहं ॥ नाथ सुप कुरु शयने पति मामिव

नूपुर मनुगति शूरं ॥२॥ वदन सुधानिधिग

लित ममृत मिव रचय वचन मनुकूलं ॥ वि

रह मिवापन यामि पयोधर रोधक मुरसि दु

कूलं ॥३॥ प्रियपरिरंभण रभस वलित मिव पु

लकित मति दुरापम् ॥ मदुरसि कुचकल

गी॰गो॰

तालं ॥ ४ ॥ श्लोक ॥ प्रत्यूहः पुलकांकुरेण निबि
डाश्लेषे निमेषेण च क्रीडाकूत विलोकिते ऽधर
सुधा पाने कथा नर्मभिः आनंदाधिगमेन म
न्मथ कला युद्धेपि यस्मिन्नभूद् उद्भूतः स तयो
र्बभूव सुरता रंभः प्रियंभावुकः ॥ २८ ॥ मीलद्दृ
ष्टि मिलत्कपोल पुलकं शीत्कार धारा वशा द

मय विरादव सादम्।८। मामति विफल रुषावि
कली क्रत मव लोकित मधुनेदम्। मीलति
लजित मिवन यनं तव विरम विसृज रति खे
दम्।७। श्रीजयदेव कवेरिद मनुपद निगदि
त मधुरिपु मोदम्। जनयतु रसिक जनेषु म
नोरम रति रस भाव विनोदे॥ राग गंधार

रा॰गं॰

भमितः कचेयर मभ्रस्पन्देन संमोहितः कांतः ॥
कामपि त्वमि मापत दष्टो कामस्य वामागतिः
७८॥ वामोके रतिकेलि संकुलरणारंभे तया । सा
हस प्राये कांत जयाय किंचिदुपरि प्रारंभियत्संभ्र
मांनिस्पंदा जघनस्थली शिथिलिता दोर्वल्लि
रुत्कंपितं वक्षोन्मीलितं मस्ति पौरुष

वक्त्रा जलकेलि काङ्क्ष विक सदंता प्रथो नाथ
ं श्यामोत्काम पयोधरं भरणापरि खंगात जंघी
हशो हर्षोत्कर्ष विसल्क सि: सहरनेर्थन्यो
यय त्वाननम् ॥७॥ दोर्भ्यां संयमितः प
योधर भरेणा पीडितः पाणिजैस्त विक्षोदश
नैः खताधरपत्रः श्रोणी तटे नाहतः हस्तेना

गी॰गो॰
गी॰

क्लांत मपि मंडन वांछया निजगाद निराबाधा रा
धा स्वाधीन भर्तृका ।८२। इति मनसा निगदं
ते स्मरतंते सालिनेतं रविन्नांगी राधा जगाद
सादर मिद मानंदेन गोविंदम् ॥८३॥ राग वे
यार तालतीन ॥३॥ अष्टपदी ॥ कुरु यदुन
न्दन चन्दन शिशिरतरेण करेण पयोध

रमः ह्रीग्रीं कृतः सिखलि ॥ ८४ ॥ नसया पाटल

पाणि जोकित म्ये निरा कषाये हशो मतिहृ

ने यवशोणिमा विलसिता खलखजो मूर्हे

जाः कोचीदा मदरस्नथे चल मिति श्रोत स्त्रि

रोने दशो रभिः कामशरैस्तदद्धनमभान्त

सम्मेनः कीलितम् ॥ ८ ॥ ग्रथ्य कोते रति

गी॰गो॰
गी॰

मनसिज पाश बिलास करे शुभवेष निवेशाय

कुंडले ॥ ३ ॥ श्रमर नयं रवयंत मणरि कवि

रे रुचिरे मम मज्जावे जित कमले विमले

परिकल्पय नमि जन कमल केमवे ॥ ४ ॥

मृगमदरस ललितं ललितं कक तिलकमलि

क रजनी करे ॥ विहित कलंक कलंक र

रे। मृगमद पत्रकमत्र मनोभव मंगल कलश
सहोदरे ॥ १ ॥ निजगाद सायदु नंदने क्रीडति
हृदया नंदने ॥ त्वदधर चुंबन लंबित कज्जल मु
ज्ज्वलय प्रिय लोचने अलि कुल गंजन मंजन
कं रति नायक मोचने ॥ २ ॥ नयन कुरंग
तरंग विकासिनि रास करे श्रुति मंडले ॥

गा॰ गो॰
गी॰

यदेव वचसि जयदे मदयं हृदयं कुरु मंडने हरि
चरणा स्मरणा मृत कृत कलि कलुष ज्वर खं
डने ॥८॥ अष्टपदी ॥ रागगंधार ताल॥३॥
श्लोक ॥ रचय कुचयोः पत्रं चित्रं कुरुष्व कपोल
योर्घटय जघने कांची मंच स्रजा कबरी भ
रम ॥ कलय वलय श्रेणी पाणौ पदे ।

मत्तानन विघ्नमिन भ्रम श्रीकरे ॥ ५ ॥ ममक

विरे विङ्करे ऊरु मानद मानस जघज घाम

रे ग ति गलिते ललिते कुसुमा निशितंविड

शितंविड कडामरे ॥ ८ ॥ सरमखने जघने मम

शेखर रावणा केदरे ॥ मणि रशाना वसना

यवत्ताति शुभाशय वासय हृदरे ॥ ७ ॥ श्रीज

गी.गो.
मी.

जः ॥ ८५ ॥ पर्यंकी कृत नाग नायक फणा
श्रेणी मणीनां गणे संक्रान्त प्रति बिंब संव
लनया विभ्रद्विभु प्रक्रियाम् ॥ पादांभोरु
ह धारि वारिधि सुता मक्ष्णां दिदृक्षुः शतैः
कायव्यूह मिवाचरं नुपचिती भूतो हरिः
पातु वः ॥ ८६ ॥ तिर्यक्कंठ विलोल मौलि

७.

उकनुपरा विति निगादिनः श्रीनः पीनेंवरो
पि नग्या कपेनु ॥ दथ ॥ आतमील निवोलम
खुतमुः संवीन पीनेंयके गयायख्यकिने
तिलोका इसिलि खेवं खुली मेरले ॥ श्रीउखे
चल मेवले नगनखे गयाय गयानने खेवं
खेर खवंको उजोल्ल जगला नन्दाय नेदाम्म

रागं
गी

न वेशे ॥ चलित दृगंचल चंचल मौलि कपोल
विलोल वतंसम ॥२॥ रासे हरि मिह विहित
विलासं । स्मरति मनो मम कृत परिहासं ॥
चंद्रकचारु मयूर शिखंडक मंडल वलयित
केशम ॥ प्रचुर पुरंदर धनु रनुरंजित मेदुर
मुदिर सुवेशं ॥३॥ गोपकदंब नितंब वती

नरलोकं मस्तु वंशोन्द्रस्रीतिस्थान हलना वयान
ललना ललेवा सेलसिना: श्रेमणा कल्दलि
ना: स्मकाय मधे राया सबेन्दे हया सारे
के मधुसूदनस दटन देवं कराजोमेयः ॥
८॥ गीतं गंधार नाल ॥२॥ ध्रुवपदी ॥
संचरदधर सुधा मधुर ध्वनि मुखरित मोह

गी॰गो॰

दे ॥ पीनपयोधरपरिसरमर्दन निर्दय हृदय
कपाटम् ॥ ५ ॥ मणिमय मकर मनोहर कुंड
ल मंडित गंड मुदारं ॥ पीत वसन मनुगत
मुनि मनुज सुरासुर वर परिवारम् ॥ ६ ॥
विशद कदंब तले मिलितं कलि कलुष भयं
शमयंतम् ॥ मामपि किमपि तरंग दनं

सरव त्रेवन लेविन लोभे ।। वंधुजीव मधुरा

धर पल्लव मल्ल सित स्मित शोभम् ।। ३ ।। वि

पुल पुलक भुज पल्लव वलयित वल्लव युव

ति सहस्रम् ।। कर चरणोरसि मणि गणभू

षण किरण विभिन्नतमिस्रम ।। ४ ।। जलद

पटल वलदिन्दु विनिन्दक चन्दन तिलकलला

गी·गो·
गी·

डीरंगेटस्थले ।। सामद्दीप्त विलसितस्मितमया
मृगया नवे काननेन गोविंदे व्रज सुंदरी गण वृ
ते पश्य प्रसि दृष्णा मिव ।। ८८ ।। अंतर्मोहन मौ
लि घूर्णित चलन् मंदार विंस्रमनः स्तव्याकर्ष
णा दृष्टि हर्षणा महा मंत्रे कुरंगीदृशां दृप्यद्दान
व दूय मान दिविषद्दुर्वारदुःखापदां ।। भ्रंसः

गहरा मनमा रमयंने ॥७॥ श्रीजयदेव भ
णितं मति हेदरं मोहन मधुरिपु रुपं । हरि
वरणी स्मरणं प्रति मे प्रति शरण वना मनचू
पम् ॥ ८ ॥ राग पंचार माल ॥ ३ ॥ श्लोक ॥
हला हल विलास वेशम नटज मूरलि म
हलवी हरेनवारि रंगनवी लित मति हेदा

गी·गो·
टी·

माध्वीक चिन्तान भवति भवतः शर्करे कर्कशा
सिद्राक्षे द्रक्ष्यंति के त्वा नमृते मृत मसि क्षीर
नीरं रसस्ते ॥ माकंदे क्रंद कांता धर धर
णितले गच्छ यच्छंति यावद्भावं शृंगार सा
रस्वत मिय जयदेवस्य विष्वग्वचांसि ॥ १२ ॥
श्री भोजदेव प्रभवस्य रामादेवी सुत श्रीज

कैसरिमेखलो रचयतु वो श्रेयांसि वेशोरवः ।।८४।

यद्गांधर्वकलासु कौशलमनुध्यानं च यद्वैष्णवं

यच्छृंगारविवेकतत्वमपि यत्काव्येषु ली

लायितं ।। तत्सर्वं जयदेवपंडितकवेः कृ

ष्णैकतानात्मनः सानंदाः परिशोधयंतु

सुधियः श्रीगीतगोविंदतः ।। ८ ।। माधवी

रा॰गे॰
गी॰

थाव् गीत गोविंद परिछेदः समाप्तः ॥ ॥

य देवस्य ॥ पद्मावति प्रियवर्णी कंठे श्रीगी
त गोविंद कविनमस्त ॥ जय श्री विन्यस्तैर्म
हि इव मंदारकुसुमैः स्वयं सिंदूरेण द्विपर
ण मुदा मुद्रित इव ॥ भुजापीड क्रीडा हत
कुवलयापीडकरिणः प्रकीर्णासृग्बिंदुर्ज
यति भुजदंडो मुररिपोः ॥ ९४ ॥ इति रागगो

रा·टी·
गी·

कृत सुकृत कामिनी ४ अहह कलयामि वलया
दिमणि भूषणं । हरिविरह दहन वहनेन बहुदू
षणं ५ कुसुम सुकुमार तनु मतनु शरलीलया स्र
गपि हृदि हंति मामति विषम शीलया ६ अहमिह
निवसामि न गणित वन वेतसा । स्मरति मधु सूद
नो मामपि नचेतसा ७ हरि चरण शरण ।

रूप मपि यौवनं १ यामिहेक मिह शरणं सखीजन
वचन वंचिता । यदनुगमनाय निशिगहन मपि शी
लितं । तेन मम हृदय मिदम सम शरकीलितं २
मम मरण मेव वरमति वितथ केतना ॥ किमिह
विसहामि विरहा नलमचेतना ३ मामह ह विधु
रयति मधुर मधुयामिनी । कापि हरमनुभवति

रा॰रा॰
२६
26

रागिनी रामकली ताल चचेरी विसपद ॥
मेरी मति राधिका चरण रजमैं रहो ॥ इतिअस्था
ई इहै निहचै करयो अपने मनमैं धरयो भूलिकैं को
उ कछू औरहू फल कहो ॥ इतिअंतरा । अथ आभो
ग॰ करम कोऊ करो ज्ञानहू अभ्यसो सकतिके ज
तन करि वृथा देहो दही ॥ रसिक वल्लभ चरण

न लगत कीने ॥ रागिनी राम कली ताल ८ ॥
विस्नपद माई गिरि धरनके गुण गाउं ॥ इतिग्र
स्थाई मेरेनो ब्रत पढ़ै निस दिन श्रौवन सबि उपजा
उं ॥ इसंतरा । अथ आभोगः । खेलत आंगन आ
उ लाडिलेनैं कडुं दरसन पाउं ॥ कैम निदा सहि
लगके कारण लाल वला गिर हाउं ॥

रा॰ रा॰
२७
27

उहि बेरि मिलि मीत सों मेरो हित वचन जिनि भूलि
फेरे ॥ रसिक प्रीतम संग विहरि रस रंग सों कौंन
इख अनंग को सवनि वेरे ॥ रागिनी राम कली
ताल ३ विसपद ॥ वेलाल तेडी पैजनीया ऊन
कैंदी ॥ इति अस्थाई माथेवे तेंडे मुकट विराजेरी
ऊ गवाल लटकैंदी ॥ इसेनरा । अथ आभोगः भईरी

कमल जुग शरण परि यह महा शुहि पय फल

लहो ॥ रागिनी रामकली ताल ॰ चर्चरी वि

ष्णपद मानिनी मानि जिनि मोन पनो करे शाउ

पाइन परैं नाथ तेरे ॥ इति द्रस्थाई दरस जाको क

रन जगतन रमे सदा सो तोर कटक तेरो वदन है

रे ॥ इत्यंतरा । अथ आभोगः हौ करति स्वमति

रा॰गा॰
२८

वडे गोपकी वेटी ॥ कुंभनदास गिरिधरन लाल सौं भज्ज श्रोफ नील पेटी ॥ रागिनी रामकली ताल १ विसुपद । हो मोहन हैं हारी तुमजीते इनि घुरस्याई । नागर नट पट देहु हमारे कांपत हैं तन सीते ॥ अंतरा । अथ आभोग॰ रसिक गोपाल लाल अवलनि पर पनी कहा अनीते ॥ पर

चकोर वेशवलि गति मति रति श्रट कैंदी ॥ श्रासक
रन प्रभु मोहन नागर चरण कमल चित देंदी ॥
रागिनी रामकली ताल ३ विस्नपद । हमारे
दान देरी गुजरेटी ॥ श्रनिग्रस्याई निन उठि श्राजा
न चोरि दधि चेचन श्राज श्रचानक भेटी ॥ श्रयेन
रा। श्रथ श्राभोग॰ श्रति मन रातकेसे कुटोगी

रा-रा
२५
29

बरस कुमारे ॥ रागिनी रामकली ताल ३ विलं
पद। बनत नहीं जमुना जू को नहैबो ॥ इतिश्र
म्याई। बोली वीर कुसलले भाजे कठिन भयो घर
जैबो ॥ इं अंतरा। प्रथ आभोगः। जो हरि हमसों
ऐसी करि होतो इहु बाटन पैबो ॥ श्रीविठल गि
रि धरन लालसों वीनती करि घर जैबो ॥ रागिनी

गोविंद प्रभु हम सब जानत तुम गाल बजावत रीते-
रागिनी रामकली ताल ३ विलपद मोहन देहो
दरसन हमारे ॥ इति अस्थाई । कहैंगी जाय व्रजपति
जूके आगे करत अनीतल लारे ॥ इत्यंतरा । अथ आ
भोग । तुम व्रज राज किसोर नंद सुत सब हिनके
प्राण प्यारे ॥ गोविंद प्रभु पीय दासी तिहारी सुंदर

गी॰गो॰
३

30

ली ३ं विस्नुपद। मनोवल्लभा योश पद कमल यु
गले सदा वस तुमस त्रिविध रस भाव वलिते ॥
इति प्रथ्याई। प्रथ महिमा भास वासना वासिते मा
भवतु जात निज भाव वलिते ॥ इंमनरा। प्रथया
मोगः। भजतु भजनीय मति शयति रुचिरे चिरे
चरण युगले सकल गुण सललिते ॥ वदतु हरि दा

रामकली ताल १ विस्नुपद । ग्वालिन मांगति
वसन सयाने ॥ इतिअस्थाई । सीत काल जल
भीतर ठाढी आवत नाही द्याने ॥ इअंतरा ॥
अथआभोगः । तुम ब्रज राज कुमार सबल अति
कौन परी यह बानैं ॥ हम सब दासी तिहारी ब्र
जपति तुम बड़ निपट सयानैं ॥ रागिनी राम क

रा॰मा॰
३१

आवे सखिय रहो राम रसाभ अमेरो ॥ रागिनी राम
कली ताल ३ विसपद । हेलोन वनि कुंजली
लारस सदिन श्रीवल्लभ वनमोरे ॥१ अरा अरा विश्र
इतिश्रस्थाई
न त्रिभुवन चन दामिनि डुनि फल फल अति दोरे ।
इत्येतरा । अथआभोगः । करत आवेस विरह
विरहनी झानि महतल वडन कठोर ॥ पसु नाम

त इति मा भवतु मत्कृरपि भवतु मम देव शत जन्म

फलितं ॥ रागिनी रामकली ३ विस्नुपद ॥

श्रीमद्वलभ रूप सुरंगे ॥ इतिअस्थाई । नख सिख

प्रति भावनके भूषण वृंदावन संपति अंगअंगे ॥ इम

नरा । अथआभोगः । परम परम गिरिधर जूको

नाई पेन मैन ब्रज राज उछंगे ॥ पद्मनाभ देवे वनि

रा॰गा॰
३२
32

पद्मनाभ सुत हितकीयो मारग नेह मुरलिका वे
ह ॥ रागिनी रामकली नाल ३ विस्नुपद ।
रुक मिलि चलन सिखावति पाइन ॥ इति प्रस्था
ई । सुतकी गहैं अंगुरिया डोलति सोभा कोटिक
भाइन ॥ अंतरा । प्रथमाभोगः । ठुमकि ठुम
कि पग धरत धरनि पर लेउ बलैया डर लाइन ॥

मथुरेस बिहारत श्री लछमन भट सुत ओर ॥

रागिनी रामकली ताल ॐ विसपद । सवि

री सोभा रस मय भाव प्रकट करि श्रीवल्लभ वर

देह ॥ इतिश्रस्थाई । अंग अंग ब्रज वधू विरहनी

व्यापी जुगल सनेह ॥ इत्यंतरा । अथ आभोगः

श्रीहेदारण्य देह प्रकटित हृदे निगरुढ केदरा देह·

हृदय हार सूते ॥ हरगोवरः कुल विहार एव
स्थिति स्वदीये नर एव भूयात् ॥ रागिनी राम
कली ताल ॐ विस्नुपद । नैन भरि देखि अव
भोन ननया ॥ इति प्रस्थाई । केलि पियसों करैं
भव रत वही परे श्रम जलनि भरत आनंद मनया
रंजनया । अथ आभोगः । वलनि टेढी होइलेति

हेरा वन कौं वेद श्रीवल्लभ लवे लाउङ्कलराउन ॥
रागिनी रामकली ताल ३ विस्मपद । व्रजपति
कृष्ण वल्लभे कदा नखचरण सरोरुह सीतलतास्य दंसे
रतिसुखस्याई । नव नटराज वालका कदाहं सक
ल निजं गगना स्वदा करिष्ये ॥ इत्येनरा । अथ
आभोगः । हेरावने वारु वृह हने मन्मनो रथे

रा.ग.
३४

34

कहत वारे वार सवन के अधार धन निर्धनके ॥ इसे

नरा ॥ अथ आभोगः ॥ लेत जसना नाम देत अभै

पदथांम रसिक प्रीतम प्रिया वस जो जिनके ॥

पिय कौ मोहि इन बिना रहति नहि एक छिनया ॥
रसिक प्रीतम दास करनजमुना पास मानो निर्द्धन
ने कीहै ज्यधनया ॥ रागिनी रामकली ताल 5
विलपद। श्याम सखि दास जहैं नाम इनके ॥
इतिअस्थाई। निस दिन प्राण पति आय हियमैं ब
से जोई गावै सजन भाग तिनके ॥ एहि जगमै सार

रा०रा०
३५

35

कृस्नदास प्रभु गिरिधर न परवारि होतन प्रांन ॥

रागिनी राम कली ताल ३ षट्पदी कृस्नजी के ॥

निपट खोटे कान्ह सुनि जननी कहुं बात ॥ इनि प्र

स्याई होत जब समदाउव करत तब सिख भाउ एको

न पाइके नैन भरि भसि कान ॥ अंतरा [illegible] आभो

ग: देखि रस रीतिकी प्रीति विपरीति गति मति मोन

रागिनी राम कली ताल ३ षट्पदी ॥ बोलत कोक

कला निधान ॥ इति श्रुत्याई मम वचन सुनि उठि च

लहि सगिव क्वाडि संदरि मोन ॥ इंत्यंतरा॰ प्रथमाभोगः

नव नाम सहित निकुंज महं पीय करत मुरली गान ॥

केलि कौतुम रसिकनी प्रियसु निहिदे किनि कोन ॥

मेम रजनी व्रसत उडु पति जनु कि भयो विहान ॥

रा·ग· ३६

36

स्याम संदर रैनि कहां जागे ॥ इति प्रथमस्थाई दैखि वि
न ग्रुण माल अधर अंजन भाल जावक लग्यो
गाल पीक पागे ॥ इति अंतरा ॥ अथ आभोग बोल
उग मगी अति सिथिल बैन सवनो नरे बोल
उर नख नि दागे ॥ गईयौ केकन पीट निपट बिह
वल दीठ सबैरी लालनही पलक लागे ॥ कहिये

छाडि संग लगी रहौं निसि प्रात ॥ जानन्ही बिसरि

देखि बदन जतन धरि समझि कहुं बेद देखें कमलङ्क

बिगसान ॥ डरन चंद्र रजवे लाल जस्र मनि हदे उडकि

धसि धरनि पांउ धरि म्रावे किलकात ॥ मनहुं आषाढ

घन बादरी स्वरन जिहोत आनंद सब फूल प्रति जल

जात ॥ रागिनी राम कली ताल ४ ॥ घटषदी॰

रा॰ग॰
३८

37

पटी पलटि परे पट छूट परे आभरन ॥ सिथिल अंग
अंग सबहिं देखियत निसाके जागरन॥ नवप्रिया
संग प्रहर च्यारो पलन पाय परन ॥ चत्रभुज प्र
भुजी तिर तिरन कियो रति पति शरन ॥ ॥

रागिनी रामकली ताल ३ षट्पदी ॥ मोहन व
सन हमारे दीजे ॥ इतिअस्थाई वारने जाउ मनो नंद

सोचि बात कारे जीय मरू बात कौन बिय जाके प्रत

राग रागे ॥ दास जेभनलाल गिरिधरन पति पर क

रत कूठी सोंहं मेरे आगे ॥ रागिनी राम कली

ताल ३ षट्पदी ॥ भले आए भोर गिरिवर धरन ॥

इति अस्थाई ॥ अरुण नैन जंभात आलस धरन उग

मगे वरन ॥ इत्यंतरा ॥ अथ आभोगः पाग लट

रा॰ रा॰
३८
38

रागिनी रामकली ताल ३ ललफाखेना षट्पदी

लालन जागन रैन विहानी ॥ इति अस्थाई ॥

देखत पथ अंखियां थकित हारी करो लाल रति

मानी ॥ इत्यंतरा ॥ अथ आभोगः कटो का

लकेरहू लाल सखिन संग एरब विविध कहानी॰

रंग अनग स्वरन विन आवन वनितया अयिकपित

नंदन सीतल गत तन भीजे ॥ अथ आभोगः कौं

न सुभाव हर्यो धन ओसर उनवानन कैसें जीजे ॥

सुनि उवपावै बज महर जसो मति जाउ कहें अव

हीजे ॥ पसव अवला जल मांज उचारी दारुण उवे

कैंस सहीजे ॥ प्रभ वल राम हमदासो निहारी जो

भावै सो कीजे ॥ इति आभोगः ॥ ॥

रा.रा.
३९

39

हारें आवज सभा जवि रही निकसि वेन हि पाउ ॥ वि
न गये पति वने छुटे हमे गोकुलगाउ ॥ सपामगा
न सरोज आनन ललित लैले नाउ ॥ सूरहि ल
गन कठिन मनकी कहो काहि सुनाउ ॥

रागि रामकली ताल ३ ॥ षट्पदी । लाल रस
मसे नैंन आज निसि जागे ॥ इतिअरुस्याई अति वि

नी ॥ भोरभयै प्रात मोरै गटह देखत सखी हिरानी-
रसिक प्रीतम दोऊ अंखियो अरुण भए कहो क
हां रैनि सिरानी ॥ रागिनी रामकली तालजप ३
षट्पदी ॥ किहि मिस जैहमनी के जाउ ॥ इति
अस्थाई ॥ सकल खाव निधि खाव निरखि के नैं
न तृषा बुजाउ ॥ इत्यंतरा- अथ आभोगः ॥

ग·गं
५·

40

२धे २पै २मे २गे २रे २सा
ति कर ग्रागो ॥

साल अब मान अरुणा भए रवि रवनके रंग पावे ॥

अंतरा । अथ आभोगः खेदर शपाम खभगाना

अटपटी अंग अंग नाव लतन दागे ॥ मानरूकोप

नि टरि सम्भाव मरमाथ भए अतिभागे ॥ वजर

भज प्रभ गिरि परत अधिक खीवि वेदन मरऊ

टी लागे ॥ मानरू मन्मथ चाप भेट परि रयोजो

रा·रा
४१

५१

सबके प्रभु दरस दीजे श्रहन कीरन कुंइ ॥ ॥

रागिनी रामकली ताल ४ षट्पदी मैया तेरे

लालको माख देखनही आई ॥ झनिरुस्याई का

ल्हि माख देखि गई दधि वेचन जानहि गयोहे बि।

काई ॥ श्रंसनरा श्रृष्णश्राभोराः दिनतैं हूतौ दोम

लाभ भयो गाउनि वछिया जाई ॥ आईसवे छंभा

रागिनी राम कली ताल २ षट्पदी कृष्णजीके

मोहन जागिहौं बलि गई ॥ इनिअरुणाई ग्वाल

बाल सब द्वार ठाढे बेर बनकी भई ॥ अंतरा ॥

अथ आभोग पीत पट करि हरखावैं छाडि दे अब

सई ॥ अति अनेदिन होत जसुमति देखि उतनिनि

नई ॥ जागे जंगम जीव पशु खग और ब्रज सबई ॥

रा॰रा॰
४२
42

आभोगः गालीजसोकरी एकजनीकी भेट भयो भ
ट भैरो ॥ अंकदे चली सयानी ग्वालिन हरिकौं वद
न फिरि हेरो ॥ आनही मंगल भयो सावीरी कैहै स
ब काज भलेरो ॥ परमानंदप्रभु माव निराखत मि
टो भव सागर फेरो ॥ रागिनी रामकली ॥
ताल ८ षट्पदी ॥ हौं वलि वलि जाउ कलेउ

य साथकी गिरि पर देऊ जगाई ॥ सुनि प्रिय

वचन विहसि उठि वैठे नागरि निकट बुलाई ॥

परमा नंद सयानी ग्वालिन चली संकेत बनाई ॥

रागिनी रामकली ताल २ षट्पदी ॥ लाल

को दरसन भये सवेरो ॥ इतिग्रस्याई वड्डनला

भ पाऊंगी माई दह्यो विकैहै मेरो ॥ इतगेनता प्रय

रा॰ग॰
४३
43

जै ॥ रागिनी रामकली ताल ३ षट्पदी ॥

जयति आभीर नागरी प्रान नाथे । जयति ब्रज राज भू

षण जसो मति ललित दैनन विनोद सिखी सुहाथे·

इतिअस्थाई जयति पात परभात दधि श्रीदामा

सेग अखिल गोधन हूंद चरें साथे ॥ इत्यंतरा ॥

अथआभोगः ठोर रमणीक हूंदा विपिन सुभस्थल

कीजे ॥ इतिअस्थाई षीर षांड घृत अति मीठो
है अबको कोरवल्ल लीजे ॥ रंगनरा ॥ अथ आभो
गः वेनी वढे सनो मन मोहन मेरो कह्यो जो पनी
जे ॥ ओटो हूध सघ धोरी को मात छूंट जो पीजे ॥
हौं वारीया वदन कमल पर भेवरा प्रेम जल भीजे ॥
वह्रहौं जाय खेलो जमुना तट गोविंद संग करि ली

रा॰रा॰
५५

वि मदिन भई मनहि मन कहति आये वचन भयो

माना ॥ इंणतरा । अथआभोगा । नैन अर मान

अति वार वार जेभान कंठ सो लगि जात हरष मा

ना ॥ वदन पोंछियो जमुन जल निसों धोइके क

हो मस काइ कछु खाहुनाना ॥ हृप आंटौ आति

अधिक मिष्ठी मांनि लेहु मांखन पांनि माता दाना॰

खेंटरी केलि गुण गूढ़ गाथे ।। जयति नवनिजा न
ट निकट रास मंडल रच्यो तत्ननता थेई थेई तत्ननता
थे ।। चत्रभुज दास प्रभु गिरिधरन वहुरि प्रभु श्री
विठ्ठल प्रकट ब्रज कियो सनाथे ।। रागिनी राम
कली ताल ॐ षट्पदी ।। लालहि जगाउ ब
लिजाई माता ।। इतिप्रस्याई निरखि मुख वेद ब

रा.रा.
५५

95

ननी प्रेमकीगति देखि जीयत जानी ॥ उपटि
कंकन पीठ वक्र बिह्व वल दीठ ईठ नालखी ख्यानी॰
पाणि पलव अधर दसन सौ गहि रही प्रय बेन
बोलि वचन हार मोनी ॥ सूरप्रभु प्रेक भरी श्रीए
पति नागरीन बल नागर उरहू चालि मोनी ॥
रागिनी राम कली ताल ८ षटपदी ॥ जैये त

सूर प्रभु कियो भोजन विविध भांति सौं पियो पय
मोद करि च्यूंट साना ।। रागिनी राम कली ताल
ग षट्पदी ।। राधिका स्याम नन देखि मुसका
नी ।। इति अस्थाई । हार बिन गुण लेख अधर
अंजन रेख नैन नेमोर बनन रान बोनी ।। इत्यंतरा
अथाभोगः ।। पाग लट पटी बनी उरझ छूटी

ब्रज त्रियन मैं कौन सी नारि वह जाके तुम लाल
अनुराग रागे ॥ व्रजभूषन दास प्रभु गिरिधरण
काहे कौं करत झूठी सौंह मेरे आगे ॥ रागिनी
रामकली ताल ३ षट्पदी ॥ नैन उनीदे
भए रंग राते ॥ इति घुम्याई मनहु गुलाल
उरझम पर सजनी फिरत भ्रमत मद माते ॥ इमे

ह्नो जह्नो रैनि जागे ॥ इति अस्थाई । बनी बिन
गुणमाल षोर षंजन भालहैं उर लग्यो गेउ पी
कपागे ॥ इअंतरा । अथ आभोगः । आरक्त नै
न अति सिथिल सब अंग गति डग मग नग बिन
ह्नी पलक लागे ॥ चपल बानर फीट उपटि कंक
न पीठ दीखियत उर मोजन खिन दागे ॥ सकल

रा.रा.
४७

47

मन म्रग वेधौं मोहन नैन बांनसौं ॥ इति अग्याई ॥
गूढ भावकी सैंन श्रवानिकत किनाव्यौ भ्रकुटीक
मानसौं ॥ इंगनता । प्रथमाभोगः ॥ प्रथम नाद
बल वेगि निकटले म्रली समक म्र वेधानसौं॥पाछैं
वे कवितै मधुरे हंसिवान करी उलटी म्रवांनसौं ॥ व
लभंजदास पीर पानन की मिटनन औषध श्रोनसौं ॥

तरा। ग्रथग्रामोगः प्रेम पराग पांखुरी पल दल
प्रफुलित मदनल नाते ॥ सदा सुवास विलास वि
लोकनि प्रकट प्रेमके माते ॥ तैसिये मारुत मंद
जन्हा वरि मिलत सुदिन छवि नाते ॥ सोवे स्तव
श्याम मानिनि निज हित करि केलि कलाते ॥
रागिनी रामकली ताल ४ षट्पदी कुलसजी की

ते चिते सि सन नरा खेलि कंठ लगाइ सुंदर श्यामसु
भगा ॥ मरुइ वाचीनन ते थान मोगिन वनीन खोन भ
जन भाव जैंसें जनावन बाल खेरा ॥ वनभंज ष
भ गिरि धरके बाल विनोद नेद माल देखे ठाके
ठगठगा ॥ रागिनी राम कली नाल ३ षट्प
दी उपमा धीरज नज्यो निरखि छवि ॥ इतिपुस्पा

कैकै सावे नवहीं उर अंतर आलिंगन गिरिधर सङ्गो

नसैं ॥ रागिनी रामकली ताल ८ षटपदी ॥

अंगुरिया झारिरे गति थरहरा थरहरा ॥ इति शुभ्राई

नूपुर बाजत गोंन्यौं धरणी धरत पग ॥ इन्धेनरा ॥

अथ आभोगः कबहूं कज सौंदा माहिं भुज पसारि

हंसि उग मगाइकैं उलटि डग॥ जननी नदित मन वि

रा॰रा॰
४९
49

रागिनी रामकली ताल ८ छट्पदी । सांवरोरीव

रिक माई कौन को किसोर ॥ इतिध्रुवस्थाई सांवरे व

रन मन हरन वेसी धरन काम करण केसी गति जोर

इंतरा । अथआभोग: पवन परसि जात चपल हो

न देखि पियरे पटको चटकीलो छोर ॥ सुभग सो

वरी छोटी वटौतें निकसि आई वेकवीली छटा कौ जे

ई कोटि मदन प्रभुनौं बल हारो कुंडल तेज छप्यो
रवि ॥ अथ नख ॥ प्रभु आभोगः खंजन मीन मृग
जहैं जेते हीन रहे कौं हेंदवि ॥ गिरिधर पटनर रहु
महिल जावन सकुच ननहीं खोटे कवि ॥ ईषद हा
स दसन इति निरखत वत्र सिखरस कुवानैं सूरश्या
म लीला व्रजका छिपयो पटनर मेटि विरानैं ॥

रा॰ना॰
५॰
50

इत्येनरा। अथ आभोगः। सब बनराई विसरि जात है
खान पान की नात ॥ बिनु देखे छिन कलन परत है प
ल भरि कलप विहात ॥ सुनि भामिनिके बचन मनो
हर सखि मन अति सकुचात ॥ बनभंज प्रभु गिरि
धरन लाल सेरा सदा बसो दिन रात ॥ रागिनी रा
म कली नाल ग षट्पदी। चतुर चारु वेद्रा वली

सो छबीली ओर ॥ सुक्ति पाइनी स्वारि हारा होमे
री आली कहा नाउ कौहै विन विन को वोर ॥ नेददा
सि जाहि वाहि वकवौंथी आइ जाइ भूल्योरी भवन
गवन भूल्यो रजनी भोर ॥ रागिनी राम कली ताल
षट्पदी । करन हो सवे सयानी वान ॥ इतिश्र
प्यारी जोलौं देखे नाहिन सुंदरि कमल नैन ससिकान

रा·रा
५१
51

त म्रवलि का नाह मोरे ॥ छनि कुसुम दाम सुभ लग्न वर
यन व्यरी लाल गिरिधरन सौं हाथ जोरे ॥ रागिनी
रामकली ताल २ षट्पदी । देखो मेरे भागकौं सु
भ घरी ॥ इतिश्रस्थाई । नवल रूप किसोर मूरति के
ठ ले भुज धरी ॥ इत्यंतरा । अथ आभोग जाके चरण
सरोज गंगा शोभले सिर धरी ॥ जाके चरण सरोज प

नख चकोरे ॥ इतिसुरख्याई अस्त्रमे चरण शंति बज
जवति भूषणो कमल लोचन नंद नृपकि सोरे ॥ इसे
नरा । अथ आभोगः । मोति मेरो कह्यो अति साल र
सोति कौं करावति सखी वड्हनि होरे ॥ मिलेकिनि
यार अब कुंवर वृजरत्न रसिक वर भूपाल विना तो
रे ॥ नव रंग कुंज महेन वनो महिन नाथ कुमात क

रहती करि कोनि ॥ अब हम पैकों सहीपरति है
मणि मानिक की हानि ॥ उह विवेक वचन चा
तरी सर्वस लियो चुराय ॥ सूरदास प्रभु के गुण
औगुण कासों कहिये जाय ॥ रागिनी राम क
ली ताल गीत षट्पदी । यन यह राधिका के
वचन ॥ इतिश्रस्याई । सुभग सीतल अतिस

र सुत सिलासु नियेत तरी ॥ जाके वदन सरोज निर
खत श्याम सगारी सरी ॥ सूर प्रभुके संग विल सत स
कल कारज सरी ॥ रागिनी राम कली ताल २ षट्
पदी । गोपाले माई वारे हीतैं देव ॥ इतिअस्थाई ॥
जानौं नहीं कौंन पैं सीखे चोरीके छल छेव ॥ इअंत
रा । अथआभोगः कबहूंक डरते माखन खोते सखि

ल गीत षट्पदी । धन यह राधिकाके वरन ॥ इति
अस्थाई । सुभग सीतल अति सुकोमल कमलके
से वरन ॥ इमंतरा । अथ आभोगः । नख वेड चा
ह अनूप राजत विविध सोभा धरन ॥ ऊगनि नू
पुर कुंज विहरत परम कौतुक करन ॥ रसिकला
ल मनमोद कारी विहर सागर तरन ॥ विवस

कोमल कमल केसे बरन ॥ इतिअंतरा । अथा
आभोगः । नादबेद चारु अनूप राजत बिबिध
सोभा धरन ॥ झीणन नूपुर कुंज बिहरन परम
कौतुक करन ॥ रसिक लाल मन मोदकारी बि
हार सागर तरन ॥ बिलस परमानंद छिन छि
न स्यामजीके शरन ॥ रागिनी राम कली ता

ग्राम जीत्यो बांधि अपनी पवन ॥ सूरके प्रभु तरन
तारन राखि अपनी शरन ॥ रागिनी रामकली ता
ल ३ षट्पदी ॥ बहुं जोत बहि मान परि आवे ॥
इति अस्थाई। सुंदर श्याम बहुरि मन्न भावै कै अंबुज
बदन दिखावै ॥ इति अंतरा। अथ आभोग। तब
लग मान करहु कोऊ कैसे जब लग वह दरसन न

परमा नंद छिन छिन श्याम जीके शरन ॥ ॥

रागिनी राम कली ताल गीत षट्पदी । बढि बढि

बान लागी करन ॥ इतिअस्थाई । श्याम सुंदर मद

न मोहन आप तेरे चरन ॥ अंतरा । अथआभोगः

उदधि उपर बिज्जुर छूटे बिज्जुर उपर छुरन ॥ काम

को दल साजि आई आउ देदे [illegible] लरन ॥ बिहर को से

गो-गो
५५

55

किति हसत हसत बानी ॥ ३ मंतरा । अथ छाछभोगः

सुतके करम गावति आनंद भरि बाल चरित्र जानि

जानी ॥ श्रम जल बूंद राजे वदन कमल पर मन

हु मरद वर खानी ॥ प्रेम सनेह भुवान पयो धर

प्रमुदित अति हरखानी ॥ गोविंद प्रभु घुटरुन

चलि आए पकरि रई मथानी ॥ रागिनी राम

हि पावै ॥ दहि परमेन मथु कर निहि छिन सहज

सरोज हि पावै ॥ त्रिभुवन मांझ होउ वदै जवति

श्रावज पधहि हरकावै ॥ ऊंभन दास प्रभ गोवर्द्धन

धर जल मरजादा फावै ॥ रागिनी रामकली ना

ल ॐ षटपदी । अहो दधि मथति गोपकी रानी ॥

इतिग्रमध्याई । दिव्य नीर पहरे दछिन को कोटि किं

प्यारी ननतैं ॥ रसिक टरौ जिनि दसा श्यामकी कब
हूं मेरे मनतैं ॥ रागिनी रामकली ताल ३ षट्
पदी । चरण कमल की चेरी नेरी छाडहु लाल नेह
के ॥ केसो है होन कहा किनि लीयो दीयो न कबहूं
वचन वदन अर बिंदके ॥ देखन सखा सखी जन
सगरी चरित चपल ब्रज चंदके ॥ लाल नस ऊचन

कली नाल ३ षट्पदी । लटकत आवत कंज भव
नतैं ॥ इति अस्थाई । फरि फरि परत राधिका ऊ
पर जागर सिथिल गवनतैं ॥ इति अंतरा । अथ आ
भोगः । चौकि परत कछु मारग विच चले छूटे
य पवनतैं ॥ भयउ सास भरम राधाके सकुच न
सो सरवनतैं ॥ आलस मिस प्यारे नहोतहेने ऊन

रा.गा.
५८
57

रुंनतरा। अथष्टाभोगः॥ सुंदर श्याम कमल
दल लोचन हमहैं दासी तिहारी॥ जो कछु कहो
सोई हम करिहैं चरण कमल परवारी॥ प्रेण प्रेण
केपत मन मोहन विनती सुनहु हमारी॥ सूर
दास प्रभु रसिक सिरोमनि तुमजीते हम हारी॥
रागिनी रामकली ताल छट्पदी॥ चर्चरी।

ग्रेव गोपें बन पारन पावन विविध प्रट पटे फेंटकी ।
मटकी खसन हसन सब ग्वालिनि निरखति ह्यारे
छंटके ॥ रसिक सदा मन बसो विविध गुण रस नि
धि आनंद केंटके ॥ रागिनी रामकली ताल २ घट
पदी ॥ हमारो ग्रेवर देहो मुरारी ॥ इतिप्रस्याई
लेकर चीर कदम पर बैठे हम जल मांझ उघारी ॥

दि वङ्गनङ्क श्रुत वासना भेग भव जलधि तरणे ॥ वद
न हरि दास इति निज वरण माझ कृत गोकुला धीश
पद कमल वरणे ॥ रागिनी राम कली ताल
षट्पदी। चचैरी। जयति राधिका रमण वरचरण
परिचरण रति वल्लभा धीश स्तन विठ लेशे ॥ इति श्र
स्याई ॥ दास जन लौकिका लौकिके सवैया। केवषि

रुचिर नख वल्लभादीश चरणे ॥ इतिस्थाई । अस्तमे

सर्वदा संदरा कान्ति जगन्मोहने हृदि हता विहित कर

णे ॥ इत्यंतरा । अथाभोग: विहित माया वाद वा

दि दैवजादि जन संगज निनाश जनक मति हरणे·

अखिल साधन रहित दोष शत कलष मति विमति

भर भरित निज दास शरणे ॥ अंजसा कामको पा

वि दास गति निज वलेशे ॥ रागिनी रामकली ता
ल ॐ षट्पदी ॥ श्रीगोकुल नाथ निज वश्य
सो ॥ इतिश्रम्याई। भक्त हेत प्रकटे श्रीवलभ ज
गतें तिमिरज हस्यो ॥ इत्यंतरा। अथ श्रीमीरा ॥
नंद नंदन भए नव निधि गोप व्रज उद्धरयो ॥ नाथ
विठल सवनकैके परम हित प्रन सरयो ॥ प्रतिश्र

ते दयति हृदय देशे ॥ इमनतरा । अथआभोगः ॥ स्ना
पयत मानसं सतत कृत लालसं सहज स्वघ माहु चिर
रूप वेशे ॥ भाल गत तिलक मुद्रा दिशो भास हित
मस्तका वद्ध सित कुल केशे ॥ सहज हासादि घृत
वदन पंकज सरस वचन रचना परा जित सुदेशे ॥
अखिल साधन रहित दोष गत सहित मति दास ह

गाय अपार भव निधि तारि अपनौं कर्यो ॥ दासमा
धव राम देखे चरण शरण पर्यो ॥ रागिनी राम
कली ताल षट्पदी ॥

रा.रा.
६३
63

ग्वाल बाल खेलन कौं गोरंभन ह्वै होइ ॥ ब्रज ज
न सब ठाढी साख देखन प्रति आवत सब कोइ ॥
ऊठि बैठे लए गोद जसोदा सुंदर स्वन निहे लोइ ॥
रसिक प्रीतम लगि गरैं जननि के मोगन रोटी रो
इ ॥ रागिनी रामकली ताल ३ अष्टपदी ॥
डग मगा चलति प्रव रही भीति ॥ इति श्रुस्याई

रागिनी रामकली ताल ३ अष्टपदी ॥ भोर
भयो जागोहो ललना कहा तुम अजहूं रहेहो सोइ
इतिअस्थाई पीओ यार अपनी थोरी की जैसें देह
बल होइ ॥ इत्यंतरा अथ्यआभोगः वेनी ग्रहे देउ
दृग अंजन मसि विंदुका माथे धोइ ॥ हसत बदन
ख मदन निहारौं नान्ही नान्ही दतियां होइ ॥ देखत

रा·रा·
६४
64

नंद कुमार सुवन संग लीनैं सरद विमल की राती·
कृस्न दास गिरिधर पियके संग अधर सुधारस
माती ॥ रागिनी रामकली ताल ८ अष्टपदी·
ग्वालिन पिछवारे कै बोल सुनायो ॥ इति कृस्ना
ई । कमल नैन हरि करत कलेउ कौरन सखेलौं
आयो ॥ इकंतरा । अथ आभोग: । मैया एक गा

नवनि ऊंजने राधा भामिनि ग्रहण उदै वर जानी

ऊपेनरा । प्रथमभोगा । रतिकी कलि सुमिरि

म्रग नैनी बार बार सुसकानी ॥ वदन जोतिने

सुनिरी भामिनि मेटन उड पति कांती ॥ निसके

चिन्ह प्रकट देखि यतहैं काम केलि जल कानी ॥

प्रीतम प्राण रतन संपुट ऊच भेटि जग ईकानी ॥

ग॰गा॰
६५

नीरवालिन उलटि ग्रेक गिरि धर पिय पायो ॥
रागिनी रामकली ताल ३ अष्टपदी ॥ मोहन
ननिक देरी माय ॥ इति अष्टपाई ननिक कर धरन
निकरोटी मोगान चरण चलाय ॥ इत्येनरा । प्रथ्यग्रा
भोगः । कनक भूमि धरननि करेषा करन पकरौ
धाय ॥ केपियो गिरि सेस सेको दथि हेन श्रज्ञलाय॰

य वन बांटि वछुरा छाइ वसायो ॥ वेनु नल ईल कु
ट नहि लीनी अरवराय कोउ सखान बुलायो ॥ च
कित नैंन चहूं दिस चित वन सखा दुरै किधौं सप
नो पायो ॥ फूले अंगन मातन सिक वर त्रिभुवन पर
रस छकनि छायो ॥ मिलि वैठे संकेत सदन मै
विविध भांति कीनौं मन भायो ॥ परमानंद सया

गी॰बा॰
६६
66

चोरि मन मांषन जो मेरे धन होरी ॥ ३३ सोनरा ॥ अथ
आभीरा ॥ चोषो कंचन षिम कलेवर उभय भुजा द
ग डोरी ॥ ताकौं कठिन कठोर कुचन बिच सकैन
कोउ छोरी ॥ अधर दसन खडैं रस गोरस कुबेन का
ऊ कोरी ॥ काम देह देषो पर घर को नाउन लेइब
होरी ॥ नवकुल कौनि आनि तिरछी भई तमा ष

मेरे मनके ननिक मोहन लागो मोहि वलाय ॥ नति

क स्वाव परत निक वतियां बोलत हैं ननराय ॥ जस

मनीके शाला जीवन धन लीयो उरल पटाय ॥ नेद

ऊवर गिरि धरन ऊपर सूर बलि बलि जाय ॥

रागिनी राम कली नाल २ अष्टपदी ॥ आज ह

रि पकराग पाप चोरी ॥ इनिग्रष्याई लेगयो चोर

रा॰गा॰
६८
67

कोरे लगि देख्यो मेरी गातन आयो ॥ बेनीकी कव
गही चामरी उजट माझ दव वायो ॥ मत रोवो नम
मैं कौन कहत है लेउ छंगा झल रायो ॥ श्रीमखवैन
उचरि गई है दतियो नव हेसि कंठ लगायो ॥ परमा
नंद प्रभु प्राण जीवन यन विसद विमल जस गायो ॥
रागिनी रामकली ताल गीत ध्रुवपदी । मोहि द

प राय किसोरी ॥ सिव पर हाथ धराइ सूर प्रभु सो
च सोच सिर फोरी ॥ रागिनी राम कली ताल ३
अष्टपदी। मारवन चोरसीमैं पायो ॥ इतिश्रस्थाई
जैयत कहा जोन कैसे पैयत बहुत दिन नही खोयो
इसंपनरा। अथआभोगः। होज करहनिसी होत कहा
है नित उठि भाजन लगन कुकायो ॥ बहुत बार

।ताल ३

रा·गं·
६८
68

श्रीजमनाजी तिहारो दरस मोहि भावै ॥ श्रीगोकु
लके निकट बसतहै लहरनकी छबि आवै ॥ सुख
करनी दुखहरनी श्रीजमुना जोजन प्रात उठिन्हावै·
मदन मोहन जूकी खरी पियारी पटरानी जूकहावै·
वृंदा बनमै रास रच्योहै मोहन मुरली बजावै ॥ सूर
दास प्रभु तिहारे मिलनकुं वेद विमलजश गावै ॥

पि मथन देव लिवाई ॥ जाउ वलि वलि वदन उप
र क्वाटि मथा नीरई ॥ इतिश्रस्याई लालेदेई नव
नीतलौदा आरिकि नन्न मठई ॥ इत्येतनवा । श्रथाश्रा
भोगः सनेहेनि विलोकी जसमती प्रेम ग्रल किन
भई ॥ लेउ क्षेगलगाय उरसौ प्राण जीवन जई ॥
वालकेली गोपालकी ब्रज श्रास करन नितनई ॥

रि मजनकीनो प्रथम हेमंतके मास ॥ पवरहोइ
नेद सुत मेरे व्रत दासौं दहिं आस ॥ नवही चीर ह
रे हरि नागर चढि कदमकी डारि ॥ परमा नेद
प्रभु वर देवे कोउ यम कियो मरारि ॥ रागिनी
राम कली ताल ३ अष्टपदी । ग्वालिनि अपनैं
चीर लेइ ॥ इतिअस्याइ । जलतैं निसरि निकट

रागिनी रामकली ताल ३ अष्टपदी। हरि जस गा
वति चली ब्रज सुंदरि श्रीजमुना के तीर॥ इति अस्था
ई। लोचन लोंने बाहु जोटि करि श्रवणनि झलकत
वीर॥ इतिअंतरा। अथ आभोगः। वेनी सुथिर बारु
कांधे परे कटि तट अंबर लाल॥ हाथनि फूल लीयें
डलीया भरि अरु मुक्ता मणि माल॥ जल प्रवेशक

रा·रा·
७·
70

सूर सुभाव हमारो कत उर पति हो काम भय ॥ के
सोंये भांति भजे कोऊ सो ऊं तें सबे संसार जय ॥
रागिनी राम कली ताल ३ अष्टपदी ॥ स्वामि
री श्रीविठलेश कुमार ॥ इति श्रुवपदाई। श्रुति श्र
गाय अपार भव निधि भयो ताहो पार ॥ इसेन
रा। अथ आभोगः। मैं वलि रहत करुणा सिंधु

कै दोउ कर जोरिकैं सीस देहु ॥ इत्येतत् । अथ श्रा

भोगः । करतहो सीन सहत व्रज मेदरि होत असि

न हूस गान सबै ॥ मैरे कहे आनि पहिरो पट इन

नो अंग विधि हीन अबै ॥ हो अंतरजामी जानत

सबनकी कत डरावत लाजकैं ॥ करिहो एरन

काम हपा करि सरद समैं ससि राजके ॥ सेनत

कोमल सदाचित उदार ।। गोकुलेश हृदे वसो म
म मल पाल निहाल ।। माल तिलक नन जीनक
ऊं परी जदपि प्रकार ।। प्रेम भक्तन दीयो धीरज भ
प पद दातार ।। चार जुगमें विसद कीरति भक्त
हित अवतार ।। नव किसोर कल्यानके प्रभगा
डे वारंवार ।। रागिनी रामकली ताल । ग्रप्र

रा॰रा॰
७२

72

गोप गोपीन बल प्रेम रति वेदिका नट मंदिन रहन
जैसें चकोरी ॥ लहरि भावरि ललित वलका सु
भग व्रज वाल व्रत हरना रास फलदा ॥ ललित
गिरि वर धरन पीयक लिरनेरिनी निकट कुल दा
स विहरत प्रबलदा ॥ निरखि हरखि व्रज जुवति
वोध सरारि ॥ थकित जित तित भ्रमर खनि गान

रागिनी रामकली ताल ४ अष्टपदी ॥ नमोनति
न नया परम पुनीत जग पावनी कृष्ण मन भावनी
हरिवर नामा ॥ इतिअष्टपदाई अखिल सुख दाइनी स
व सिद्धि हेतु श्रीराधिका रवन रति करन श्यामा ॥
इंअंतरा । अथआभोगः । विमल जस वन नवका
ननो मोद भुज अलिन अतिरम्य श्रीय ब्रज किशोरी ॥

नैन उतारि ।। कंठसी पजनील मणि मय माल रची
से वारि ।। नील गिरि वर गरल मानों लाय लई म
दनारि ।। वदन रजतन श्याम मोहन शोभ इहि भुज
हारि ।। मनहु अंग विभूत राजत शंभु सोई मधुहा
रि ।। त्रिदश पति जस मनि के आगें असन कों करे
आरि ।। सूर दास विरंचि जाको जपत जस मुख चारि॰

नंद लाल निहारि ॥ चिन्न वचन सिरके मलट चंडेरि
सा छटकी जारि ॥ सीस पर जानो जटा धरि सिव
रूप कियो त्रिपुरारि ॥ रुचिर रचित ललाटके सरि
बिंदु सोभा कारि ॥ रोस मनऊ त्रतीय लोचन रहे
रिपु जन जारि ॥ कुटिल ह्यीन खोहिये हरिकें सुभ
गा डरि सुमन हारि ॥ ईसजन रजनी सराग्यो भाल

य ॥ उरन लालन झलत पलना खेरै देन झलाय-
जमला अर्जुन तोरि तारे हृदै प्रेम बढाय ॥ झटक
नान पलास पलव देऊ देन दिखाय ॥ कीर पिंजरा
देन अंगुरी लेत श्याम भजाय ॥ वका सुरकी चौंच
फारी दृष्टि अब रज लाय ॥ विना दीपक सदनमें
हरि नेकु परसन पाय ॥ अंचा सुर साख पेठि निक

रागिनी रामकली ताल २ अष्टपदी ॥ बलि ब

लि बरिब गोकुल राय ॥ इति अस्थाई । राजा नल

को पांन कीनो पीवन हूय सिराय ॥ इमेजरा । अ

थ आभोगः । सुननाके प्राण सोचे रहे उरल पटा

य ॥ कहति जननी हूय उरन वोकि कछु वन

लाय ॥ जिण वनें अकासतें गहि सिलाप रुको आ

लागत पाय ॥ घोष नारिन संग मोहन रच्यो रास ब
नाय ॥ कहति जननी व्याहकी तब लजत वदन दु
राय ॥ वृषभ भंजन हतन केसी हन्यों शकट फिरा
य ॥ भजन सावन समेत मोहन देखि आई गाय·
सेस महिमा कहि न आवे अनेक रसना पाय ॥ ए
क रसना सूर कहा कहै अंग अंग नित माय ॥ ॥

से बाल वछ जिवाय ॥ हरे बालक बछन बछन
हेत तेरी माय ॥ फूटि पग्र जब रहत बनमें द्रुम
नि फूलन जाय ॥ लिख्यो हारैं नाग कारो देखि
श्याम डराय ॥ तिनि काली फणनि ऊपर सम ता
ल बजाय ॥ धर्यो गिरि वर देहनी करन बाहे
पिराय ॥ सकट भंजन श्मन ऊब जग कठिन

कौं उठिम जोगी मानि मेरी निहोर ॥ लेहूं ललन
बलाइ तेरी छोरि अंचल छोर ॥ बदन चंद बिलो
कि सीतल होत हियदो मोर ॥ बैठि जननी मोद हैं
बगलाये गोविंद थोर ॥ रसिक बालक सहज ली
ला करत मोखन चोर ॥ रागिनी रामकली ता
ल ३ अष्टापदी । मानहु बात लालन मेरी ॥

रागिनी रामकली ताल गीत अष्टपदी ॥ हाहाले

उ पको कोर ॥ इतिअस्थाई । वहुत वेर भई है मु

खे देखि मेरी ओर ॥ इत्यंतरा ॥ अथ आभोगः ॥

मेलि मिश्री हय ओटोपी औंकैरै जोर ॥ अवही

खेलन टेरि हैं तेरे ग्वाल भयो अति भोर ॥ जयो पे

की डुम डुम निशनि करन लागे मोर ॥ खेलिवे

गी०गो०
७८
77

मेघान उदयो सूरज कमल विकास ॥ माइके सु
नि वचन हेसि उर आइलगे गुपाल ॥ कीयो भोज
न दीयो अति सुख रसिक नैन विसाल ॥ रागि
नी रामकली ताल गीत अष्टपदी । खेलत मद
न सुंदर अंग ॥ रति अस्थाई । जुवति जन मन
निरखि उपजत विविध भाव अनेक ॥ इतेनरा ॥

इति अस्थाई। करो भोजन रोम म्हलो हौं जु मैया तेरी
इत्यंतरा। अथ आभोगः। दूध दधि नवनीत घृत
पक पक सिराकौ थार ॥ कहा लोटत धरनि में मेरे
लाल होति ख्वार ॥ गोद बैठो हौं जि बाजं गाऊं तेरे
गीत ॥ खेलिवेकौं नाहि बोलत ग्वाल तेरे मीत-
कहौं जाकौं नाहि टेरौं बैठे तेरे पास ॥ करौं दधि

रा॰गा॰
७८
78

अलौकिक बाल लीला कौंडेन जानी जाइ ।। स्वय
नासैं महा स्वाद रसदेन रसिक मिलाइ ।। रागि
नी राम कली ताल चर्चरी ताले । ब्रजानंद के
ह घोष पति भाग्य भवि जाते ।। इति अस्थाई । रसि
क वर गोपिका पीन रस मानने नव जय नृमम ह
सि सुजाते ।। ध्रुवं । इमेनरा: प्रथम आभोग: । हवि

अथआभोगः। पकरि वल्लभा ऐंचैं पैंचत अपनी दि
स करजोर॥ कबहुं वल्लभले भजन हरिकों जुवति
जनकी ओर॥ देखि परबस भए प्रीतम भयो मन
आनंद॥ मैंन आकुल भई व्याकुल गई लाज अमेद॥
कोउ देखति गाहनिको उह मन छाडति गेह॥ कर
ति भाया अपने मनको प्रकट करि निज नेह॥ अति

गी·गो·
७५
29

निहित निज वाडवरति मत्त गज राज इव रुचिरे ॥ वि
रह विरहानले चारु श्रकर वलन शीकरे रूप शमय
रुचिरे ॥ अरुण नरला पांगा शर निहत जल वपूर
ति नव विलोचन सरोजे ॥ मम वदन सुख मासरसि
विलसत मतन मलस गति निर्जित मनोजे ॥ नेद
गो हाल वालो दिनस्वी गंग सेक सेहस्त सुर हल ॥

र दर हास गल दमल पनि मल लच्य मधुप कल म
त्व कमल सदने ॥ असन्त चय गर्व निर्वासनयर
सिंधु पायय मनो जाग्नि धामने ॥ स्मित प्रकटित
चारु दंत रुचि वदन विधु कौमुदी हृत निखिल
तापे ॥ विल सलिलता हृय कनक कल सदृयो
मारकत मणि रिव उरापे ॥ सुभग सुमणि केठ

रा॰ का॰
८०

80

हृ जयति हृत भाव चिंते ॥ जोवली मेलिनी विशुद्ध

पहेराए केल निनद गर्जित सर्व सिंह सतते ॥ वचन

करुणा हृत दृष्टि दृसी रेगा नव जलद सपि रुरु स

हृसिते ॥ रागिनी राम कली ताल चर्चरी

जयति श्री वल्लभ सु वन उद्धरण त्रिभुवन फेरि नंद

के भवन की केलि ठानी ॥ इति श्रु[illegible] ॥ ३४

व्रज वर कुमारिका वाड़ हाट कलना सतन मा श्रयन
कृत लद ।। व्रज स्वाग शणा रसिकना शणा गोपना
ति शय सविश लाप लीले ।। नाहगी दाणा जनित
कुसम शर भाव भर शुवनिश प्रकट नर निखिले ।।
सविर कौमार चापल जय श्रीडुया वल्लवी हृदयस्
हशुमे ।। प्रकट यन्निज नाविर शारवैये समम शार मि

नकसे भक्तकौंम नेदसे याहीतें वसकीयो व्रह्म रा
सी ॥ मनहु इंद्रवजीति क्रम सौंकरी प्रीति निरा
मकी चलिनीति श्रुति विवेकी ॥ रहित श्रमि मा
नैनें वडे सन मानके शील अरु दान गोविंद टेकी·
सदा निर्मल वुद्धि ग्रह सिधि नव निद्धि द्वार सेवन
जहे भक्ति दासी ॥ राम राइ गिरिधरण जो निश्रा

गिरि वर धरण सदा सेवन चरण हार आवे वरण

भरन पोनी ॥ इकेनरा । अथश्रीमोरः । वेदपथका

स सैंहनमोन दासमे ज्ञानकौं कपिलसे कर्म जोगी॰

साधु लछमन निपुन मद्ध व्रज राज प्रकट रहावरसि

मनो इंद्र भोगी ॥ सिंधु सम गंभीर मिलन रंग

नीर प्रीतिको जल दीर व्रज उपासी ॥ ध्यांनकौं स

नउ जनावे ।। इंयतरा । अघघ्ना भोगाः ।। एथित

माया वाद वर्णि वदन धंसि विहित निज दास जन प

द पावे ।। श्रुति पथ कथन रचित नेक सद्ग्रंथ म

थित भागवत पीयूष सारे ।। रास भवती भावसत

न भावित हृदय सदय मानस जनि नमो दभारे ।।

निज चरण कमल धरणी परि क्रमण कृति मान

पावित वितत तीर्थजाले ॥ हृल्ल सेवन विहित षा
रण गान शिक्षण तापित संदेह दासै कपाले ॥ निज
वचन पीयूष वर्षिणो चित सतत साहित्य पुरुष जन
मनन शुके ॥ विविध वाचो श्रुति निगम वचनो दि
नैरपि च हरित दुष्ट जन दुरके ॥ ईदृशे मति सि
द्धि सर्वदा वल्लभे सकल कर्नीरि दयालौ ॥ कैवप

रि देवना भवनि हरि दासके सकल साधन रहित
जन कृपालो ॥

रागिनी रामकली ताल ३ जमुनाके पद ॥ जमु

नसी नाहि कोउ औरदाता ॥ इतिअस्थाई ॥ जेइन

की सरण जातेहैं तारिकें नाहिकौं नेहि छिन करि

स नाथा ॥ इत्यंतरा । अथआभोगः ॥ पहि गुणको

नरसावे नरसना एक सहस्र रसना कौन दई विधा

ता ॥ गोविंद बलि तन मन धन वारैं सबनकी जी

रा॰रा॰
८५

वन इनहीके हाथा ॥ रागिनी रामकली नाल
जमुनाके पट ॥ श्याम संग श्याम कुंवर हीरी जमुने
दृति उमस्याई ॥ हरत श्रम विहरैं सिधु सीवहि चली
मानो आनंद आली रहीन भवने ॥ इंगतरा॥ अथ
आभोगः ॥ कोटि काम हिवारौं रूपनैं ननि हारौं
लाल गिरि धरन संग करत रमने ॥ हरषि गोविंद

रागिनी रामकली नाल ੧ जमुनाके पद ॥ जगु
नसौ नाहिकोउ और दाता ॥ इतिगुसाई ॥ जेइन
की सरण जानेहू दोरिकें नाहिकौनेहि छिन करि
स नाथ्या ॥ इसंतरा । ग्रथ्यग्राभोगः ॥ एहिरणाको
नरमावो नरसना एक सहस्र रसना कौन दई विधा
ता ॥ गोविंद बलि तन मन धन वारनें सबनकीजी

ग०न
८६

86

कहैं गोविंद जमुनाकी जापर कृपा सोई वल्लभ कु
ल शरण आयो ॥ रागिनी रामकली नाल ३ ॥
जमुनाके पद ॥ चरण पंकज रेणु जमुना देनी
इति अस्थाई ॥ कलिजुग जीव उद्धारन कारण
काटन पाप अब धार पैनी ॥ इअंतरा । अथ आभो
गः ॥ प्राण पति प्राण यह आय भक्तन नेह सकल

प्रभु देखि इनकी ओर मानो नवदुलहनी आईगा
वने ॥ रागिनी रामकली ताल ३ जमुनाके पट
जमुन जस जगतमै जोई गायो ॥ इतिस्रुख्याई ॥
ताकी आसकछै रहत है प्राण पति नैनमै वैनमे
रसजो छायो ॥ इत्यंतरा । अथआभोगः ॥ वेद
पुराणकी बात यह अगम है प्रेमकोऊ न पायो०

८९
१.१.

रा॰गा॰
८७
87

मन मोहन प्रियके संग भक्तन कीकैज्ञ भीरे ॥ छी
त स्वामी गिरि धरन श्रीविठ्ठलना विनानै कृ नहीं
धरत धीरे ॥ रागिनी रामकली ताल जमु
नाकेपद ॥ जोई गावे जमुना यह नाम आवे ॥ इ
निश्रस्याई ॥ ताऊपर कृपा करत श्रीवल्लभ प्रभु
सोई जमुना जीकौ भेद पावे ॥ इसंपतरा ॥ अथस्रा

यह सबकी होउ सेनी ॥ गोविंद प्रभु विना रहत न
रहि एक छिन अनतहि आतुर चंचल जो नेनी ॥ रागि
नी रामकली ताल ऊ जमुनाके पद ॥ धाइकें जा
इजे जमुना तीरे ॥ इति अस्थाई ॥ तिनहूंकी महि
मा कहांलों वरनीये जाई परसत प्रेम अंग तीरे ॥
इहेंनवा । अथ आभोगः ॥ निस दिन केलि करत